धार राज्य का इतिहास।

[संशोधित संस्करण]

लेखकः —

नन्दकिशोर द्विवेदी।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

श्री.

धार राज्य का इतिहास।

[संशोधित-संस्करण]

जिसको

श्री दरबार धार की आज्ञा से

नन्दकिशोर द्विवेदी

भूतपूर्व हेडमास्टर

हिन्दी मिडिल स्कूल, धार

ने बनाया।

सितम्बर १९३१ ई०

तृतीय बार १०००] [मूल्य दस आने।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रकाशक-
नन्दकिशोर द्विवेदी

मुद्रक-
श्री मध्यभारत-हिन्दी-साहित्य समिति
प्रिंटिंग प्रेस, इन्दौर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धार राज्य का इतिहास।

[संशोधित-संस्करण]

जिसको

श्री दरबार धार की आज्ञा से

नन्दकिशोर द्विवेदी

भूतपूर्व हेडमास्टर

हिन्दी मिडिल स्कूल, धार

ने बनाया।

सितम्बर १९३१ ई०

तृतीय बार १०००] [मूल्य दस आने।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रकाशक-
नन्दकिशोर द्विवेदी

मुद्रक-
श्री मध्यभारत-हिन्दी-साहित्य समिति
प्रिंटिंग प्रेस, इन्दौर।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

स्व० श्रीमंत महाराजा लेफ्टनेंट कर्नल सर उदाजीराव
पवाँर साहब बहादुर के. सी. एस. आई.,
के. सी. व्ही. ओ., के. बी. ई.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समर्पण-पत्र

प्रजाहित-चिंतक, राज्यकार्यपटु, पवाँरकुलशिरोमणि
श्रीमंत् महाराजा लेफ्टनेंट कर्नल सर **उदाजीराव**
पवांर साहब बहादुर के० सी० एस्० आई०
के० सी०, व्ही० ओ०, के० बी० ई०
धाराधीश की सेवा में:—

राजन् !

यह अनुचर राज्यभक्ति एवं परम पवित्र प्राचीन
परमार (पवाँर) वंश पर स्वाभाविक ही भक्तिमय
प्रेम होने के कारण श्रीजी हुजुर के कर
कमलों में यह 'धारराज्य का इतिहास'
सादर समर्पण करता है। आशा
है कि सेवक की यह भेंट
सानन्द स्वीकार करने
की कृपा करेंगे

धार— } विनयावनत:—
ता. १८-१०-१७ ई. } **नन्दकिशोर द्विवेदी**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुखशांतिमय सरकार का शासन–समय है अब यहाँ,
सुविधा समुन्नति के लिये है प्राप्त हमको सब यहाँ।
अब भी न यदि कुछ कर सकें हम तो हमारी भूल है,
अनुकूल अवसर की उपेक्षा हूलती फिर शूल है॥

* * * *

निज पूर्वजों का वह अलौकिक सत्य शील निहारलो,
फिर ध्यान से अपनी दशा भी एक बार विचारलो।
पद चिन्ह उनके यत्न–पूर्वक खोज लेना चाहिये,
निजपूर्व गौरव दीप को बुझने न देना चाहिये॥

* * * *

सब की नसों में पूर्वजों का पुण्य-रक्त–प्रवाह हो,
गुण, शील, साहस, बल तथा सब में भरा उत्साह हो।
सब के हृदय में सर्वदा समवेदना का दाह हो,
हमको तुम्हारी चाह हो तुमको हमारी चाह हो।

* * * *

है बदलता रहता समय उसकी सभी घातें नई,
कल काम में आती नहीं हैं आज की बातें कई।
है सिद्धिमूल यही कि जब जैसा प्रकृति का रंग हो,
तब ठीक वैसाही हमारी कार्य्य--कृति का ढंग हो॥

—भारत-भारती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका

पाठकगण ! लीजिये "धारराज्य का इतिहास" आपके सम्मुख है। जिस राज्य में हम रहते हैं; जहां की हम राजभक्त प्रजा हैं, वहाँ के इतिहास से बिलकुल अनभिज्ञ रहना हमारे लिये कितने दुःख की बात थी ? किन्तु ईश्वर की दया और हमारे न्यायप्रिय महाराजा साहब की कृपासे यह कार्य्य मुझ जैसे तुच्छ व्यक्तिसे पूर्ण हुआ है। अब आपका कर्तव्य है कि हंस-नीर-क्षीर-विवेक की नाई इस पुस्तक को अपनाने की कृपा करें। गुण मात्र काही ग्रहण करें। दोष-दोष मेरे हवाले कर देवें।

सभ्य संसार में इतिहास का बडाही मान है। जिस जाति तथा जिस देश का इतिहास नहीं है वह जाति वा वह देश जीवित अवस्था में है, यह कदापि नहीं कहा जा सकता। इतिहास के बिना यह बात मालूम हो ही नहीं सकती कि, प्राचीन काल में मनुष्य कैसे थे, उन्होंने कैसे २ कार्य्य किये थे,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किस प्रकार कष्ट उठाकर उन्होंने अपनी उन्नति की थी और फिर किन किन बातोंपर ध्यान न देने से उनका अधःपतन हुआ; इन सब बातों की शिक्षा देनेवाला एक इतिहास ही गुरु है। इतिहास को पढ़कर मनुष्य अपने आपको जिस प्रकार बनाना चाहे, बना सकता है। इतिहास जीवन चरित्रों का भंडार होता है। अतः इतिहास का पढना बहुत ही आवश्यक है।

किन्तु, उन्नति क्रमशः होती है। बच्चा पहले घुटनों के बलही चलना आरंभ करता है। इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्वका इतिहास जानने के पूर्व यह आवश्यक है कि, मनुष्य पहले वहां का इतिहास जाने जहां कि वह रहता हो। हम धार राज्य में रहते हैं। अतः धार राज्य का इतिहास जानना हमारे लिये परमावश्यक है।

यह बात कही जा सकती है कि यदि कोई लिखने बैठे और उसे सब प्रकार के साधन अनुकूल हों तो, इस प्राचीन परमार (पवाँर) वंश पर अनेक ग्रंथ तैयार हो सकते हैं–अनेक ग्रंथ लिखे जा सकते हैं किन्तु जब तक ऐसे कोई ग्रंथ तैयार न होवें, उसके पूर्व मैंने ही संकल्प किया कि, मैं ही इस पुनीत परमार वंश का इतिहास लिख कर, इस खामी को पूर्ण कर दूँ। अस्तु, राज्य तथा लोक सेवा के फल स्वरूप यह पुस्तक, आप महानुभावों के सम्मुख, उपस्थित करता हूँ। इच्छा तो मेरी भी, इस पुस्तक को विस्तार पूर्वक एक बड़े ग्रंथ के रूप में लिखने की थी किन्तु अनेक बातोंपर विचारकर मैंने इसका यही आकार रखना उचित समझा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस इतिहास के लिखने में मैंने अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार कुल बातें ढूंढ ढूंढकर लिखी हैं। परमार वंश की उत्पत्ति से लेकर अभी तक का वर्णन इसमें यथासाध्य, अच्छी तरह किया है। लिखते समय मैंने इस बात का खूब ही ध्यान रक्खा है कि, धार की सम्पूर्ण राजभक्त प्रजा को यह पुस्तक उपयोगी होवे।

इस पुस्तक के अन्त में मैंने राज्य के ठाकुर साहबान तथा जहागीरदार साहबान का परिचय भी दे दिया है। इच्छा तो यह थी कि उनका वर्णन भी विस्तृत रूप से लिखता। किन्तु इस इतिहास के बहुत बड़े हो जाने की आशंका थी। ऐसा होने में विद्यार्थियों को पढ़ने में यह पुस्तक भार रूप मालूम होती। अस्तु, यदि इस कार्य में मैं अपने को फलीभूत समझूंगा तो भविष्य में उनका इतिहास भी स्वतंत्र रूप से लिखने का प्रयत्न करूंगा।

इस समय, मैंने अपना लगातार चार वर्ष का परिश्रम आप महानुभावों के सम्मुख रख दिया है। सम्भव है, इसमें कई प्रकार की त्रुटियां रह गई हों। परिवर्तनशील समय के कारण कुछ बातें इस अवधि में ऐसी भी हो गई हों जिनका समावेश इस इतिहास में होना आवश्यक था; किन्तु उन कुल बातों के लिये मेरी यही प्रार्थना है कि समय जिस खूबी और जिस प्रकार दबे पांव निकल जाता है उसका पीछा करने में इतिहास लेखकों को उतनी ही असुविधा और आपत्तियों का सामना करना पड़ता है। इस मर्म को इतिहास प्रेमी ही भली भांति जान सकते हैं। तथापि सर्व बान्धवों के प्रति मेरी तो यही विनय है कि, यदि कहीं दोष दृष्टिगोचर होवे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तो कृपापूर्वक उसकी सूचना देने का कष्ट उठावें। प्रमाण युक्त होने पर तदनुसार सुधार करने की चेष्टा अवश्य की जायगी। लेखक उनका चिरऋणी रहेगा।

इस इतिहास की सामग्री एकत्रित करने में मुझे अनेक पत्र व पत्रिकाओं तथा अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी, आदि भाषाओं के प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों से सहायता मिली है। इसके सिवाय मेरे मित्रों व गुरुजनों से भी मुझे बहुत कुछ सहायता मिली है। इस उपकार के लिये मैं उन सबका कृतज्ञ हूँ। धार-राज्य के तत्कालीन दीवान श्रीमान् पी. एन. बॅनरजी महोदयको अनेक धन्यवाद है कि जिन्होंने इस इतिहास को छपकर प्रकाशित होने के पूर्व, अपने बहुमूल्य समय का अधिकतर भाग व्यतीत करके, आद्योपान्त श्रवण करने का कष्ट उठाया था।

आशा है कि, यह इतिहास जितना ही महत्व का है उतना ही पढने में रुचिकर भी होगा। मैंने इसमें, जहां तक हो सका है, सरल से भी सरल शब्दों का उपयोग किया है। अपने असली अर्थ को प्रकट करने के लिये कहीं कहीं एक-एक बात को भिन्न भिन्न रूप देकर दो-दो तथा तीन-तीन बार भी लिखा है। इसका केवल यही हेतु है कि, कम पढे हुए लोग भी इसको समझ कर लाभ उठा सकें और इसमें लिखी हुई बातों को जान लेवें। दूसरी बात यह भी है कि, विद्यार्थियों को पढने में कष्ट न होवे। बिना किसी खास परिश्रम के, किस्से के तौर पर ही कुल बातें याद कर लेवें। शिक्षकों से प्रार्थना है कि, इस पुस्तक को वे विद्यार्थियों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से रटावें नहीं । किस्से के तौर पर पहले समझा देवें; फिर दूसरे दिन उसी प्रकार सुन लेवें ।

आशा है कि शिक्षा विभाग के अधिकारीगण इस पुस्तक को पाठ्य पुस्तकों में स्थान देने की कृपा करेंगे ।

सज्जनगण ! अन्त में मेरी यही प्रार्थना है कि, राज्य की तथा आपकी जो कुछ सेवा मुझसे बन सकी है, इस पुस्तक द्वारा करदी है । यदि इसमें कुछ भी गुण नजर आवे तो लेखक के परिश्रम की ओर ध्यान देकर अपनाने का अनुग्रह कीजियेगा । इति शुभम्.

धार—
ता. १० नवम्बर १९१६

विनीतः—
नन्दकिशोर द्विवेदी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संशोधित संस्करण ।

परमात्मा की असीम कृपासे इस पुस्तक का संशोधित संस्करण आप महानुभावों के सन्मुख रख रहा हूं। आनन्द कॉलेज धार के प्रिन्सिपाल तथा एज्यूकेशनल बोर्ड धार स्टेट के प्रेसिडेन्ट श्रीमान् रामाज्ञा द्विवेदी "समीर" महोदय एम. ए. (आनर्स), एम. आर. ए. एस. की आज्ञानुसार प्रथम संस्करण की कुछ बातों में फेर बदल करके विद्यार्थियों के सुभीते के लिये इसे और भी सुगम बना दिया है। जहां-तहां कुछ संशोधन भी कर दिया है। आशा है, पाठकों को यह रुचिकर होगा।

इस इतिहास के प्रथम तथा द्वितीय संस्करण को देख कर मुख्य मुख्य समाचार पत्रों व इतिहासवेत्ताओं ने अपनी बहुमूल्य सम्मतिथां भेजने की कृपा की हैं। उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्थानाभाव के कारण उन्हें मैं यहां प्रकाशित नहीं कर सका हूँ। आगे के संस्करण में प्रकाशित करने की चेष्टा करूँगा।

इन्दौरः—
ता. ३ जून १९३१ ई०

विनीतः—
नन्दकिशोर द्विवेदी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय-सूची ।

पूर्वार्द्ध ।

विषय	पृष्ठांक
(१) परमार वंश की उत्पत्ति	१
(२) शिला लेख	,,
(३) परमार	६
(४) परमार वंश का पूर्व वर्णन	८
(५) चन्द्रावती के परमार राजा (आबू के परमार)	१०
(६) धार के प्राचीन परमार राजाओं का वर्णन	११
१–उपेन्द्र (कृष्ण राजा)	१२
२–वैरसिंह प्रथम	,,
३–सीयक प्रथम	,,
४–वाक्पति प्रथम	,,
५–वैरसिंह द्वितीय (वज्रत)	१३
६–सीयक द्वितीय (हर्ष)	१४
७–वाक्पति द्वितीय (मुंजराज) ...	१५
८–सिन्धुराज (सिन्धुल)	२०
९–श्रीभोजदेव प्रथम	२२
१०–जयसिंह प्रथम	३४
११–उदयादित्य	३५

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय				पृष्ठांक
१२–लक्ष्मणदेव	...	....	....	३७
१३–नरवर्मदेव	....	...	....	,,
१४–यशोवर्म देव	....	....	....	३९
सन् ११४२ से ११५५ ई० तक का समय.				४२
१५–जयवर्मन्	....	....	....	४३
दुअमली राज्य	....	....	....	,,
१६–लक्ष्मीवर्मन्, १७–हरिश्चन्द्र और १८–उदयवर्मन्		....	....	४४

दूसरी शाखा के राजा.

१५–अजयवर्मन्	....	....	....	४५
१६–विंध्यवर्मन् देव	....	....	....	४६
१७–सुभटवर्मन् देव	....	...	....	४७
१८–अर्जुनवर्म देव	...	...	....	,,

दुअमली राज्य का अन्त.

१९–देवपालदेव	....	....	....	४८
२०–जयतुंगदेव (जयसिंह द्वितीय)			...	४९
२१–जयवर्मन् द्वितीय		....	...	५०
२२–जयसिंहदेव तृतीय		...	....	,,
२३–भोजदेव द्वितीय....		...	....	५१
२४–जयसिंहदेव चतुर्थ		....	....	५२
(७) उपसंहार	....	....	....	,,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय	पृष्ठांक
(८) परमार राजाओं के पड़ोसी	५४
(९) वर्तमान पवांर महाराजाओं की वंशावली	५८
उत्तरार्द्ध ।	
(१०) धार राज्य का वर्णन	६०
(११) सीमा	,,
(१२) स्वाभाविक विभाग	६१
(१३) धार राज्य की स्थिति	,,
(१४) नदियां	६२
(१५) पहाड़	६३
(१६) तालाब	,,
(१७) आबहवा	६५
(१८) निवासी	६६
(१९) ऐतिहासिक स्थान	,,
(२०) प्राचीन और अर्वाचीन परमारों के बीच की राज्य स्थिति	८२
(२१) धार के वर्तमान पवांर वंश का इतिहास	८९
(२२) ऑनरेबल ईष्ट इण्डिया कम्पनी और श्रीमंत महाराजा रामचन्द्रराव पवांर साहब का संधिपत्र	९४
(२३) धार के वर्तमान पवांर राजा ...	९७
१—उदाजीराव प्रथम	,,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय			पृष्ठांक
२–आनंदराव प्रथम	....	....	९९
३–यशवंतराव प्रथम	....	....	१०१
४–खन्डेराव पवांर....	....	....	१०२
५–आनन्दराव द्वितीय	....	...	१०४
६–रामचन्द्रराव प्रथम	....	....	११६
७–रामचन्द्रराव द्वितीय	....	....	,,
८–यशवंतराव द्वितीय	....	...	१२१
९–आनन्दराव तृतीय	....	....	१२२
१०–उदाजीराव द्वितीय	....	....	१२६
११–आनन्दराव चतुर्थ	....	....	१३३
(२४) जहागीरदार साहबान	....	....	१३६
(२५) ग्यारंटेड जहागीरदार	....	....	,,
(२६) नान् ग्यारंटेड जहागीरदार	....	...	१३७
(२७) उन्नतिशील धार राज्य	....	....	१३७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त महाराजा श्रीआनन्दराव पवांर साहब बहादुर
धार के वर्तमान नरेश।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

धारराज्य का इतिहास ।

पूर्वार्द्ध ।

परमार वंश की उत्पत्ति ।

आबू का नाम प्राचीन शिला लेखों तथा ग्रन्थों में अर्बुद लिखा मिलता है । इसके विषय में ऐसी कथा है कि नंदिवर्द्धन नामक हिमालय पर्वत का एक शिखर था । प्रसंगवश, वशिष्ठ मुनि की गौ एक समय चरते चरते उतंक मुनि के खोदे हुए एक गड्ढे में गिरगई, तब वशिष्ठ मुनि ने क्रोधातुर हो अर्बुद नामक सर्प के द्वारा उक्त नन्दिवर्द्धन को लाकर उस गड्ढे को पूर्ण कर दिया । तब से ही इस पर्वत का नाम अर्बुद प्रसिद्ध हुआ है । इस पर्वत से ही परमार वंश की उत्पत्ति लिखी मिलती है; और यह भी लिखा है कि इस पर्वत के शासक परमार राजा थे, और उनकी राजधानी चन्द्रावती नगरी थी ।

शिला-लेख ।

(१) परमार वंश की उत्पत्ति आबू पर्वत पर-वशिष्ठ मुनि द्वारा एक अग्निकुण्ड से मानी जाती है और यह बात परमारों के बहुत से शिला लेखों में भी मिलती है । पाटनारायण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के नम्बर दो के विक्रम संवत् १३४४ के शिला-लेख में लिखा है कि वशिष्ठ मुनि ने मंत्रों के बल से आबू पर्वत पर, अग्नि से एक सुभट को उत्पन्न किया; और जब वह शत्रुओं को जीत कर मुनि की गौ ले आया तब मुनि ने प्रसन्न होकर अपने नाम से उसका गोत्र वशिष्ठ प्रचलित किया। और पर अर्थात् शत्रु को मारने से उसको परमार कहने लगे और उसका नाम धौमराज रक्खा; क्योंकि वह अग्निकुण्ड से उत्पन्न किया गया था। अग्नि से धूम्र का निकलना स्वाभाविक ही है इस कारण उसका नाम धूम्रराज या धौमराज रक्खा गया।

(२) विक्रम संवत् १२१८ के किंडू के सोमेश्वर वाले शिला-लेख में भी यही कथा लिखी मिलती है। उसमें लिखा है कि अर्बुद पर्वत पर गौ के निमित्त अग्निकुण्ड से उत्पन्न किया हुआ वीर परमार कहलाया और उसी से परमार वंश की उत्पत्ति हुई।

(३) विक्रम संवत् १२९३ की वस्तुपाल तेजपाल आबू की प्रशस्ति में लिखा है कि वशिष्ठ मुनि के होमकुंड की अग्नि से एक पुरुष उत्पन्न हुआ। वह पर अर्थात शत्रुओं को मारने का बड़ा रसिक था। इसलिए उसको परमार कहने लगे और उसके वंश के लोग परमार कहलाये। इस राजवंश में प्रथम धूमराज राजा हुआ।

(४) वि. सं. १२८७ के भीमदेव द्वितीय के आबू के शिला-लेख में लिखा है कि "वशिष्ठ मुनि के यज्ञकुण्ड की अग्नि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से उत्पन्न श्री धूमराजदेव के वंशज श्री सोमसिंहदेव के राज्य में " इत्यादि ।

(५) आबू के विक्रम संवत १३७८ के विमलशाह के मंदिर के शिला-लेख में लिखा हुआ है कि "वशिष्ट मुनि के अग्निकुण्ड से परमार नामक पुरुष उत्पन्न हुआ"

(६) जालोर में परमार वीसल का वि. सं. ११७४ का जो शिला-लेख मिला है उसमें लिखा है कि विश्वामित्र को जीतने के लिए वशिष्ट मुनि ने कोप करके पर (शत्रु) को मारने के लिये अनलकुण्ड से १ वीर उत्पन्न किया । इस कारण उसका नाम परमार हुआ ।

(७) इसी प्रकार उदयादित्य के शिला-लेख में भी परमार उत्पत्ति लिखी हुई है ।

(८) नरवर्मदेव के वि. सं. ११६१ के शिला-लेख में यह कथा लिखी है कि वशिष्ट मुनि ने विश्वामित्र का आतिथ्य किया । उसमें वशिष्ठ मुनि की नन्दिनी नामक गौ के प्रभाव से सब को मनवांछित वस्तु मिली । इस अद्भुत रत्न को देख विश्वामित्र का मन ललचाया और उसे हरण करना चाहा तब लाचार हो वशिष्ठ मुनि ने अनल कुंड से एक वीर पुरुष उत्पन्न किया और उसका नाम परमार हुआ । उस वीर पुरुष का वंश सूर्य चन्द्र के समान बढ़ने लगा ।

उपरोक्त इन आठ शिला-लेखों में यह बात स्पष्ट मालूम होती है कि परमार वंश की उत्पति वशिष्ठ मुनि द्वारा एक अग्निकुंड से हुई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है और अग्निकुंड से जो वीर उत्पन्न हुआ था उसका नाम अग्नि के सम्बन्ध से धूमराज रक्खा गया था। और पर (शत्रु) को मारने के सम्बन्ध से वही पुरुष परमार कहलाया। धूमराज नाम रखने में यह उक्ति दीख पड़ती है कि जैसे धूम (धुआँ) अग्नि से ऊपर बाहर की ओर उठता है वैसे ही यह पुरुष अग्नि से ऊपर बाहर की ओर आया। इस कारण उसका नाम धूमराज रक्खा गया।

परमारों के शिला-लेखों में "परमार" और "प्रमर" दोनों शब्द लिखे मिलते हैं जिनमें से परमार शब्द प्रायः अधिक प्रचलित है, किन्तु कहीं २ प्रमार शब्द भी लिखा मिलता है। दक्षिण देश में "पवांर" के नाम से प्रसिद्ध है।

धूमराज मरुमंडल में महाराज हुए। मरुमंडल को आज कल राजपूताना का रेगिस्तान कहते हैं।

परमारों की नाईं चौहान सोलंकी और परिहार क्षत्रियों के विषय में भी ऐसा लिखा मिलता है कि ये लोग भी आबू पर्वत पर एक अग्निकुंड से निकले थे। अचलगढ़ का किला और चन्द्रावती नगरी परमारों की ही बसाई हुई है। *

अग्निकुल को अग्नि से उत्पन्न हुआ बतलाना ठीक बात है किन्तु हिन्दू कुलाचार्य (उपाध्याय) लोगों के मत से उक्त वंश

* आजकल के शोधकों ने ऐसा भी जाहिर किया है कि ये चारों वंश (परमार चौहान, सोलंकी और परिहार) गुर्जर लोगों के साथ हिन्दुस्तान में तकरीबन छठी सदी में पश्चिमोत्तर की ओर से आये और राजपूताना और पश्चिम के देशों में आकर बस गये। आठवीं सदी में इन्होंने कन्नौज को अपने अधिकार में कर लिया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चार शाखाओं में विभक्त है। प्रथम–परमार, द्वितीय–परिहार, तृतीय–चालुक्य (सोलंकी) और चतुर्थ–चौहान। जिस स्थान पर वह पवित्र अग्निकुण्ड प्रकट किया गया था; आज भी वह स्थान दृष्टि-गोचर होता है।

बहुत से लोगों का अनुमान है कि दैविकशक्ति–सम्पन्न ब्राह्मणों ने नास्तिकों के आक्रमण से बचने के लिये और सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये अग्निकुंड से उन चार वीरों को उत्पन्न किया था। उन चारों को उन्होंने अपने धर्म में दीक्षित कर लिया था और उनकी ही सहायता से उन्होंने उस धर्म युद्ध में विजय प्राप्त की थी। ब्राह्मणोंके अद्भुत तपोबलके द्वारा अग्नि के मध्य से जो वीर उत्पन्न हुआ था वह अनेक दिन तक अपने प्रचण्ड प्रताप और धर्मानुराग को अटल रख सका था; किन्तु पिछले समय में अग्नि कुल के अधिकांश लोग ब्राह्मण धर्म को छोड़कर जैन तथा बौद्ध धर्मावलम्बी भी हो गये थे।

राजपूताने से धीरे २ ये लोग भारत के अन्य भागों की ओर बढ़ने लगे। मालवे में परमारों ने आकर उज्जैन में अपनी राजधानी कायम की। जब गुर्जर लोगों की शक्ति कम होना शुरू हुई तब ये लोग स्वतंत्र होकर मालवे में राज्य करने लगे। सन् ८०० ई० में उपेन्द्र (कृष्णराजा) ने अपने अन्य कुटुम्बी परमार राजाओं से बिलकुल सम्बन्ध तोड़ दिया और स्वतन्त्रतापूर्वक मालवे में राज्य करने लगे। इसी से उनके पूर्व पुरुषों का हाल मालूम नहीं होता है। किन्तु इनके बाद उज्जैन और धार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की गद्दी पर जितने परमार राजाओं ने शासन किया है उन सबका ठीक २ वर्णन मिलता है ।

परमार ।

अग्निकुल से उत्पन्न लोगों में परमार (पवांर) ही सब से अधिक प्रतिष्ठा के पात्र हैं । सोलंकी और चौहान लोगों के समान ये लोग विशेष सम्पत्तिवान और पराक्रमी नहीं हुए तथापि इन तीनों कुलों का इतिहास देखने से यह बात स्पष्ट ज्ञात होती है कि सोलंकी और चौहान लोगों के पहले ही पवांर लोगों ने राज्योपाधि प्राप्त की थी । यहां तक कि अग्निकुल की शाखा से उत्पन्न परिहार लोग पवाँर राजाओं की अधीनता में सामन्त राजाओं की तरह बहुत दिन तक राज्य करते रहे थे ।

कहते हैं कि वीर कीर्तिवीर्य्यार्जुन की प्राचीन माहीष्मती नगरी में पवांर (प्रमार) राजा सब से पहले राज्य करने लगे थे । इस प्रसिद्ध माहिष्मती नगरी में कुछ काल तक राज्य करके इन्होंने विंध्याचल पर्वत के शिखर पर धारा (धार) और मंडपदुर्ग (मांडू) इन दो नगरों की स्थापना की थी । बहुतों का कहना है कि प्रसिद्ध उज्जैनी नगरी को भी इन्हीं ने बसाया था ।

पवाँर (प्रमार) कुल का राज्य नर्मदा नदी के उस पार दक्षिण में बहुत दूर तक फैल गया था । भट्ट ग्रंथों में पाया जाता है कि सन् ७१४ ई० के समय में परमार कुल में राम नामक एक प्रतिष्ठित राजा उत्पन्न हुए थे । उन्होंने तैलंग देश में एक स्वतन्त्र राज्य कायम किया था । कविवर चंद्र भट्ट ने लिखा है कि राम पवांर भारतवर्ष के चक्रवर्त्ती राजा थे; उनके आधीनी में बहुत से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजपूत राजा सामंतकी भांति रहते थे। प्रसिद्ध वरदाई ग्रंथ में ऐसा लिखा है कि तैलंग के चक्रवर्ती महाराज पवांर ने सिंहासनारूढ़ होकर तौरों को पाटन, चौहानों को आमेर, कामध्वजों को कन्नौज, परिहारों को मरुदेश, यदुवंशियों को सूरत, जाबालों को दक्षिण, पारणों को कच्छ, कीहरों को काठियावाड़ और रायपुहारों को सिन्धुदेश आदि देकर अपने सामंत किये थे।

राम पवांर के स्वर्गवासी होते ही एक एक सामंत ने अपना अलग अलग राज्य स्थापित कर लिया। गुहिलोत कुल के उदय होने के समय पवांर लोगों का पूर्व गौरव लुप्त प्रायः होगया। परन्तु पवांर कुल में उसके थोड़े दिन बाद ही भोजदेव नामक एक महाबली और पराक्रमी राजा उत्पन्न हुए। इन महाराजा के उज्ज्वल यश और कीर्ति के प्रताप से यह कुल अब तक प्रकाशमान हो रहा है। हिन्दू सूर्य चक्रवर्ती महाराजा विक्रमादित्य के समान इस महाराजा की सभा में भी नवरत्न थे। महाराज भोज के समय में संस्कृत विद्या की बहुत ही उन्नति हुई थी। इसी से भारतवासी हिन्दू मात्र महाराजा भोज का नाम अभी तक आदर की दृष्टि से लेते हैं। इस पृथ्वी पर जब तक देवभाषा संस्कृत का प्रचार रहेगा तब तक कोई भी मनुष्य भोज राजा के पवित्र नाम को नहीं भूलेगा। और देवभाषा संस्कृत के साथ साथ महाराजा भोज का नाम भी प्रकाशमान होता रहेगा। धन्य है महाराजा भोज को। विद्या के प्रचार से उनका नाम अमर हो गया है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिस चन्द्रवंश की महान् कीर्ति का वर्णन भारतवर्ष के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है; और जिस ऐश्वर्यवान् महाराज को ग्रीक ऐतिहासिक सिकंदर दी ग्रेट का प्रचण्ड प्रतिद्वन्दि कहते हैं उसी महाराज चन्द्रगुप्त का जन्म पवांर कुल की मौर्य नामक एक शाखा से हुआ था। पवांर कुल के विषय में जो प्राचीन शिलालेख निकले हैं उनके देखने से मालूम होता है कि मौर्य शाखाका प्रधान पुरुष तक्षक कुल में उत्पन्न हुआ था।

परमार वंश का पूर्व वर्णन।

परमार वंश का पूर्व वर्णन दैविक तथा विलक्षण है। परमार वंश में प्रथम पुरुष धूमराज हुए हैं। उनके पश्चात् भर्तृहरि नामक उज्जैन की गद्दी पर एक महान् प्रतापी राजा हो गये हैं। इन्होंने राजसुख छोड़कर सन्यासी वेष में बन में रहना स्वीकार किया था। तत्पश्चात् उनके भाई विक्रमादित्य राजा हुए, उन्होंने राजधानी उज्जैन में ही स्थिर रक्खी। इसी परमार वंश में राजा मुंज हुए; ये बड़े वीर, बुद्धिमान् और पराक्रमी थे। इन को विद्या से बड़ा प्रेम था। इनके बाद राजा भोज हुए। ये संस्कृतके अद्वितीय पंडित थे। इनके समय में संस्कृत विद्या की बहुत उन्नति हुई थी। इन्होंने अपनी राजधानी धारा नगरी में स्थापित की थी। इनकी सभा में भी कालिदास आदि नवरत्न थे। विद्वानों का ये बहुत ही सत्कार करते थे। इन्होंने प्रजा को बहुत ही सुख दिया था। इसी वंश में जगदेव पवांर नामक एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बड़े प्रतापी और पुण्यशील राजा हो गये हैं; कहते हैं कि देवी को इन्होंने अपना मस्तक भेंट किया था।

इसी पवित्र परमार वंश में जयसिंहदेव नामक एक राजा हो गये हैं। मांडू का अति दृढ़ और विशाल किला उन्हींने बनवाया था। कहते हैं कि उनके पास पारस पत्थर था, उसी के प्रताप से उन्होंने मंडप दुर्ग (मांडू) को बनवाया था। धारा नगरी के पवांर राजाओं का मांडू विश्रान्ति स्थान था। आखिर के समय में गौंड लोगों ने विंध्याचल पर अधिकार करके आस-पास के प्रदेश को विजय करना आरम्भ किया था; इससे पवांर राज्य को बहुत क्षति पहुँची थी। पश्चात् चौहानों का बल प्रबल हुआ इससे भी परमार वंश की ख्याति किसी प्रकार कम होगई। तत्पश्चात् महम्मदगौरी ने मालवे पर अपना अधिकार कर लिया और वहां के लोगों को त्रास देना शुरू किया। यह देख मालवे के पवांर राजा दक्षिण को चले गये और वहां जाकर रहने लगे। इससे उनके रहन-सहन बोल-चाल आदि में भी परिवर्तन हो गया।

प्राचीनता की दृष्टि से, मालवे में उज्जैन के बाद धार को प्रसिद्ध स्थान समझना चाहिये। उसको आज कल भी लोग धारा नगरी कहते हैं। यह शहर बहुत ही प्राचीन है। इतिहासों में इसके विषय में ऐसा लिखा मिलता है कि पवांर राजाओं की राजधानी उज्जैन से उठने पर और मांडू में स्थापित होने के पूर्व धार में ही थी।

पवांर वंश में विक्रमादित्य के पश्चात् प्रसिद्धता में राजा भोज का ही नंबर है। राजा भोज ने उज्जैन से राजधानी हटाकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धार में स्थापित की थी। मालूम होता है कि परमार राजाओं ने धार में रहकर मांडू में भी राज्य किया था। क्योंकि सन् १८९९ और १९०० ई० के दुष्काल के समय मांडू में गरीबों को जीवित रखने के लिये जो रिलीफ का काम खोला था उस समय वहां खोदते हुए संस्कृत भाषा में एक शिला लेख मिला था उस पर यह बात स्पष्टतया लिखी हुई थी कि प्राचीन काल में परमार लोग मंडप दुर्ग (मांडू) में भी राज्य करते थे।

चन्द्रावती के परमार राजा
अर्थात्
आबू के परमार।

१ **धूमराज**—इनके राज्यकाल के मुख्य मुख्य काम और समय ज्ञात नहीं हुआ है।

२ **धन्धुक**—इसी प्रकार इनका भी समय अज्ञात है।

३ **ध्रुवभट**—इनके विषय में भी नाम के सिवाय विशेष कुछ मालूम नहीं है।

४ **रामदेव**—इनके कार्यों का भी पता नहीं लगा है।

५ **यशोधवल**—ये रामदेव के पुत्र थे। इन्होंने मालवे के भिल्लाल लोगों को सन् ११५५ के करीब हराया था।

६ **धारावर्ष**—ये यशोधवल के पुत्र थे। सन् १२०९ ई० में सिंहासनारूढ़ हुए थे।

Ac. Gunratnasuri MS　Jin Gun Aradhak Trust

७ **प्रह्लादन**—ये धारावर्ष के भाई थे । इन्होंने अपने नाम से पालनपुर (प्रह्लादन) नगर बसाया था । ये सिंहासनारूढ़ नहीं हुए थे ।

८ **सोमसिंह**—ये प्रह्लादन के पुत्र थे । सन् १२३० ई. में सिंहासन पर बैठे थे । कहते हैं कि देवपाल राजा ने इनको बंदी बना लिया था ।

९ **कृष्णराजदेव**—ये सोमसिंह के पुत्र थे ।

धार के प्राचीन परमार राजाओं का वर्णन

धार बहुत पुराने समय से परमार राजाओं की राजधानी रही है; इस बात के अनेक प्रमाण और कहावते हैं । यथा:—

जहाँ पवांर तहां धार,
और धार तहां पवांर;
धार बिना पवांर नहीं,
और नहीं पवांर बिन धार ।

इसी प्रकार—**पृथ्वी पुवांरा तणी,**
अने पृथ्वी तणे पवांर,
एका आबूगढ़ बेसणों,
दूजी उज्जैणी-धार ।

इत्यादि बातों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि धार में सदैव से पवांरों का राज्य रहा है । परमार वंश के २४ राजाओं ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालवे में राज्य किया है । प्रथम ६ राजाओं का हाल जैसा चाहिये वैसा नहीं मिला; इससे कहानियों और शिला-लेखों से लिखा गया है भोज इस वंश में बहुत प्रसिद्ध हुए हैं ।

१. उपेन्द्र (कृष्णराजा)

[सन् ८०० से ८२५ ई० तक]

ये बड़े शूरवीर और कट्टर हिन्दू थे । इन्होंने अपने राज्य-काल में एक यज्ञ किया था जिसका अग्निकुण्ड सुवर्ण का बनवाया था । ताम्रपत्रों में इनका नाम कृष्णराजा लिखा हुआ है । इनकी पत्नी का नाम लक्ष्मीदेवी था और इनके सब से बड़े पुत्र का नाम अजितराज था ।

२. वैरसिंह प्रथम.

[सन् ८२५ से ८५० ई० तक]

इनके विषय में केवल इतना ही मालूम हो सका है कि इन्होंने अनेक लड़ाइयों में विजय प्राप्त की थी इस कारण इनका नाम शिवराज पड़ गया था ।

३. सीयक प्रथम.

[सन् ८५० से ८७५ ई० तक.]

इनके विषय में केवल इतना ही जानते हैं कि ये महाराज वैरसिंह प्रथम के बाद सिंहासनारूढ़ हुए थे ।

४. वाक्पति प्रथम.

[सन् ८७५ से ९१४ ई० तक.]

ये महाराज सीयक प्रथम के पुत्र थे । इनके विषय में ऐसा लिखा मिलता है कि उज्जैन नगरी इनके अधिकार में थी ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इनके पिता के जीवन काल में ये एक समय दशापुर (मंदसौर) में ठहरे हुए थे कि वहां के लोगों ने बलवा करने की तैयारी करदी, अंत में इन्होंने वहां के अगुआओं को बुलाया और अपने प्रभावशाली शब्दों से उनको समझाकर शांत कर दिया। उसी दिन से लोग इनको वाक्पति कहने लग गये। क्योंकि इनके शब्दों में बड़ी ही शक्ति थी। इनके विषय में यह भी लिखा मिलता है कि इन्होंने कामरूप (आसाम) पर चढ़ाई की थी और वहां पहुंचकर २७ दिन तक संग्राम करके विजय भी प्राप्त की थी। इनकी स्त्री का नाम कमलादेवी था। ये ३९ वर्ष राज्य करके अपनी स्त्री के साथ कुरुक्षेत्र के मैदान में तपस्या के लिये चले गये।

५. वैरसिंह द्वितीय (वज्रत).

[सन् ९१४ से ९४१ तक.]

वैरसिंह द्वितीय वज्रत स्वामिन् कहलाते थे। ये वाक्पति के पुत्र थे। इनके विषय में ऐसा लिखा हुआ मिलता है कि इन्होंने शत्रुओं को अपने शस्त्रों की तेज धारा से मारकर एक नगर बसाया था जिसका नाम धारा रक्खा था। इसी धारा को आगे चल कर धारा नगरी कहने लग गये थे और आजकल धार कहते हैं। ये यात्रा के निमित्त गया तीर्थ को गये थे वहां इन्होंने गौड़ राजा को उसकी बलवाई बौद्ध धर्मावलंबी प्रजा को परास्त करने में सहायता दी थी। इसी से प्रसन्न होकर गौड़ राजा ने अपनी कन्या ललिता की शादी इनके साथ करदी थी। ये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

२७ वर्ष राज्य करके ७१ वर्ष की अवस्था में उज्जैन में स्वर्गवासी हो गये।

६. सीयक द्वितीय (हर्ष).

[सन् ९४१ से ९७३ तक.]

ये वैरसिंह द्वितीय के पुत्र थे। उदैपुर प्रशस्ति में इनको हर्षदेव लिखा है। मेरुतुंग ने अपनी प्रबंध चिन्तामणि में इनको सिंहभट्ट लिखा है। प्राचीन परमार राजाओं में इन्हीं से हमें ठीक २ हाल मिला है। इन्होंने रुद्रपति और हून राजा को पराजित कर दिया था। हून लोग कौन थे? इस विषय में अभी तक ठीक २ पता नहीं लगा है। कोई २ लोग इन्हें राजपूतों में से बताते हैं और कोई २ मुसलमान। कुछ भी हो। किन्तु इतना अवश्य है कि ये लोग विदेशी जरूर थे। उदैपुर के लेख में लिखा है कि हर्ष ने खोट्टीग राजा से युद्ध करके उसका खजाना छीन लिया था। खोट्टीग राष्ट्रकुल के होने से मान्यखेत राजा थे। ये दक्षिण में ९७१ ई० तक राज्य करते रहे थे; किन्तु सन् ९७२ ई० के पश्चात् उनका नाम लुप्त प्रायः हो गया। इस बात को धनपाल कवि ने भी अपनी कविता में इसी प्रकार लिखा है। वे लिखते हैं कि मान्यखेत राजा ने सन् ९७२ ई० में मालवे पर चढ़ाई की थी और वहां के राजा को पराजित कर दिया था। मालवे के राजा हर्षदेव का सेनापति कनकदेव परमार इसी लड़ाई में मारा गया था।

इस राजा के विषय में पद्मगुप्त ने भी लिखा है कि यह वीर और वैरागी था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसने अपनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पिछली अवस्था मोक्ष प्राप्ति की खोज में ही व्यतीत की थी। हर्षदेव ने मान्यखेत को युद्ध में हराकर उसकी नौ लक्ष मुद्रा लूट ली थीं और ४५ हाथी, २१ रथ, ३०० घोड़े और १०० बैल जोड़ी भी छीन ली थीं।

७. वाक्पति द्वितीय (मुंजराज)

[सन् ९७३ से ९९७ तक]

महाराजा मुंज का नाम भी भोजदेव प्रथम की भांति सुप्रसिद्ध है। ये परमार वंश के बड़े राजाओं में से थे। मुंजराज महाराजा सीयक द्वितीय के सब से बड़े पुत्र थे। इनको अनेक पदवियां मिली थीं। इनको वाक्पति अर्थात् वाणी-भूषण और उत्पलराज अर्थात् कमलवत् सुन्दर की सुप्रसिद्ध पदवियां थीं। इनका नाम मुंज इस कारण से रक्खा गया था कि ये मुंज नामक एक प्रकार की घास में से मिले थे। अमोघवर्ष अर्थात् चिरशक्तिवान्, पृथ्वीवल्लभ अर्थात् पृथ्वी के पति, श्रीवल्लभ अर्थात् लक्ष्मीपति और नरेंद्र अर्थात् मनुष्यों के राजा इत्यादि इनके उपनाम थे। ये अमोघवर्ष और वाक्पति इन दो नामों से प्रख्यात थे। कवि लोग प्रायः अपनी कविता में मुंज के लिये इन्हीं नामों का उपयोग करते थे किन्तु संस्कृत ग्रंथों में इनका नाम मुंज ही लिखा है। मुंजराज स्वयं भी संस्कृत के अच्छे विद्वान थे और कविता भी खूब कर लेते थे। ये अच्छे विद्वानों और कवियों को अपने पास रखने के कारण और भी अधिक प्रसिद्ध हो गये थे। कवि लोग इन्हें कवि मित्र और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कवि बान्धव के नाम से भी सम्बोधित करते थे। इनके विषय में कवियों ने लिखा है कि जब महाराजा मुंज स्वर्गवासी हो गये तब मानों लक्ष्मी भी निराश्रित हो गई। धन्य है ऐसे वीर, विद्वान और दानी राजा को ! इसी से आज भी हम उनका नाम आदर की दृष्टि से लेते हैं।

इन्होंने करनाट, लाट, केरल, चोल चेदी के राजा युवराज को युद्ध करके पराजित किया था। कहते हैं कि त्रिपुरी पर भी इन्होंने हमला किया था। उस समय त्रिपुरी युवराज के ही अधिकार में थी। युवराज सन् ९७५ से १००० ई० तक राज्य करता रहा था। युवराज की बहन तैलप राजा की मां थी। इस कारण दोनों राजाओं ने मिल कर इस बार मुंजराज को हरा दिया। इससे परमार राजाओं की हुकुमत युवराज पर थोड़े ही काल तक रहने पाई थी। तौ भी करनाट लोगों पर विजय प्राप्त करने से यह बात मालूम होती है कि युवराज और परमार राजाओं में बहुत दिन तक वैर भाव बना रहा था।

प्रबन्ध चिन्तामणि में लिखा है कि मुंजराज ने दक्षिण के चालुक्य राजा तैलप द्वितीय पर १६ बार हमले किये थे। और एक बार तो वर्द्धा नदी की लड़ाई में सन् ९७५ ई० में उस राजा को कैद भी कर लिया था किन्तु वह बाद में छोड़ दिया गया। कहते हैं कि मुंजराज ने मद्रास से लेकर आसाम तक का मुल्क जीत लिया था। पश्चिम की ओर भी इन्होंने चढ़ाई की थी किन्तु गुजरात देशान्तरगत अनहिलवाड़े के राजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मूलराज ने इनकी इस चढ़ाई को रोक दिया था। अतः लाचार हो इन्हें पीछा अपने देश की ओर लौटना पड़ा था।

सन् ९९५ ई० के करीब, तैलप द्वितीय ने मुंज राजा से बदला लेने के लिए मालवे पर एक बड़ी सेना के साथ चढ़ाई की थी; उस समय महाराजा मुंज के मंत्री रुद्रादित्य ने उनको अपने ही राज्य में रहकर रक्षा करने की सलाह दी थी किन्तु उन्होंने मंत्री की हितशिक्षा पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और तैलप राजा से मार्ग में ही सामना करने की गरज से, दक्षिण पर चढ़ाई करदी; परिणाम यह हुआ कि मुंजराज पराजित हो गये और तैलप राजा ने उनको कैद कर लिया। पहले ही पहल कुछ समय तक तो मुंजराज के साथ अच्छा बर्ताव किया गया था किन्तु पश्चात् जब उन्होंने तैलप की बहन कुसुमावती के साथ प्रेम कर लिया और कुसुमावती भी उनको सच्चे दिल से चाहने लगी और उनको कैदमुक्त करने की कोशिश करने लगी तब सब बातें जाहिर होगयीं। खासकर इस बात के मालूम होते ही कि, कुसुमावती के साथ मुंजराज का प्रेमसूत्र बंधगया है, तैलपराज बहुत क्रोधित हुआ और उनके साथ निष्ठुरता का बर्ताव करने लगा। यहां तक कि एक दिन इतना क्रोधित हुआ कि उनको फांसी से मार डालने की आज्ञा देदी। कहते हैं कि मुंजराज की इस प्रकार फांसी द्वारा मृत्यु हुई। और यह बात सही भी कही जाती है। मुंजराज की मृत्यु के बाद कुसुमावती अपने भाई के इस दुष्ट कर्म से नाराज होकर जोगन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बन गई थी। और धर्मप्रचार करने की गरज़ से देश देशान्तरों में घूमने लगी थी।

मुंजराज ने अपने जीवनकाल में राजपूताने पर भी चढ़ाई की थी। सन् ९९७ ई० में इनकी मृत्यु हुई थी। महाराजा मुंज का पचीस वर्ष का राज्यकाल लड़ाई झगड़ों से ही भरा हुआ है किन्तु इससे यह ख्याल नहीं करना चाहिये कि इस गड़बड़ में पड़कर उन्होंने सर्व साधारण के भले के लिये कुछ भी काम नहीं किया हो। इनके राज्य में अनेक अच्छे २ काम हुए हैं। विद्या की तो खूब ही वृद्धि हुई थी। ये खुद भी बहुत अच्छे विद्वान् थे इन्होंने धार में अनेक अच्छी २ इमारतें बनवाई थीं और नगर के आस पास बड़े २ तालाब खुदवाये थे। हाल में शहर के पास जो मुंज सागर है वह इन्हीं के नाम का स्मारक है। मांडू में जहाज महल के पास का तालाब भी इन्हीं का खुदवाया हुआ था; किन्तु पश्चात् मुसलमान बादशाहों ने उसे घटा बढ़ाकर अपने काम लायक बना लिया, जो कि आजकल मांडू में बना हुआ है। कहते हैं कि इन्होंने इन तालाबों पर घाट भी बनवाये थे किन्तु अब घाटों के निशान प्रायः देखने में नहीं आते हैं। इनके सिवाय मान्धाता (ॐकारेश्वर) महेश्वर और धरमपुरी कुब्जा संगम पर भी इन्होंने घाट बनवाये थे। उज्जैन के प्राचीन किले की भी इन्होंने मरम्मत करवाई थी। धारा नगरी को सुशोभित करने के लिये इन्होंने वहां भी अनेक भवन निर्माण करवाये थे। धारा और उज्जैन दोनों शहर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुंज राजा के समय में बहुत उन्नत दशा में थे। मालूम होता है कि मुंजराज की राजधानी उज्जैन में थी और निवास स्थान धार में था। भारत के अनेक सुप्रसिद्ध विद्वान् इनकी सभा में थे। उनमें से कुछेक के नाम, उनके बनाये हुए ग्रन्थों के आधार से हम जानते हैं; वे इस प्रकार हैं—पद्मगुप्त, हलायुद्ध, धनपाल, धनंजय, धनिक आदि।

महाराजा मुंज के विषय में एक कहानी कही जाती है कि एक दिन राजा हर्ष नदी के किनारे टहल रहे थे कि उनकी दृष्टि एक बालक पर पड़ी। वह बालक ऐसी हालत में था कि उसका नाला (नाभिसूत्र) भी नहीं खिरा था और वह मुंज नामक घास की एक छोटी सी झाड़ी में पड़ा था। हर्षदेव ने यह देखकर अपने साथ के एक नौकर को हुक्म दिया कि इस बालक को उठाकर महल में ले जाओ। राजा की आज्ञानुसार वह बालक महल में पहुंचा दिया गया। और उसका नाम मुंज नामक घास में से मिलने के कारण—मुंज—रख दिया। महाराजा हर्ष इस बालक पर खूब प्रेम रखते थे। उन्होंने उसे उत्तराधिकारी बना लिया था; इस कारण हर्ष के पश्चात् वे ही सिंहासन पर बैठे।

महाराजा हर्ष के एक पुत्र और भी था; उसके विषय में ऐसी कहावत है कि वह एक दिन खेलते २ कहीं चला गया और अनेक यत्न करने पर भी नहीं मिला; किन्तु जब बहुत दिन के पश्चात् मिला तो वृक्ष की कुंज में से मिला; इस कारण उसका नाम कुंज ही रख दिया, क्योंकि वह कुंज में से मिला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। ये बातें कहां तक सत्य हैं, हम नहीं जानते। किन्तु इतना अवश्य है कि अब भी धार में दो तालाब हैं जिनमें से एक का नाम मुंजसागर और दूसरे का नाम कुंजसागर है। ये दोनों तालाब उन्हीं मुंज और कुंज बालकों की याद दिलाते हैं। अभी थोड़ा ही समय हुआ कुंजसागर का नाका फूट गया है इससे उसमें अब पानी नहीं ठहरता। उसमें अब खेती की जाती है।

भोज प्रबन्ध में भी मुंजराज का नाम आता है। ये वे ही राजा हैं जिनके विषय में लिखा है कि उन्होंने राजा भोज को मरवा डालने के लिये, दूतों के साथ जंगल में भेजा था; किन्तु पश्चात् अपनी भूल मालूम होने के कारण इन को घोर दुःख हुआ था।

(८) सिन्धुराज (सिंधुल)

[सन् ९९७ से १०१० ई० तक]

महाराजा मुंज सन् ९९७ ई० में निःसंतान स्वर्गवासी हो गये। इससे उनके भाई सिंधुराज सिंहासन पर बैठे। इनके राज्य काल में कोई ऐसी बात नहीं हुई कि जिसके कारण इनकी कीर्त्ति कौमुदी का प्रकाश मुंज की नाई चारों ओर फैलता, किन्तु यह बात भी अवश्य है कि हम उनका वृत्तान्त मुंज की अपेक्षा अधिकतर ही जानते हैं। ऐसा नहीं है कि वे अपना चरित्र एकदम शून्यवत्त ही छोड़ गये हों। पद्मगुप्त ने अपनी कविता में उनकी बहुत ही प्रशंसा की है। हर्ष देव की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कहानी पर से ज्ञात होता है कि बाल्यावस्था में कुंज इन्हीं का नाम था। कवि लोगों ने इनको नव-साहसांक और कुमार नारायण की पदवियां दी थीं। प्रबन्धकार लिखते हैं कि ये किसी कदर तेज़ मिजाज के आदमी थे और यही कारण था कि इससे इनके भाई मुंजराज इन पर सदैव अप्रसन्न रहते थे और इनके साथ कठोरता का वर्ताव करते थे। कहा जाता है कि एक समय ये देश बाहर भी कर दिये गये थे। और गुजरात में अहमदाबाद के पास जाकर ये रहे थे। किन्तु थोड़े दिनों के बाद फिर ये अपने देश को बुला लिये गये। इस समय पहले तो इनकी बहुत अच्छी इज्जत की गई किन्तु पश्चात् शीघ्र ही मुंज ने इनकी आंखें निकलवाकर इनको कैद कर लिया और एक काठ के पींजरे में बंद कर दिया। इनके कैद में रहने की हालत में ही भोजदेव इनकी धर्मपत्नी की रत्नकूक्ष से मणि के सदृश उत्पन्न हुए थे।

कुछ समय के पश्चात् मुंजराज ने अपने भाई सिंधुल को कैद मुक्त कर दिया और उनको अपने राज्य का उत्तराधिकारी बना दिया था।

महाराजा सिन्धुल ने भी हून लोग, कौसल लोग, बागर लोग, लात लोग, मूरल लोग, कोकन लोग और किसी एक उत्तरीय हिन्दुस्तान पर राज्य करने वाली जाति पर युद्ध करके विजय प्राप्त की थी।

महाराजा सिंधुल भी मुंजराज की नाईं धार में तो रहते थे किन्तु अपनी राजधानी उज्जैन में ही रक्खी थी; इसी से ये धारे-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्वर नहीं कहलाये किन्तु महाराजा भोज धार में राजधानी ले आने के कारण धारेश्वर कहलाते थे। सिन्धुराज के समय में हून लोगों के झुण्ड के झुण्ड हिन्दुस्तान में आये। सन ९९८ ई०में मुसलमान लोगों ने उत्तरीय हिन्दुस्तान पर हमला किया था और उसी साल में सुबुक्तगीन ने लाहोर के राजा जैपाल को लड़ाई में पराजित किया था।

महाराजा सिंधुल ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ, अपनी प्रजा को सुख देकर, राज्य किया था। वे शैव धर्म को मानते थे। उज्जैन के महाकाल पर उनकी पूर्ण श्रद्धा थी। जैन लोगों ने भी अपने ग्रन्थों में सिंधुराज की बहुत प्रशंसा लिखी है; इससे यह बात साबित होती है कि उनको किसी धर्म पर आक्षेप नहीं था; सब धर्म अपनी २ खुशी पर माने जाते थे।

(९) श्री भोजदेव प्रथम

[सन् १०१० से १०५५ ई० तक]

परमार वंश में भोजदेव सब से बड़े और प्रतापी राजा हुए हैं। इनका नाम भारतवर्ष के इतिहास में भी प्रख्यात राजाओं की गणना में सम्मिलित किया गया है। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जो उज्जैन के राजा विक्रमादित्य और धार के राजा भोज का नाम न जानता हो। महाराजा सिंधुल के कारागारवास की हालत में ये उत्पन्न हुए थे। इनकी माता का नाम रत्नावली था। महाराजा मुंज इनके पैदा होने से बहुत प्रसन्न हुए थे। क्योंकि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इनके कोई भी संतान नहीं थी अतः भोजराज के बड़े होने पर उनके पढ़ने का प्रबन्ध भी उन्होंने बहुत अच्छा कर दिया था।

कहते हैं कि जब भोजराज पाठशाला में अच्छी तरह विद्याभ्यास कर रहे थे तब एक दिन एक ज्योतिषी महाराजा मुंज के दरबार में आया । ज्योतिषी को अनायास अपने दरबार में आया हुआ देखकर महाराजा मुंज ने उनसे भोज के विषय में भविष्य पूछा । ज्योतिषी ने उत्तर दिया कि भोज तुम्हारी बर्बादी की सामग्री इकट्ठी कर रहा है, इससे मुंज उस ज्योतिषी पर बहुत नाराज़ हुए किन्तु पश्चात् बररुचि नामक ज्योतिषी से पूछने पर मालूम हुआ कि भोज राज्य करने के लिये पैदा हुआ है । वह एक बड़े भारी मुल्क पर गौड़ और दक्षिण देश के सहित पचपन वर्ष, सात महीने और तीन दिन तक राज्य करेगा । यथाः—

पंचा शत्पंच वर्षाणि, सप्त मासान् दिनत्रयम् ।
भोजराजेन भोक्तव्यं, सगौड़ो दक्षिण पथः ॥

मुंज यह सुनकर प्रथम तो बड़ा प्रसन्न हुआ और भोज को सदैव अपने साथ रखना शुरू कर दिया क्योंकि मुंजराज स्वयं ही बड़ा विद्वान् था वह भोजराज को शुद्ध चित्त से चाहता था । उसने भोज की शिक्षा की ओर बहुत ही अच्छा ध्यान दिया था । भोज ने भी अपनी बाल्यावस्था में अनेक शास्त्र पढ़ डाले थे । वह होनहार और बड़ा ही बुद्धिमान् बालक था; उसको सब कोई प्रेम और आदर की दृष्टि से देखते थे ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किन्तु प्रबन्धकार लिखते हैं कि कुछ समय के बाद मुंजराज भोजदेव पर नाराज हो गये और उसको मरवा डालने का हुक्म दे दिया। उस समय भोज पाठशाला में पढ़ रहे थे; दूतों को हुक्म मिलते ही वे पाठशाला में पहुँचे और भोज को पकड़ कर जंगल में ले गये। किन्तु जब घातक मारने लगे तब भोज की मनमोहिनी मूर्ति को देख कर उनका हृदय कांप उठा और उनके हाथ से शस्त्र गिर पड़े। तदनन्तर, वे भोज को एक घोर वन में छोड़ कर चले गये; किन्तु जब घातक जंगल से लौटने लगे तब भोज ने एक वृक्ष के पत्ते पर निम्न लिखित श्लोक बना कर लिख दिया और उसे मुंजराज को देने के लिये कह कर घातकों को दे दिया। वह इस प्रकार है:—

मान्धाता स महीपतिः कृतयुगालंकारभूतो गतः।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौदशास्यान्तकः॥
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवम्भूपते।
नैकेनापि समं गता वसुमती मन्येत्वया यास्यति॥

भावार्थः—सतयुग के अलंकार स्वरूप महाराजा मान्धाता चल बसे। जिन्होंने समुद्र पर पुल बांध कर रावण का वध किया था, वे दशरथ नन्दन श्रीराम आज कहां हैं? इनके सिवाय युधिष्ठिर आदि बड़े २ चक्रवर्ती महाराजा भी इस असार संसार से कोरे हाथ ही गये हैं, किसी के साथ यह पृथ्वी नहीं गयी किन्तु मुझे मालूम होता है कि हे राजन्! वही पृथ्वी तेरे साथ अवश्य जायगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घातकों के साथ भोज के भेजे हुए इस युक्तिपूर्ण श्लोक को पढ़ कर राजा मुंज अथाह शोक-सागर में डूब गये और अपने को पुत्र वध करने वाला घोर पातकी और वज्र-हृदय समझ कर आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। हा! प्रियदर्शन! हा! सर्वगुण सम्पन्न! हा! प्रियपुत्र! आदि कातर भरे शब्दों से वे चिल्ला २ कर रोने लगे।

महाराजा मुंज को इस प्रकार पश्चात्ताप करते हुए और पुत्रशोक से अत्यन्त विकल और दुखित देख कर घातकों ने उनके चरण कमलों पर गिर कर भोज के लिये कहा कि महाराज! राजकुमार भोज अभी जीवित हैं; हमारा अपराध क्षमा कीजिये! "भोज अभी जीवित हैं" इस अमृतमय वचन के सुनते ही मुंज का हृदय कमलवत् खिल उठा और उसी समय जंगल से भोज को बुलवा कर उन्हें युवराज पद दे दिया; इस प्रकार मुंज ने अपनी दुखी आत्मा को शांत किया।

महाराजा भोज १५ वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ़ हुए थे। उन्होंने अपनी राजधानी उज्जैन से हटाकर धार में कायम की थी। इनके समय से राज्य सम्बन्धी सब काम धार में ही होने लगे थे इसीसे ये धारेश्वर कहलाये। महाराजा भोज के राज्यकाल में सन् १०१३ से १०३० ई० तक महम्मद गज़नी ने भारत पर छः बार हमले किये थे और मथुरा, सोमनाथ, कालिंजर आदि स्थान मुसलमानों के हाथ में चले गये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराजा भोज जिस प्रकार विद्या में सर्व श्रेष्ठ थे उसी प्रकार युद्ध में भी बड़े वीर थे। उन्होंने अपने समीपवर्ती राजाओं से युद्ध भी किये थे। चैदी के राजा गंगदेव को भोज ने युद्ध में पराजित किया था। इसके सिवाय करनाट लोगों को, लाट के राजा को, गुजरात के राजा को, तुरश्क लोगों को, इन्द्ररथ को, तोगला को और भीमराज को रणभूमि में हराया था। इन लोगों को परास्त करने में भोजराजा ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया था। जो भी महाराजा भोज की सेना कम थी किन्तु बुद्धिमानी के साथ संग्राम करने के कारण उन लोगों को जीतना भोज के लिए बहुत ही सरल काम था।

चालुक्य लोगों की पहली लड़ाई—भोज ने अपने सरदार और सामन्तों की मदद से पश्चिम के चालुक्य राजा पर हमला किया था और वहाँ के राजा विक्रमादित्य पंचम को कैदी बनाकर उसे मार डाला था।

महाराजा मुंज की मृत्यु के पश्चात् उनकी प्रिय पत्नी कुसुमावती ने जैनधर्म स्वीकार कर लिया था और जैनधर्म की साध्वी बन कर देशाटन करना शुरू कर दिया था; एक बार वह विहार करती हुई धार में आई और अपने भाई तैलप का अन्यायपूर्ण कार्य, जो कि महाराजा मुंज के साथ किया गया था, विलाप करते हुए महाराजा भोज के सामने वर्णन करने लगी और इस विषय पर एक खेल भी किया गया जिसमें महाराजा मुंज की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मृत्यु का दिग्दर्शन ठीक ठीक कराया गया था । महाराजा भोज के दिल पर इस खेल का बहुत ही असर हुआ और उन्होंने अपने काका मुंज के शत्रु तैलप से बदला लेने की तैयारी करदी। भोजराज सेना सजा कर तैलप को पराजित करने की दृढ़ लालसासे दक्षिण की ओर विदा हुए । इस समय भोज के साथ मर्दाने वेश में तैलप की बहन (मुंज की स्त्री) कुसुमावती भी थी । घोर युद्ध के पश्चात तैलपराज पराजित हुआ और कैद किया जा कर बड़ी बुरी तरह से मारा गया । कुसुमावती इसके बाद सरस्वती नदी के किनारे तपस्या करने चली गई ।

चालुक्य लोगों की दूसरी लडाईः—चालुक्य राजा सोमेश्वर ने धार के परमार लोगों के साथ अनेक दिन की शत्रुता होने के कारण लड़ाई छेड़दी। सोमेश्वर को लोग साबितजंग भी कहते थे । वह बडा वीर और बहादुर था । इस समय धार के राजा भोज उससे सामना करने में असमर्थ थे इस कारण उन्होंने अपनी राजधानी शत्रुओं के हाथ में छोड़दी और आप लड़ाई से अलग चले गये । इस समय भोजराज की हार हुई थी। तत्पश्चात् सोमेश्वर ने चेदी के राजा कर्णदेव पर चढाई की थी और उसके बल को बिलकुल तोड़ दिया था ।

हार होने पर महाराजा भोज ने कुछ समय के बाद अपना बल बढ़ाया और चालुक्य राजा सोमेश्वर पर एकदम हमला कर दिया । इस लड़ाई में भोज ने विजय प्राप्त की थी। इसके बाद इन दोनों राजाओं में मित्रता हो गई थी । चालुक्य राजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सोमेश्वर के बाद उनका पुत्र विक्रमादित्य छठा सिंहासनारूढ हुआ था; इसके समय में फिर भी लड़ाई छिड़गई थी। इस समय महाराजा भोज ने अपने एक जैन सेनापति कुलचन्द्र को एक बड़ी सेना देकर और उसके साथ अपने आश्रित अमीर उमरावों को भेजकर चालुक्य राजापर हमला किया था। कुलचन्द्र ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया था और विजय प्राप्त की थी। लौटते समय कुलचन्द्र ने अनहिल वाड़े के राजा से भी जयपत्र लिखवा लिया था। उसके वापिस धार आने पर राजा भोजने बड़े सत्कार के साथ उसका स्वागत किया था।

समय पाकर चालुक्य राजा भीमदेव ने राजा भोज को थोड़े समय में ही बदला दे दिया। कहते हैं कि इस लडाई में राजा भोज की हार हुई थी और भीमदेव महाराजा भोज को कैदी बनाकर अपने राज्य में ले गया था। उसने भोजराज के साथ अच्छा बर्ताव किया था।

पश्चात् सन् १०३८ और १०४२ ई० के दर्मियान महाराजा भोज ने चेदीराज गंगेयदेव को चढ़ाई करके बिलकुल हरा दिया था। गंगेयदेव ने अपने आप विक्रमादित्य की पदवी धारण कर ली थी और अपने को विक्रमादित्य कहने लगा था। गंगेयदेव के बाद उसका लड़का कर्णदेव गद्दी पर बैठा था। पहले पहल तो इस कर्णदेव ने महाराजा भोज के साथ मित्रता का वर्ताव रक्खा था और भोजदेव ने भी उसको एक सान की पालकी इनाम में दी थी किन्तु सन् १०५५ ई० में वह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनहिलवाडे के राजा भीमदेव से मिल गया और उसने धार पर चढ़ाई करके भोजदेव को पराजित कर दिया। इस लड़ाई में महाराजा भोज के हार जाने के कारण मालवे में सब दूर अशान्ति छा गई थी। परन्तु गहरवार के राजा चन्द्रदेव ने फिर से शांति स्थापित कर दी थी। इसके बाद परमार राजा अपने पूरे हक़ कभी नहीं पा सके थे; जो भी उदयादित्य ने किसी कदर अपने हक़ फिर से प्राप्त किये थे; किन्तु पूरे नहीं।

कहते हैं कि, महाराजा भोजने लाहौर के राजा जैपाल की मदद को मुसलमानों से लड़ने के लिये, अपनी एक सेना भेजी थी। सन् १०२४ ई० में महम्मद गज़नी जब सोमनाथ के मंदिर को तोड़कर पीछा अपने देश को जाने के लिये रवाना हुआ था तब उसे मालूम हुआ कि परमदेव राजा उसका सामना करने को ससैन्य तैयार खड़ा है; इस खबर को सुनते ही वह रास्ता छोड़कर सिंध की राह से मुल्तान को गया था। गुजरात की ओर से नहीं गया था। ये परमदेव राजाभोज ही थे क्योंकि इनका राज्य उस समय बहुत दूर तक फैला हुआ था। महम्मद गज़नी को गुजरात की राह से वापिस अपने देश जाने में परमार राजा भोज की ही हद्द पड़ती थी।

जिस समय धार में राजा भोज राज्य कर रहे थे उस समय प्राचीन परमारों की राजधानी आबू में धन्दुक राजा राज्य कर रहा था। धन्दुक राज ने अनहिलबाड़े के राजा भीमदेव की हुकूमत कबूल करली थी और उसका उमराव हो गया था; इससे आबू के परमारों की प्रसिद्धता बहुत कम हो गई थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराजा भोज विद्वानों की बहुत कदर करते थे। वे पंडितों को एक २ श्लोक के लिये एक एक लाख रुपया इनाम देते थे। वे स्वतः भी अच्छे विद्वान थे। कहते हैं कि उनके राज्य में मूर्ख मनुष्य को रहने का स्थान नहीं था। उन्होंने यह आज्ञा प्रचलित कर दी थी कि यदि मेरे राज्य में कोई ब्राह्मण भी हो और वह अपढ हो तो शहर खाली करके चला जाव और यदि कोई कुह्मार भी विद्वान् होवे तो वह शांतिपूर्वक रहे। मतलब यह कि वे गुण की ही प्रतिष्ठा करते थे न कि जातिपांति के बड़प्पन की। महाराजा भोज शिव के उपासक थे किन्तु उनके राज्य में सब धर्म के लोग रहते थे और वे सब को एक समान समझते थे। उनको सनातन धर्म और जैन धर्म के वादानुवाद सुनने का बड़ा शौक था, वे अकसर इसके लिये पंडितों की सभा करवाया करते थे।

धार में शहर के दक्षिण की ओर अब्दुल्लाशाह चंगाल की एक कब्र है। उस पर एक शिला लेख है जिसका तात्पर्य यह है कि राजा भोज ने इस्लामी (मुसलमानी) धर्म स्वीकार कर लिया था और उसने अपना नाम अब्दुल्ला रख लिया था। किन्तु यह बात महाराजा भोज प्रथम के लिये लागू नहीं हो सकती। क्योंकि वे कट्टर हिन्दू थे; उनको अपने धर्म का पूरा ज्ञान था। तिसपर भी उस शिलालेख में जो सन् है वह १४५६ ई० का है किन्तु इस सन् के पूर्व ही महाराजा भोज होगये हैं। उनके समय में मुसलमान लोग मालवे में आये ही नहीं थे; वे लोग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उत्तर हिन्दुस्थान में ही लूटमार करते रहे थे । उनके राज्य में अधिक तर हिन्दू लोग ही रहते थे। इन बातों से यह साबित होता है कि—राजा भोज का मुसलमान हो जाना भोज प्रथम के लिये कहना नितान्त मिथ्याभाषण है। किन्तु यदि कोई भोज द्वितीय के लिये कहे तो यह बात शायद हो सकती है; वे कदाचित मुसलमान होगये हों।

महाराजा भोज प्रथम की सभा में कालिदास नामक एक धुरंधर पण्डित थे। किन्तु ये कालिदास नामधारी कवि वे नहीं थे जो ईस्वी सन् की चौथी सदी में हुए हैं और जो विक्रमादित्य की सभा में नवरत्नों में सर्वश्रेष्ठ थे और जिन्होंने मेघदूत शकुंतला नाटक, रघुवंश आदि काव्य रचे हैं किन्तु संभव है कि महाराजा भोजने किसी विद्वान और अच्छे कवि को कालिदास की पदवी देकर अपनी सभा में रख लिया हो। क्योंकि भोज के साथ कालिदास का नाम हम दो पुस्तकों से जानते हैं। एक भोज प्रबन्ध और दूसरी भोज और कालिदास। नव साहसांक चारित्र में पद्मगुप्त को ही कालिदास लिखा है।

महाराजा भोज ने धार की तरह माँडू में भी शिक्षा का अच्छा प्रबंध कर दिया था। कहते हैं कि—वहां उन्होंने एक बहुत बड़ा विद्यालय स्थापित किया था और उसमें मुख्य शिक्षक करनाटक देश का रहने वाला भट्ट गोविन्द शास्त्री नियत किया गया था। इस विद्यालय में सर्वप्रकार की शिक्षा दी जाती थी और दूर २ देश के विद्यार्थी इससे लाभ उठाते थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मांडू में एक कुआं भी बना हुआ है जिसे लोग राजा भोज का कुआं कहते हैं। माँडू में महाराजा भोज की सेना रहा करती थी। उस समय इसका नाम मंडपदुर्ग था।

राजा भोज ने शत्रु रक्षा के लिये धारा नगरी के आस पास पत्थरों की एक मज़बूत दीवार अर्थात् शहरपनाह बनवाई थी। उस समय शत्रुओं का अक्सर भय रहा करता था इसी से इसके बनवाने की आवश्यकता हुई थी किन्तु आजकल सर्वत्र शांति है; किसी प्रकार का भय नहीं रहा है।

महाराजा भोज के उत्पन्न होने की ठीक २ तारीख मालूम नहीं हो सकी है। किन्तु इनके विषय में इतना अवश्य जानते हैं कि ये सन् १०१० ई० में सिंहासनपर विराजमान हुए थे और सन १०५५ ई० तक राज्य करते रहे थे। मालूम होता है कि इसी सन् १०५५ ई० में महाराजा भोज स्वर्गवासी हो गये थे। क्योंकि इस सन के बाद दी हुई सनदों पर महाराजा भोज के पुत्र महाराजा जयसिंह के हस्ताक्षर पाये जाते हैं। महाराजा भोज के समय में परमार राजाओं की हुकूमत बहुत दूर २ तक फैल गई थी, किन्तु राज्य का विस्तार ठीक उतना ही था जितना कि महाराजा मुंज के समय में था। इनके राज्य में नर्मदा के उत्तर का प्रदेश (मालवा) बुंदेलखंड और बघेलखंड का देश सम्मिलित था। दक्षिण में कुछ समय के लिए इनका राज्य गोदावरी नदी के किनारे तक फैल गया था। गोदावरी और नर्मदा नदी के बीच-का मुल्क कभी तो चालुक्य राजा के हाथ में चला जाता था और कभी परमार राजाओं के हाथ में रहता था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराजा भोज ने अपने राज्य में अनेक मंदिर और महल बनवाये थे। जिनमें से अनेक आजकल देखने में नहीं आते; किन्तु कुछेक इस बात के प्रमाण स्वरूप अब भी मौजूद हैं। जैसे-धार में राजा भोज की पाठशाला, लाट मसजिद; उज्जैन में भोज का घाट, भोपाल रियासत में भोजपुर तालाब और काश्मीर में पापसूदन तालाब आदि। भोपाल स्टेट में भोजपुर नामक गाँव में राजा भोज का बनवाया हुआ जो तालाब था उसको मालवे के राजा हुशंगशाह ने १५ वीं सदी में तुड़वा डाला है। उसमें आजकल खेती की जाती है।

राजतरंगिनी में इस बात का प्रमाण है कि पापसूदन तालाब जो काश्मीर में है उसको राजा भोज ने ही बनवाया था। वहां पर आजकल भी यात्री लोग तीर्थयात्रा करने जाया करते हैं। इस तालाब के पास पापसूदन नामक शिव का एक मन्दिर भी है। काश्मीर में राजा भोज के तालाब बनवाने और शिव का लिंग स्थापित करने का कदाचित् यह मतलब हो कि वे कभी तीर्थ यात्रा के निमित्त वहां गये होंगे और उनको पूजा के निमित्त शिव की कोई मूर्ति नहीं मिली होगी। अतः उनको शिव का इष्ट होने के कारण; शिव की मूर्ति स्थापित करनी पड़ी हो। फिर यह भी बात है कि जब वहाँ पर शिव की मूर्ति स्थापित की गई और मन्दिर बनवाया गया तब पास ही पानी के लिये कोई न कोई साधन अवश्य चाहिये। कदाचित् इसी से उनको पापसूदन महादेव के मन्दिर के निकट वह पापसूदन तालाब भी बनवाना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पड़ा होगा। यह प्रायः प्राचीन प्रथा भी है कि, जब कोई मनुष्य तीर्थ यात्रा को जाया करता है तब वह वहां स्मारक के लिये कुछ न कुछ बनवा ही आता है, अतः यह बात मानी जा सकती है कि जो भी काश्मीर में राजा भोज का राज्य नहीं था तोभी वहां शिव का मंदिर और तालाब बनवाना युक्ति-संगत ही है।

महाराजा भोज ने प्रजा को सुख दिया, उसे प्रसन्न रक्खा और धर्म की दृष्टि से राज्य किया था। वे बड़े विद्वान पुरुष थे। उनकी योग्यता असाधारण थी। भारतवर्ष में आजकल भी लोग उनका नाम उसी प्रकार से स्मरण करते हैं जैसा कि उनके राज्य-काल में लोग स्मरण किया करते थे। उनको कवियों ने अनेक उपमाएँ दी थीं। वे वास्तव में कवियों के राजा थे। विद्वानों के कद्रदान थे।

(१०) जयसिंह प्रथम

[सन् १०५५ से १०५९ तक]

महाराजा भोज के बाद उनके पुत्र जयसिंह सिंहासनारूढ़ हुए। शिलालेखों में इनको भी महाराजाधिराज लिखा है। इन्होंने धार में थोड़े ही समय तक राज्य किया था। इनके समय में राज्य का विस्तार भी कम हो गया था। इनके हाथ से कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ। महाराजा भोज की मृत्यु के बाद सम्पूर्ण मालवे में हलचल मचगई थी। धार के परमार राजा जयसिंह को चेदी के राजा कर्णदेव ने युद्ध करके पराजित कर दिया था। जयसिंह ने, हार जाने पर चेदी के राजा की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आधीनता स्वीकार करली थी और उसके उमराव होकर रहे थे । तत्पश्चात् गुजरात के राजा भीमदेव और चेदी के राजा कर्णदेव ने धार पर अनेक हमले किये थे । भीमदेव ने एक बार धार के राजा जयसिंह को हरा कर दामोदर नामक एक व्यक्ति को प्रधान बनाकर धार में रख दिया था और वह पीछा अपने देश को लौट गया था । इस समय से धार का, कुल राज्य का कारभार दामोदर ही के हाथ से होने लगा था । जयसिंह कठ-पुतली की नाईं दामोदर के हाथ नीचे रह कर काम काज देखते रहते थे ।

महाराजा जयसिंह ने अपनी बहन की शादी करनाटक के चालुक्य राजा जयसिंह के साथ की थी और उसको दहेज में नर्मदा के दक्षिण का मुल्क देदिया था । उनकी शादी चेदी के राजा की लड़की से हुई थी । जयसिंह ने धार में एक महल बनवाया था, जिसका नाम कैलाश रखा था । इस महल में घूम घुमाकर आये हुए साधु लोग अक्सर ठहरा करते थे ।

(११) उदयादित्य ।

[सन् १०५९ से १०८१ ई० तक]

महाराजा भोज की मृत्यु से ही धार राज्य में उनके पुराने शत्रुओं ने हमले करने शुरू कर दिये थे इससे कुल राज्य में अशांति छा गई थी महाराजा जयसिंह शक्तिहीन थे; इस कारण वे शत्रुओं से मुकाबिला नहीं कर सके थे और शत्रुओं के हमले बराबर होते रहते थे; अतः इस शोचनीय समय को देख,

Ac. Gunratnasuri MS　Jin Gun Aradhak Trust

महाराजा भोज का दूसरा पुत्र उदयादित्य प्रजा की रक्षा के निमित्त तत्पर हुआ और शत्रुओं से युद्ध करके सब अशांति एकदम दूर करदी। उदयादित्य ने अपने शत्रुओं को पराजित करने में कल्याण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य छठे की सहायता ली थी। उन्होंने धार को परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त करके वहां पुनः स्वतत्र राज्य स्थापित किया था इस कारण प्रजा उन पर बहुत ही प्रसन्न थी और उनको अनेक पदवियां भी दी थीं।

उदयादित्य को भी विद्या से बड़ा प्रेम था। उन्होंने अपने सब राजपुत्रों को उच्च शिक्षा देने में बहुत ही सावधानी रक्खी थी। प्रबन्धकारों ने जयसिंह को तो भोज का पुत्र लिखा है किन्तु उदयादित्य के लिये केवल इतना ही लिखा है कि वे राजा भोज के सम्बन्धी थे। अतः यह बात ठीक २ निश्चित नहीं होने पाई है कि महाराजा भोज के साथ उनका क्या सम्बन्ध था। किन्तु थे ये निकट के ही सम्बन्धी। और वह सम्बन्ध ऐसा था कि जिसके कारण उनको भोज का पुत्र कह सकते हैं।

उदयादित्य के तीन पुत्र थे। लक्ष्मणदेव, नरवर्मदेव और जगदेव इनके सिवाय एक कन्या भी थी। उदयादित्य के पश्चात् उनके दो पुत्र लक्ष्मणदेव और नरवर्मदेव एक २ करके सिंहासनारूढ़ हुए। ग्वालियर राज्य में उदैपुर नामक एक कस्बा है; उसके विषय में ऐसा कहा जाता है कि उदयादित्य ने ही उसे बसाया था। वहां इन्होंने एक मंदिर भी बनवाया था। जिसके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बनने का काम सन् १०५९ ई० में आरम्भ हुआ था और सन् १०८० ई० तक बनता रहा था, पश्चात् समाप्त हुआ। उदयादित्य ने धार की प्रजा को बहुत सुख दिया था। उनके राज्य में प्रजा सब प्रकार प्रसन्न थी। वे बड़े बहादुर थे।

(१२) लक्ष्मणदेव।

[सन् १०८१ से ११०४ ई० तक]

उदयादित्य के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मणदेव सिंहासन पर विराजमान हुए। उनके राज्य काल में किसी को दिये हुए ताम्र पत्र तो नहीं पाये जाते हैं किन्तु नागपुर प्रशस्ति में उनकी बहुत बड़ी प्रशंसा लिखी है। उन्होंने बंगाल के गोड़ देश पर, चेदी राजा के राज्य पर और सिलोन (लंका) पर चढ़ाई की थी। अम्र, चोला, पंड्या और तुरुश्क राजाओं पर उन्होंने चढ़ाई करके उन्हें गंगा पार हटा दिया था। केरा के राजा को भी, जो सरस्वती के पास राज्य करता था, लक्ष्मणदेव ने युद्ध में पराजित कर दिया था।

(१३) नरवर्मदेव।

[सन् ११०४ से ११३३ ई० तक.]

लक्ष्मणदेव शायद संतान रहित स्वर्गवासी हो गये थे इस कारण उनके बाद उनके भाई नरवर्मदेव सिंहासनारूढ़ हुए। वे भी विद्वानों का बहुत मान करते थे। उनको भी विद्या से बड़ा प्रेम था। इसी से उनको सुकवि-बंधु की उपाधि दी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गई थी । धार में राजाभोज की पाठशाला में एक स्तंभ के ऊपर संस्कृत व्याकरण सर्पाकार में लिखी हुई है; कहते हैं कि वह उन्हीं के समय में लिखी गई थी ।

उनके एक भाई और भी थे जिनका नाम–जगदेव पवांर था । उनके विषय में ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने कालिका देवी को अपना मस्तक चढ़ाया था । किस सम्वत् में चढ़ाया था ? यह एक दोहे से इस प्रकार प्रकट हुआ है ।

सम्वत् ग्यारहसौ इक्यावन, चेत सुदी रविवार ।
जगदेव सीस समर्पियो, धार नगर पवांर ॥

कहते हैं कि, जगदेव पवांर गुजरात के राजा जयसिंह सिंधुल के यहां मुख्य सेनापति थे । उनका केवल यही काम था कि रात दिन शहर में घूमते रहना और निर्बलों को आपत्ति से बचाना । उन्होंने देवी को सिर किस मौके पर चढ़ाया था ? ठीक मालूम नहीं है । किन्तु कहीं २ ऐसा लिखा हुआ पाया जाता है कि जगदेव पवांर धार के राजा थे । उनके राज्य पर एक समय जयसिंह नामक बलिष्ठ शत्रु चढ़ आया था । उसको भैरव का इष्ट था, इस कारण जगदेव की हार हुई । जगदेव अपने को बिलकुल पराजित हुआ जान कर देवी के मंदिर में गये और बड़े प्रबल भाव से देवी की स्तुति करने लगे । देवी उनकी भक्ति को देख कर प्रसन्न हुईं और भाटनी का रूप धारण कर के इनसे मस्तक मांगा । जगदेव ने प्रसन्नता पूर्वक अपना मस्तक काट कर उस भाटनी रूपी देवी को दे दिया । देवी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उस मस्तक को लेकर भैरव के पास गई और उससे भैरव की शांति की। तब देवी और भैरव दोनों ने संतुष्ट होकर जगदेव को पुनः जीवित किया और उसे शत्रु का सामना करने के लिये रण में भेजा। इस बार जगदेव विजयी हुए। नहीं जानते? ये कौन से जगदेव पवांर थे और कौनसा जयसिंह इनके राज्य पर चढ़ आया था। यह बात अभी प्रकट नहीं हुई है।

धार शहर में एक पुराना दुर्गा का मंदिर है वहां पर एक पत्थर का सिर रक्खा हुआ है। उसके विषय में लोग कहते हैं कि यह जगदेव पवांर का ही सिर है।

महाराज नरवर्मदेव ने गौड़ और गुजरात पर चढ़ाई कर के विजय प्राप्त की थी। वे राजा भोज के समान दयालु और उदार थे। उनको भी महाराजा भोज की नाईं सब धर्म की बातें सुनने का बड़ा शौक था। वे जैन-धर्म और हिन्दू-धर्म के विद्वानों का वाद-विवाद अक्सर सुना करते थे। शिव पर उनकी बड़ी श्रद्धा थी। उनके लग्न चेदी की राजकन्या मोमला-देवी के साथ हुए थे। उनसे एक पुत्र भी हुआ था जिसका नाम यशोवर्मन् था।

(१४) यशोवर्मदेव।

[सन् ११३३ से ११४२ ई० तक]

नरवर्मदेव के स्वर्गवासी होने पर उनके पुत्र यशोवर्मदेव सिंहासन पर विराजमान हुए। उनके राज्य काल में उदयादित्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की संपादन की हुई हुकूमत जाती रही । गुजरात के राजा जयसिंह सिंधुल ने, जो कि अपना राज्य चारों ओर बढ़ा रहा था, मालवे पर भी हमला कर दिया और उसे फतह करके अपने राज्य में मिला लिया ।

कहते हैं कि इसके कुछ समय बाद जब जयसिंह चारों ओर से विजय प्राप्ति करके धार्मिक कामों की ओर लगा था और प्रसिद्ध सहस्रालिंगम् तालाब बनवा रहा था तब धार के परमार राजा यशोवर्मन ने उस पर, समय पाकर बदला लेने की गरज से हमला कर दिया था । किन्तु जयसिंह बड़ा चतुर था उसने इन कामों को कुछ समय के लिये ढीले डाल दिये और मालवे पर एक दम हमला कर दिया । उसने उज्जैन में जाकर अपना डेरा डाला था । कुछ दिन तक दोनों ओर की फौज लड़ती रही; दोनों में से कोई भी नहीं हारा । अंत में जयसिंह ने यशोवर्मन और उसके लड़के महाकुमार को हरा दिया । जयसिंह के भतीजे ने महाकुमार को मार भी डाला । यशोवर्मन् और उनके कुटुम्बी कैदी बना कर अनहिलवाड़ा भेज दिये गये और उनका राज्य गुजरात में मिला लिया गया । राज्य प्रबन्ध के लिये जयसिंह ने जिनचन्द्र नामक एक जैनी को प्रधान बना कर धार में भेज दिया था ।

कहते हैं कि जयसिंह ने यह प्रण किया था कि वह मालवे के राजा यशोवर्मन् को मार कर उनके चमड़े से अपनी तलवार का म्यान बनावेगा । तदनुसार, जब यशोवर्मन् कैद कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिया गया तब जयसिंह ने अपने प्रण के पालने की इच्छा प्रकट की; किन्तु उसके एक मंत्री ने इस पाप कर्म से उसे रोका और सलाह दी कि अपना प्रण पूरा करने के लिये यशोवर्मन् के एक पांव के तलवे का थोड़ा सा हिस्सा ही काटा जावे। तब ऐसा ही किया गया।

यशोवर्मन् को बन्धन-मुक्त करने के लिये जयसिंह को बहुतसा द्रव्य देने को कहा गया था किन्तु उसने एक भी नहीं माना। उसने यशोवर्मन् को काठ के पींजरे में बन्द करके रक्खा था।

जयसिंह ने जब से मालवे को फतह किया तब से मानों उसने यह सबक और और राजाओं को भी सिखा दिया कि मालवे को अपने हाथ में कर लेना बड़ा आसान काम है। इसी सबक को पाकर बुंदेलखण्ड के चंदेलवंशी राजा मदनवर्मन् ने मालवे पर हमला कर दिया। उस समय यद्यपि जयसिंह ने बुंदेलखंड के राजा का मुकाबला तो किया किन्तु मुकाबिला करने में उसको जो जो कठिनाइयां पड़ीं वे अवर्णनीय हैं। जय-सिंह को यह बात अच्छी तरह मालूम होगयी कि दूसरों को कष्ट देने से अंत में क्या फल मिलता है।

थोड़े दिन के बाद यशोवर्मन् जयसिंह की कैद से निकल आया और अजमेर के चौहान राजा की मदद से उन्होंने अपने राज्य का थोड़ा-सा हिस्सा फिर भी प्राप्त कर लिया। तत्पश्चात् चालुक्य राजा की हुकुमत कबूल करके शांतता से राज्य करने लगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् ११४२ से ११५५ तक का समय

यह एक ऐसा समय था जिसमें मालवे के परमार राजा स्वतन्त्रता-पूर्वक राज्य नहीं कर सके थे। उन्होंने गुजरात के राजा की हुकुमत कबूल करली थी और उन्हीं के अधिकार में रह कर राज्य करने लग गये थे। सन् ११४३ ई० से सन् ११७९ या ८० ई० तक मालवा गुजरात के राजा के अधिकार में रहा था। इस बीच में परमार वंश का क्षय ही होता रहा।

यशोवर्मन् की मृत्यु के बाद बल्लालदेव नामक एक अधिकारी मालवे का सरदार मुकर्रर हुआ। पश्चात् वह अपने को स्वतंत्र राजा मानने लग गया था।

इधर मालवे में तो इस प्रकार अशांति फैली हुई थी उधर गुजरात में राजा जयसिंह की मृत्यु होजाने से राज्य के लिए झगड़े उत्पन्न होने लगे। कुमारदेव जो भीमदेव के बाद सिंहासन का हकदार हो सकता था, अपना हक बता कर राजा बन गया। इस बात से उसके संबंधी उस पर बहुत अप्रसन्न हुए और लड़ाई करने के लिए तैयार होगये। इन बागियों की एक मंडली बन गई थी। इस खबर को पाकर मालवे का सरदार बल्लालदेव भी उनसे जा मिला। आबू पर्वत के पास चन्द्रावती नगरी का परमार राजा विक्रमसिंह भी इस मंडली में मिल गया। इस बागी मंडली का सरदार सांभर का चौहान राजा बना था। किन्तु युद्ध होने पर ये सब के सब गुजरात के राजा से हार गये। इस समय विक्रमसिंह परमार की बड़ी बेइज्जती की गई। उनका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुल मुल्क छीन कर उनके भतीजे यशोधवल को देदिया। यशोधवल गुजरात के राजा कुमारपाल का उमराव था और उसी की ओर से लड़ने आया था। इस समय मालवे का सरदार बल्लालदेव भागता फिरा किन्तु थोड़े दिन के बाद ही वह पकड़ा गया। सन् ११४२ से ११५५ ई० तक, धार का राज्य परमार राजाओं के हाथ में नहीं रहा था। किन्तु बल्लालदेव नामक किसी और राजा ने यहाँ राज्य किया था।

(१५) जयवर्मन्।

[सन् ११४२ से ११६० ई० तक]

जयवर्मन् महाराजा यशोवर्मन् के पुत्र थे। ये धार के राजा तो थे किन्तु इनके राज्य का मुख्य भाग गुजरात के चालुक्य राजा के अधिकार में था। ये केवल नाम मात्र के राजा थे और विंध्याचल पर्वत के किसी एक भाग पर राज्य करते थे। जयवर्मन् के हाथ में कुछ भी सत्ता नहीं थी। इनके घर में ही घरू झगड़ों ने अपना अटल प्रभाव जमा लिया था। इसका परिणाम यह हुआ था कि इसी परमार वंश के दो राजा एक साथ मालवे में राज्य करने लगे थे। जयसिंह के अन्तिम काल का हाल मालूम नहीं हुआ है किन्तु इतना अवश्य है कि वे राज्यच्युत किये गये थे।

दुअमली राज्य।

[सन् ११४४ से १२१६ ई. तक]

धार में यशोवर्मन् तक तो लगातार परमार वंश के राजा ही राज्य करते आये थे किन्तु उनके बाद जब से जयवर्मन्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सिंहासनारूढ़ हुए तब से अशांति फैलना शुरू होगयी। यशोवर्मन् के तीन पुत्र थे। जयवर्मन्, लक्ष्मीवर्मन् और अजयवर्मन् सन् ११४२ ई० में जयवर्मन् अपने पिता के बाद सिंहासन पर बैठे। सन् ११४४ से घरू झगड़े उत्पन्न हुए। जयवर्मन् को निर्बल जान उनके भाई अजयवर्मन् ने उनको गद्दी से अलग कर दिया। अजयवर्मन् से धार में राज्य करने वाली एक नई शाखा कायम हुई। जिसका परिचय दूसरी शाखा करके दिया गया है।

जिस समय अजयवर्मन् राज्य लेने की कार्रवाई में लगे थे तब, समय पाकर, उनके भाई लक्ष्मीवर्मन् ने भी राज्य का थोड़ासा हिस्सा अलग कर लिया था। ये जयवर्मन् के पक्ष के थे अतः इस शाखा का परिचय यहां मूलवंश के नाम से दिया गया है। क्योंकि लक्ष्मीवर्मन् उसी मुख्य घराने में, जयवर्मन् के बाद, राज्य करने लगे थे; जिसमें कि अभी तक परमारों का राज्य चला आया था।

(१६) लक्ष्मीवर्मन, (१७) हरिश्चन्द्र और (१८) उदयवर्मन.

जयवर्मन् के बाद लक्ष्मीवर्मन् सन ११४४ ई० में सिंहासन पर विराजमान हुए। इन्होंने परमार वंश के असली राज घराने के नाम से ही राज्य करना आरम्भ किया था। इनको महाराजाधिराज की उपाधि भी मिली थी। जिस समय लक्ष्मीवर्मन् राज्य कर रहे थे उस समय जयवर्मन् भी कायम थे किन्तु

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वे राज्य करने से बिलकुल अयोग्य थे। शायद अजयवर्मन् ने उनको कैद भी कर लिया था। लक्ष्मीवर्मन् के बाद उनके पुत्र हरिश्चन्द्र सिंहासन पर बैठे। इन्होंने थोड़े ही दिन तक राज्य किया था।

हरिश्चन्द्र के बाद उदयवर्मन् सिंहासनारूढ़ हुए; इन्हीं से दुअमली राज्य का अंत हुआ। लक्ष्मीवर्मन् ने लिखा है कि मैंने राज्य तलवार के बल से प्राप्त किया था क्योंकि जयवर्मन् के हाथ से राज्य निकल कर अजयवर्मन् के हाथ में चला गया था। हरिश्चन्द्र लिखते हैं कि मैंने राज्य जयवर्मन् की कृपा से ही पाया है। इस वंश के राजा भेलसा और नर्मदा नदी के बीच के मुल्क पर राज्य करते रहे थे; और दूसरी शाखा के राजा धार के आसपास के मुल्क पर राज्य करते रहे थे।

दूसरी शाखा के राजा।

(१५) अजयवर्मन्।

[सन ११४४ से ११६० ई० तक]

ये जयवर्मन् को सिंहासन से अलग करके स्वतः राजा बनकर स्वतंत्र रीति से राज्य करने लग गये थे। इनके समय में लक्ष्मीवर्मन् ने भी अपना एक अलग स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया था। लक्ष्मीवर्मन् प्राचीन राजगद्दी पर राज्य करने लगे थे। जिसको यहां मूलवंश करके लिखा है। और अजयवर्मन् ने अपना एक अलग ही राज्य स्थापित किया था इस कारण यहां दूसरी शाखा करके लिखा है। इस दुअमली राज्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में मूलवंश के राजाओं से इस दूसरी शाखा के राजाओं ने बहुत अच्छा राज्य किया था । दूसरी शाखा के राजा धार के समीपवर्ती मुल्क पर राज्य करते थे ।

(१६) विंध्यवर्मनदेव ।

[सन् ११६० से ११८० ई० तक]

ये अजयवर्मन् के पुत्र थे । ये बड़े बहादुर थे । इन्होंने गुजरात के राजा अजयपाल चालुक्य को युद्ध करके पराजित किया था; और धार को फिर भी स्वतंत्र बना दिया था । इनके समय में परमार राजाओं को पुनः अपने पैतृक हक़ मिल गये थे । यशोवर्मन् के समय में धार का बहुत छोटा राज्य हो गया था । विन्ध्यवर्मन् विद्वान थे और विद्वानों की कदर भी खूब करते थे । इनके मंत्री वे ही बिलहनदेव थे जो अर्जुनवर्मन् और देवपालवर्मन् के समय में मंत्री का काम करते थे । इनके समय में उत्तरीय हिन्दुस्तान में बहुत अशांति फैल गई थी । सन् ११९२ ई० में दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान को मौजुद्दीन मुहम्मद गौरी ने हरा दिया था; और उत्तरीय हिन्दुस्तान में मुसलमानों का राज्य स्थापित हो गया था । इसका परिणाम यह हुआ था कि विद्वान हिन्दुओं को उत्तरीय भारत छोड़ कर और कहीं जाना पड़ा था; क्योंकि वहां मुसलमान लोग इन पर अत्याचार करने लग गये थे । इनमें से अधिकांश विद्वानों को विन्ध्यवर्मन् ने आश्रय दिया था ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१७) सुभटवर्मन्देव।

[सन ११८० से १२१० ई० तक]

ये विन्ध्यवर्मन् के पुत्र थे। इन्होंने बहुत बुद्धिमानी के साथ राज्य किया था। अनहिलवाड़े के राजा भीमदेव द्वितीय को विजय करने में इन्होंने बहुत प्रयत्न किये थे और उसकी शक्ति को बार बार हमले करके इन्होंने किसी प्रकार कम भी करदी थी। इन्होंने गुजरात को फतह करने में देवगिरि के राजा सिंघनयादव की सहायता ली थी। ये यादव राजा के उमराव थे।

(१८) अर्जुनवर्मनदेव।

[सन् १२१० से १२१६ ई० तक]

सुभटवर्मन् के बाद उनके पुत्र अर्जुनवर्मन् अनुमान १२१० ई० में गद्दी पर बैठे। अर्जुनवर्मन् ने छः वर्ष से कुछ ऊपर राज्य किया था। इनको महाराजा की उपाधि मिली थी। इन्होंने एक नाटक तैयार करके रंगभूमि पर करवाया था; जिसमें जयसिंह को संग्राम में हराने वाले पात्र की जगह अपने खुद को लिखा था। यद्यपि देखने में वह नाटक था किन्तु उससे उनका पैतृक प्रेम अवश्य प्रकट होता है। इस नाटक के दो अंक श्रीयुत पं. काशीनाथ कृष्ण लेले ने कमालमौला मसजिद (राजा भोज की पाठशाला) से शोध करके निकाले हैं। ये दोनों अंक शिलाओं पर लिखे हुए हैं। इन शिलाओं को मुसलमान बादशाहों ने उलट कर मसजिद में जड़वा दी थीं। इस नाटक को

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

रचने वाले इनके गुरु बाल सरस्वती मदन थे । इस नाटक का नाम विजय-श्री रक्खा था । यह नाटक सरस्वती मंदिर में वसंतोत्सव के समय खेला गया था । अर्जुनवर्मदेव ने भी गुजरात के राजा पर चढ़ाई की थी और उसकी शक्ति को भंग कर दिया था ।

विजय-श्री नाटक में धार का भी वर्णन है । उसमें लिखा है कि धार का विस्तार ८४ वर्ग मील था । इस शहर में बहुत से अच्छे २ मंदिर थे । इस नाटक में जिस जगह जयसिंह को पराजित करने का लिखा है यह बात किसी प्रकार ठीक नहीं मालूम होती; क्योंकि उस समय जयसिंह नाम का कोई राजा नहीं था । किन्तु यह बात अवश्य हुई थी कि उन्होंने गुजरात के अनहिलवाड़े के एक बड़े सरदार जयंतसिंह की मातहत सेना को हराया था ।

अर्जुनवर्मन् को भी साहित्य से बड़ा प्रेम था । उन्होंने बहुत बुद्धिमानी के साथ राज्य किया था । उनके राज्य काल में भी अनेक अच्छे २ कार्य हुए थे ।

दुअमली राज्य का अन्त ।

(१९) देवपालदेव

[सन १२१६ से १२४० ई० तक]

जब अर्जुनवर्मन् निःसन्तान स्वर्गवासी होगये तब यह दूसरी शाखा भी मूलवंश में मिल गई और दोनों राज्य एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होकर दोनों के राजा देवपालदेव हुए। यहीं से दुअमली राज्य का अन्त हुआ और धार का राज्य पुनः पूर्ववत् मूलवंश के राजाओं के शासन में आगया। देवपालदेव लक्ष्मीवर्मन् के पौत्र थे। इनके राज्यकाल में मुसलमान लोग आगे बढ़ते २ मालवे की हद तक आ पहुंचे थे। अल्तिमश ने सन् १२३२ ई० में ग्वालियर को फतह किया था और इसके तीन वर्ष बाद उसने भेलसा और उज्जैन को भी फतह करलिया था। उज्जैन को फतह करके अल्तिमश ने वहां बड़े २ उपद्रव किये थे। कहते हैं कि उसने महाकाल के मंदिर को भी तोड़ डाला था और महाराजा विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर ले गया था। अल्तिमश के इस हमले से उज्जैन में बड़ी भारी हलचल मच गई थी। इधर मालवे के राजा और गुजरात के राजाओं में पहले से ही शत्रुता थी। समय पाकर चन्द्रावती के महामंडलेश्वर परमार राजा सोमसिंह ने गुजरात के राजा की ओर से मालवे पर हमला कर दिया था। किन्तु देवपालदेव ने हरादिया था और कैद कर लिया था।

देवपालदेव ने देपालपुर में एक बड़ा तालाब बनवाया था। वह तालाब अब भी मौजूद है।

(२०) जयतुंगदेव (जयसिंह द्वितीय)

[सन् १२४० से १२५६ ई० तक]

ये जयपालदेव के पुत्र थे। इनके राज्यकाल में मुसलमानों के हमलों से सब दूर अशांति फैल गई थी। इसी से इनका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राज्य भी घटते घटते बहुत थोडा रह गया था । सब लोगों को इसी बात की चिंता लगी हुई थी कि इन मुसलमानों का पीछा किस प्रकार छुड़ाया जाय ? क्योंकि ये लोग हिन्दुओं को धर्मभ्रष्ट करने में लगे थे । जो लोग इस्लाम धर्म को मंजूर नहीं करते थे उन्हें ये लोग बडी बुरी तरह मरवा डालते थे । इस अशांति के समय में जयतुंगदेव के हाथ से कोई बडा काम नहीं हुआ था और इसी से उनके राज्य का केवल इतना ही हाल ज्ञात हुआ है ।

(२१) जयवर्मन् द्वितीय।

[सन १२५६ से १२६१ ई० तक।]

ये जयतुंगदेव के छोटे भाई थे । इन्होंने लोगों को धर्मादाय में जो जमीन दी थी उसके ताम्रपत्र अब भी पाये जाते हैं। इनके मंत्री का नाम मालधर था । कागज पत्रों में लोग इनको महाराज श्री जयवर्मन् लिखा करते थे। इनके समय में भी मुसलमानों का भय अधिक रहा था ।

(२२) जयसिंहदेव तृतीय।

[सन १२६१ से १२८० ई. तक]

इनके समय में अनाहिलवाडे के विशालदेव बाघेल ने धार पर हमला किया था और उसको बिलकुल फतह कर लिया था। यह बात एक शिलालेख से ज्ञात होती है । गणपति व्यास नामक एक गुजराती ब्राह्मण ने धार के राजा का, इस लडाई में पराजित होने का हाल लिखा है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२३) भोजदेव द्वितीय।

[सन १२८० ई० से १३१० ई० तक।]

ये जयसिंह देव के बाद सन १२८० ई. में सिंहासनारूढ़ हुए थे। सन १२८३ ई. में हमीर नामक एक चालुक्य राजा ने धार पर चढ़ाई की थी और राजा भोज को हरा दिया था। इनके समय में मुसलमान लोग चारों ओर उपद्रव कर रहे थे। धार में भी ये लोग बहुतायत से आगये थे। भोजदेव द्वितीय भी भोजदेव प्रथम की नाईं कवि-मित्र थे।

धार में अब्दुल्लाशाह चंगाल की कब्र पर फारसी भाषा में एक शिलालेख खुदा हुआ है। उसका तात्पर्य यह है कि राजा भोज अब्दुल्लाशाह चंगाल के गुणों पर मोहित हो गया था और इसी कारण से उसने मुसलमानी धर्म स्वीकार कर लिया था। गुलदस्तेअबर नामक पुस्तक में भी राजा भोज के मुसलमान हो जाने की बात लिखी है। भोजदेव द्वितीय के अन्तिम काल का हाल ज्ञात नहीं हुआ है।

अनहिलवाडे के राजा सारंगदेव ने यादवराव रामचन्द्र और मालवे के राजा भोजदेव को चढ़ाई करके हरा दिये थे क्योंकि वाघेलराजा विशालदेव और मालवे के राजा भोजदेव और परमार राजा जयसिंह देव ने किसी समय में गुजरात की सेना को हरा दिया था, इस कारण इसने बदला लिया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२४) जयसिंहदेव चतुर्थ।

[सन १३१० ई. में सिंहासन पर बैठे।]

इनके राज्यकाल में मुसलमानों का बहुत ही जोर जुल्म रहा और इन्हीं से अति उच्च और परम प्राचीन परमार वंश के राज्य का अन्त हुआ। इनके बाद धार के सिंहासन पर परमार वंश के राजा नहीं बैठ सके। परमारों के स्थान पर मुसलमानों ने यहां अपना राज्य स्थापित कर लिया। आस पास के छोटे छोटे हिन्दू सरदार एक मुसलमान अधिकारी-सूबेदार-के हाथ नीचे रह कर राज्य करने लगे। यद्यपि ऐसे समय में भी परमार वंश के किसी राजा ने मुसलमानों का सामना किया था किन्तु अंत में वह हरा दिया गया। उज्जैन, धार, मांडू और चंदेरी को मालवे में सम्मिलित करके एक अलग सूबा बना दिया गया था। और इस सम्पूर्ण सूबे पर शासन करने के लिये बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने एक सूबेदार मुकर्रर कर दिया था। इस रीति से धार में राज्य होने लगा।

उपसंहार।

इस प्रकार परमार वंश के राजा लोग अनुमान ५०० वर्ष तक मालवे में राज्य करके सन् १३१० ई० के पश्चात् राज्य-च्युत कर दिये गये। परमार वंश के चौबीस राजाओं ने मालवे में राज्य किया था। इस वंश में दो राजा बहुत ही प्रसिद्ध हुए हैं। मुंज और भोजदेव। भारतवर्ष में ऐसा कोई भी आदमी नहीं है जो महाराजा भोजदेव का नाम नहीं जानता हो। महाराजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भोज विक्रमादित्य की भांति प्रसिद्ध राजा हुए हैं। विद्वत्ता, वीरता और दानशूरता में इनका नम्बर प्रथम था। राजा भोज के कारण ही परमार वंश सर्व साधारण की दृष्टि में अति उच्च समझा जाता है। इनके बनाये हुए अनेक चिन्ह आज कल भी धार, माँडू और ग्वालियर राज्य के उदैपुर कस्बे में पाये जाते हैं। इनके राज्यकाल में धार का राज्य पूर्व में भेलसा से लेकर पश्चिम में गुजरात तक और उत्तर में मंदसौर से लेकर दक्षिण में ताप्ती नदी के किनारे तक फैल गया था। यह राज्य सर्कलों में विभाजित था जिसे उस समय के लोग मंडल कहा करते थे। इन मंडलों पर राज्य करने वाला मंडलेश्वर कहलाता था। प्रत्येक मंडल परगनों में विभक्त था। प्रत्येक परगने में अनेक गांव थे। गांव का मुख्य अधिकारी पटेल कहलाता था। राजा के मंत्री बहुधा ब्राह्मण ही हुआ करते थे। संधि और विग्रह में इनकी सम्मति ली जाती थी। इस वंश के आठवें राजा सिंधुराज तक परमारों की राजधानी उज्जैन में रही। किन्तु—पश्चात भोजदेव ने अपनी राजधानी धार में कायम करली थी। ये राजा परम-भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर भोजदेव प्रथम कहलाते थे। साधारण लोग इनको धारेश्वर और मालवा चक्रवर्ती भी कहते थे। इस वंश में करीब २ सब राजा विद्या प्रेमी हुए हैं। इस वंश में सिंहासन का मालिक सदैव पुत्र ही समझा जाता था; पुत्र के न होने पर कोई पास का सम्बन्धी राजा बनाया जाता था। इन राजाओं की मुहर में गरुड़ और सर्प की आकृति रहती थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अधिकतर परमार राजा शैव धर्म के ही उपासक हुए हैं। इनके राज्य में सर्व प्रकार के धर्म प्रचलित थे और सब धर्मों को ये लोग आदर की दृष्टि से देखते थे। खासकर जैन धर्म के सिद्धान्तों को ये अधिक चाह से सुना करते थे। कारण इसका यह था कि उस समय जैन धर्म को मानने वाले अधिक मनुष्य थे। और जैन धर्म के अनेक साधु विहार करते हुए अक्सर आया जाया भी बहुत करते थे। किन्तु चालुक्य राजाओं के समान इन्होंने जैन धर्म को अंगीकार नहीं कर लिया था। इन्होंने अपने धर्म को नहीं छोड़ा था। उज्जैन के महाकाल और धार की कालिका देवी इनके पूज्य देव थे। ये लोग ब्राह्मणों को बहुत मानते थे। बहुत सी जमीन इन्होंने ब्राह्मणों को दान में दी थी। परमार राजाओं के दिये हुए ताम्रपत्रों से यह बात अच्छी तरह ज्ञात होती है। राजा भोज के बाद इस वंश के १५ राजाओं ने यहां राज्य किया था।

परमार राजाओं के पडोसी।

मालवा के परमार राज्य के आस पास गुजरात के चालुक्य राजा दक्षिण के चालुक्य राजा, वाघेल राजा, चेदी राजा और चंदेल राजा थे और इन्हीं लोगों से इनका विशेष सम्बन्ध भी था।

गुजरात के चालुक्यः—आठवीं सदी के मध्य में वल्लभी राज्य का अंत हो गया, पश्चात् चावड़ा वंश के लोगों ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनहिलपट्टन अर्थात् अनहिलवाड़े को अपना सदर मुकाम बना कर सन् ७४६ ई. से ९३५ ई. तक गुजरात में राज्य किया। सन् ९४१ ई. में मूलराज चौलुक्य (सोलंकी) ने गुजरात को चावड़ा राजाओं से छीन कर अपने राज्य में मिला लिया; इस वंश के राजाओं ने सन् १२३५ ई. तक राज्य किया था। धोलका के बाघेल लोग सोलंकी राजाओं को निकाल कर खुद राजा बन बैठे थे। सन १२९६ ई. में मुसलमान लोगों ने इनको गुजरात से अलग कर दिया था गुजरात और मालवा के राजाओं में सदैव लड़ाई होती रहती थी।

दक्षिण के चालुक्यः—गुलबर्गा के पास मान्यखेत (मालखेड) नामक एक नगर है। वहां पर राष्ट्र कुल के राजा करीब ७३९ ई० से ९७३ ई० तक राज्य करते रहे थे। वहां के राजा बड़े बलवान थे उन्होंने कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन को भी हरा दिया था। इस वंश के चौथे राजा दन्तिदुर्ग ने मालवे पर चढ़ाई करके वहां के राजा को हरा दिया था। इसके पश्चात् कृष्णदेव प्रथम गद्दी पर बैठे उन्होंने अपने राज्य को और भी अधिक आगे बढ़ा लिया था। इस वंश के आठवें राजा गोविन्द द्वितीय ने अपने राज्य को इतना बढ़ा लिया था कि वह मालवे से आ लगा था। इस राजा ने भड़ोंच पर हमला करके उसे भी जीत लिया था और उसे अपने भाई इन्द्र के सुपुर्द कर दिया था। इन्द्र ने वहां अपना अलग राज्य स्थापित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किया था और एक नये घराने के नाम से राज्य करना आरम्भ कर दिया था । इस घराने के १८ वें राजा खोट्टीग को सीयफ (हर्ष) परमार ने युद्ध में पराजित किया था ।

पश्चिम की ओर कल्याण में तैलप नामक राजा ने राज्य करना आरम्भ कर दिया था । यह जाति का सोलंकी था । तैलप द्वितीय ने मुंज को मरवा डाला था । छठे राजा सोमेश्वर द्वितीय ने भोज प्रथम को अपने राज्य से अलग कर दिया था । सातवें राजा विक्रमादित्य ने परमार वंश के ११ वें राजा उदयादित्य को अपने राज्य पर शासन करने में मदद दी थी ।

यादवः—दक्षिण में देवगिरि अर्थात् दौलताबाद में १२वीं सदी के मध्य यादव वंश के राजा लोग राज्य करने लगे थे । इस वंश के सिंघन राजा ने सुभटवर्मन् को गुजरात पर हमला करने में सहायता दी थी । इस वंश का राजा रामचन्द्र भोज द्वितीय का मित्र था ।

चेदीराजाः—चेदीराजा जबलपुर के पास त्रिपुरी (तेवरी) में राज्य करते थे । इस खान्दान के साथ परमार राजा सदैव से झगडते रहे थे ।

चंदेलराजाः—नवीं सदी में बुंदेलखंड के चंदेल राजा शक्तिशाली होगये थे । परमार राजाओं को इनसे लडाई झगडे करने का बहुत ही कम मौका मिला था ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दूसरी रियासतें:—काश्मीर में राजा भोज ने पाप-सूदन तालाब बनवाया था। सांभर के चौहान राजा ने धार के परमार राजा को शत्रुओं के संहार करने में सहायता दी थी। अजमेर के चौहान राजा वीर्यराम को एक बार भोज ने संग्राम में परास्त किया था और वह मारा भी गया था। इस वंश के राजा परमारों से सदैव मित्रता रखते रहे थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वर्तमान पवांर महाराजाओं की-

वंशावली।

साबूसिंह (साबाजी)

|

कृष्णाजी

|

बूबाजी–राणोजी (रायाजी) वाघाल–केरोजी नागर देवले

- कालूजी
  - कृष्णाजी (सूपेकर वंश)
  - तुकोजीराव (देवास बडी पांती)
  - जीवाजीराव (देवास छोटी पांती)
  - मानाजीराव (पाथरेकरवंश)
- सम्भाजी
  - १ उदाजीराव (मलठन १७२५-४२) प्रथम,
  - २ आनन्दराव धार १७४२-४९
  - जगदेवराव चितगांव

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

- दारकुंजीराव
  - मल्हारराव
    - यशवंतराव (भाऊसाहब)
      - मल्हारराव (रावसाहब) (यशवंतराव द्वि० ८वें राजा)
      - अनिरुद्धराव (बाळासाहब) आनन्दराव तृतीय ९वें राजा
      - सम्भाजीराव (आबासाहब)
        - यशवंतराव (सत्यासाहब)
          - धैर्यशीलराव
        - भागोजीराव उदाजीराव द्वितीय १०वें राजा
        - सेतुराम साहब
          - विक्रमसिंहराव (आनन्दराव चतुर्थ ११वें राजा)

- ३ यशवंतराव १७४९-६१.
- रायाजीराव [अमदाबादकर वंश]

३ यशवंतराव १७४९-६१.

४ खन्डेराव १७६१-८०

५ आनन्दराव द्वि. १७८०-१८०७.

६ रामचन्द्रराव प्र १८०७-१०

७ रामचन्द्रराव द्वितीय दत्तक १८१०-३३

८ यशवंतराव द्वितीय दत्तक १८३३-५७

९ आनन्दराव तृतीय दत्तक १८५७-९८

१० उदाजीराव द्वितीय दत्तक १८९८-१९२६

११ आनन्दराव चतुर्थ दत्तक १९२६-वर्तमान

महाराजा चिरायु होवें !!!

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

॥ श्री ॥

धार राज्य का इतिहास।

उत्तरार्द्ध

धार राज्य का वर्णन।

मध्यहिन्दुस्तान (सेन्ट्रल इण्डिया) की ग्यारह बड़ी रियासतों में धारका राज्य भी सम्मिलित है। इस राज्य का संबंधसंधि द्वारा सीधा अंगरेज सरकार से है। यह राज्य मध्य-भारत के दक्षिणीय बिभाग की एजन्सी में एक पोलिटिकल एजन्ट साहब की देखरेख में है * सुगमता के लिये इस राज्य के तीन भाग किये जा सकते हैं। प्रथम भाग में धार शहर, धार का परगना, बदनावर, मांडू और धरमपुरी के परगने सम्मिलित हैं। द्वितीय भाग में कुक्षी का महाल है। और तृतीय भाग में नीमनपुर का महाल है।

सीमा।

प्रथम भाग अर्थात् सब से बड़े भागके उत्तर में रतलाम का राज्य; दक्षिण में बड़वानी की रियासत और कुछ इन्दौर राज्य

---

* मध्यभारत के दक्षिणीय विभाग की एजन्सी में धार झाबुआ, बड़वानी और अलीराजपुर की रियासतें सम्मिलित हैं। पोलिटिकल एजन्ट का मुकाम मानपुर में है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का भाग; पूर्व में ग्वालियर और इन्दौर का राज्य और पश्चिम में झाबुआ की रियासत, ग्वालियर का राज्य और इन्दौर का राज्य है।

स्वाभाविक विभाग।

इस राज्य के दो स्वाभाविक विभाग हैं जो विंध्याचल पर्वत के बीच में आ जाने के कारण हो गये हैं। पहला भाग इस पर्वत के उत्तर में है और वह उपजाऊ मालवा के नाम से मशहूर है। दूसरा भाग उस पहाड़ के दक्षिण में है और वह नीमाड़ का पहाड़ी-प्रदेश कहलाता है।

इस राज्य का नाम—धार—शहर के नाम से है। खास धार शहर में श्रीमंत महाराजा साहब का निवास स्थान है। इससे यह राज्य "धार राज्य" के नाम से प्रसिद्ध है। यह नगर प्राचीन काल में धारा नगरी के नाम से प्रख्यात था।

धार राज्य की स्थिति।

धार राज्य मालवे की दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर है। इस राज्य का अधिकतर भाग विंध्याचल पर्वत की घाटियों पर है। विंध्याचल पर्वत के बीच में आ जाने से इस राज्य के दो भाग हो गये हैं (१) मालवा और (२) नीमाड़। मालवे में बदनावर, धार (नालछा) मांडू और सुन्दरसी* के परगने शुमार किये

---

* सुन्दरसी परगने के दो गांव सुन्दरसी और लड़ावद धार राज्य से दूर होने के कारण सन् १९२८ ई. में ग्वालियर राज्य में मिला दिये गये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाते हैं। और नीमाड़ में कुक्शी, धरमपुरी, (ठीकरी) और नीमनपुर के परगने शामिल किये जाते हैं। इस राज्य का क्षेत्र-फल १७९४ वर्गमील है। सन् १९३१ ई. में राज्य की मनुष्य संख्या २४३५२१ थी। मालगुजारी से इस राज्य की वार्षिक उत्पन्न २० लाख रुपये से अधिक है और प्रतिवर्ष राज्य के कामों में सुधार होते रहने के कारण इसकी उत्पन्न बढ़ती जाती है। नीमनपुर का महाल जो अनेक वर्षों से उजाड़ पड़ा हुआ था; अब वहां आबादी की जा रही है। जमीन भी जोती जाने लगी है। इससे आशा की जाती है कि आगे पर इस राज्य की मालगुजारी और भी अधिक हो जावेगी। इस राज्य में कुल ६७५ गांव हैं।

नदियाँ।

इस राज्य की अधिकांश नदियां चम्बल और नर्मदा में गिरती हैं। नर्मदा नदी के सिवाय और सब नदियां छोटी हैं। नर्मदा नदी इस राज्य में करीब ५० मील तक बहती है। धारड़ी नामक ग्राम में, जो नीमनपुर परगने में है, यह नदी अपना एक जल प्रपात (Water fall.) बनाती है; अर्थात् वहां पर इसका पानी एक ऊँची पहाड़ी से नीचे की ओर बड़ी तेजी के साथ गिरता है। यह दृश्य देखने योग्य है। धरमपुरी में इसकी दो धारा हो जाने, और फिर कुछ आगे चल कर मिल

हैं और बदले में ग्वालियर राज्य के दो गांव पिपलोदा और ढोलाना लेकर सुन्दरसी परगना तोड़ दिया गया है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाने के कारण, एक बेट (टापू) बन गया है । इस टापू पर श्रीमंत महाराजा साहब की ओर से एक मंदिर बना हुआ है । मंदिर में बिल्वामृतेश्वर महादेव की मूर्ति है । मंदिर का खर्च सरकार की ओर से दी हुई जागीर से चलता है । धार राज्य में नर्मदा नदी के किनारे खलघाट, धरमपुरी और कोटेश्वर में पक्के घाट बने हुए हैं ।

धरमपुरी के पास नर्मदा में कुब्जा (खूजनदी) मिली है । उस स्थान को कुब्जा संगम कहते हैं । वहां पर प्राचीन काल के मंदिर बने हुए हैं और कुछ मूर्तियां भी रक्खी हुई हैं ।

पहाड़ ।

विंध्याचल पर्वत इस राज्य के मध्य में समुद्र की सतह से १५०० फीट की ऊँचाई से लेकर २५०० फीट की ऊँचाई तक फैला हुआ है । इसकी ऊँचाई दक्षिण की ओर क्रमशः घटती गई है; यहां तक कि नर्मदा नदी के समीप इसकी ऊँचाई केवल ८०० फीट तक ही रह गई है । विंध्याचल का पहाड़ी प्रदेश बहुमूल्य जंगलों से भरा हुआ है । मांडू में रूपमती के महल से इसकी शोभा देखने में बहुत ही आनन्दमयी प्रतीत होती है । यहां से इस पहाड़ का दृश्य बहुत ही सुन्दर और मनोहर मालूम होता है ।

तालाब ।

खास शहर धार और धार परगने में तालाब अधिकता से हैं; उनमें से अनेक ऐतिहासिक बातों के लिये प्रसिद्ध हैं । धार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शहर में मुंज सागर बड़ा तालाब है; इसके विषय में ऐसा कहते हैं कि इसको महाराजा भोज के चचा मुंजराज ने बनवाया था। यह तालाब शहर से उत्तर की ओर स्थित है।

कुंज सागर—इसके विषय में भी लोगों का कहना है कि इसको महाराजा मुंज के भाई कुंज ने बनवाया था । आज कल इसका नाका फूट जाने से इसमें पानी नहीं ठहरता है।

नटनागरा या रत्नाकर—यह शहर से पूर्व की ओर है। इसके किनारे पुराने समय की बनी हुई एक इमारत है। यह स्थान बड़ा ही रमणीय है। इस तालाब के किनारे जो इमारत है उसका हाल अभी तक अच्छी तरह ज्ञात नहीं हुआ है; किन्तु यह बात अनुमान से कही जा सकती है कि इसको मुसलमान बादशाहों ने बनवाया था। यहां पर काल भैरव का स्थान है। यह तालाब किसी समय में पक्का बना हुआ था; ऐसा इसके आस पास के निशानों से मालूम होता है।

मानसरोवर—धार परगने में जीरापुर एक गांव है। वहां पर भी एक बड़ा तालाब—मानसरोवर—नाम का बना हुआ है। बहुत करके इस तालाब को मुसलमान बादशाहों ने बनवाया होगा; क्योंकि इस तालाब के आस पास मुसलमान बादशाहों के समय की बनी हुई इमारतें, टूटी फूटी हालत में, अब भी विद्यमान हैं। इसकी विचित्रता इस प्रकार है कि यह सदैव पानी से भरा रहता है। इसमें से मान नामक एक नदी भी निकली है; किन्तु तो भी इसका पानी कम नहीं होता। इस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तालाब के लिये लोगों का ऐसा ख्याल है कि इसमें बहुत सा धन गड़ा हुआ है। इसकी पाल के ऊपर चौंसठ योगिनी और एक भैरव की मूर्ति स्थापित है। इसके विषय में लोग ऐसा भी कहा करते हैं किः—

मान सरोवर ताल, जिसमें नौ सौ गेंड़ा माल।
न जाने इस पार, न जाने उस पार॥

कौन जाने; यह बात कहां तक सत्य है? यह तालाब सदैव कमलों से भरा रहता है। स्थान दर्शणीय है।

रानी का और बांदी का तालाब—ये दोनों तालाब नालछे में हैं। ये भी मुसलमानों के समय के बने हुए हैं। रानी के तालाब में एक स्तम्भ मीनार के आकार का बना हुआ है। बांदी के तालाब के बीच एक छोटासा महल बना हुआ था जो आज कल टूटी फूटी हालत में है। यह तालाब पक्का बना हुआ था।

सागर तालाब—यों तो मांडू में अनेक छोटे बड़े तालाब हैं किन्तु सब से बड़ा और प्रसिद्ध केवल सागर तालाब ही है इसमें पानी सदैव भरा रहता है। इस तालाब के आस पास मुसलमान बादशाहों के बनाये हुए मकानों के कई खंडहर पड़े हुए हैं।

आबहवा।

विंध्याचल के उत्तर की ओर मालवे की आबहवा मातदिल है। गरमी के दिनों में गरमी और जाड़े के दिनों में सर्दी अधिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होती है । नीमाड़ में सर्दी की अपेक्षा गर्मी बहुतायत से होती है, यहां तक कि जाड़े के दिनों में भी जैसी चाहिये वैसी सर्दी नहीं पड़ती ।

निवासी ।

इस राज्य में हिन्दू, जैन, मुसलमान, पारसी और ईसाई लोग रहते हैं । बोली यहां पर हिन्दी, माळवी, नीमाड़ी और भिलाली बोली जाती है । इस राज्य में मुख्य करके किसान लोगों की ही बस्ती अधिक है ।

ऐतिहासिक स्थान ।

धार शहर—नवीं सदी के आरंभ में महाराजा वैरसिंह द्वितीय उज्जैन से धार को चले आये थे । इसके पूर्व धार का हाल ठीक २ ज्ञात नहीं होता । इसी समय से धार का नाम प्रसिद्धता में आने लगा है । यह शहर बहुत ही प्राचीन है । इसमें अनेक ऐतिहासिक बातें पाई जाती हैं । यहां पर अनेक वंश के राजा राज्य कर चुके हैं । कहते हैं कि महाराजा वैरसिंह ने अपने हथियारों की तेज धार से संग्राम में अनेक शत्रुओं को मार कर इसे प्राप्त किया था; इसी से इसका नाम धार रख दिया था ।

अनुमान पांच सौ वर्ष तक धार में प्राचीन परमारों की राजधानी रही थी । उस समय के कवि लोग इसके विषय में लिखते हैं कि धारा नगरी सब मुल्कों से श्रेष्ठ थी; यहां तक कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यह लंका से भी अधिक सुन्दर और इन्द्रपुरी को भी मात करने वाली थी । राजा भोज की पाठशाला में एक शिलालेख मिला है–जिसमें लिखा है कि धारा नगरी बड़ा भारी शहर था; यहां पर अच्छे २ महल, मंदिर, विद्यालय, नाटकगृह और बगीचे थे । इस शहर की शोभा अपूर्व थी ।

सन् १३१० ई० में प्राचीन परमार वंश के आखीरी राजा जयसिंहदेव को हरा कर पहले पहल बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने धार में पैर रक्खा था । इस समय तक अलाउद्दीन ने धार से लेकर उत्तर का तमाम मुल्क जीत लिया था । इसके दस बरस बाद अलाउद्दीन के बड़े सेनापति मलिककाफूर ने धार में आकर डेरा डाला था; तब से धार शहर मुसलमानों के हाथ में चला गया था ।

मलिककाफूर देवगिरि के राजा रामदेव को हराकर मालवे में आया था और धार में आकर ठहरा था । सन् १३४४ ई० में हिन्दुस्तान में बड़ा भारी दुष्काल पड़ा था, इस समय जांच करने के लिये दिल्ली का बादशाह मुहम्मद तुगलक भी धार आया था । सन् १३९८ ई० के लगभग दिलावरखां नामक एक सरदार धार के मुसलमानों का गवरनर नियत हुआ था और सन् १४०१ ई० में उसने अपने को स्वतंत्र बना लिया था । जब वह मर गया और उसका लड़का हुशंगशाह गद्दी पर बैठा तो वह अपनी राजधानी धार से हटा कर मांडू को ले गया था । तब से धार की प्रसिद्धता दूसरे दर्जे की होगई थी ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अकबर बादशाह के समय में धार मालवे के सूबे में अव्वल दर्जे का महाल था, किन्तु था यह मांडू सरकार की निगरानी में। फरवरी सन् १५९८ ई० में अकबर दक्षिण की ओर जाते समय धार में सात दिन तक ठहरा था; यह बात लाट मस्जिद के एक स्तम्भ पर खुदी हुई है। सन् १६५८ ई. में औरंगजेब बादशाह के भाई दाराशिकोह की फौज धार के किले में आकर रही थी। दाराशिकोह ने यह फौज अपने भाई औरंगजेब से लड़ने के लिये भेजी थी। जब औरंगजेब दक्षिण से रवाना होकर धार के नजदीक आगया तब दारा की फौज किला छोड़कर चली गई थी। और फतेहाबाद में जोधपुर के राजा जसवंतसिंह की फौज से जा मिली थी। जसवंतसिंह भी दारा की ओर से भेजे गये थे किन्तु दो महीने के बाद ही फतेहाबाद के युद्ध में वे औरंगजेब से हरा दिये गये थे। सन् १७३२ ई० के लगभग यह धार शहर अंत में फिर भी वर्तमान महाराजा साहब के वंश के एक वीर पुरुष—उदाजीराव पवांर—के हाथ में आया। धार शहर में हिन्दू और मुसलमानों के अनेक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान हैं।

धार का किला- यह किला शहर से उत्तर की ओर एक छोटी पहाड़ी पर बना हुआ है। इसको महम्मद तुगलक ने सन् १३२५ ई० में बनवाना शुरू किया था, और इसका काम सन् १३५१ ई० में पूर्ण हुआ था। जब कि देवगिरि के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा रामदेव को हराकर और उसका खजाना लूट कर मुसलमान सरदार दिल्ली को जाने लगे; तब वह लूट का माल इतना अधिक था कि उसे दिल्ली तक ले जाना कठिन काम हो गया था। इसी सबब से धार में आकर इन लोगों ने एक मजबूत क़िला बनवाना शुरू कर दिया था। यह क़िला बादशाह मुहम्मद तुगलक की इजाजत से दक्षिण के सूबेदार अजीज़ हमीर की देख रेख में बनवाया गया था।

इसी क़िले में आखिरी पेशवा बाजीराव दूसरे सन १७७५ ई० में आनन्दीबाई की कुक्ष से उत्पन्न हुए थे। उनके खेलने के लिए वहां पर एक कुंआ और सिंहासन बनवाया गया था। वह कुंआ और सिंहासन अभी तक क़िले में मौजूद है।

गदर के समय में अर्थात् सन १८५७ ई० में इस क़िले में मकरानी और रोहिल्ला लोग भोपावर की छावनी लूटकर आघुसे थे। ये लोग धार के महाराजा साहब की सेना के सिपाही थे। इनको भगाने के लिए मऊ से जनरल स्टुअर्ट साहब के अधिकार में एक पल्टन यहां आई थी। वह पल्टन छः दिन तक धार को घेरे पड़ी रही; अन्त में भेद—पाकर तोपों के फेर से किले की पश्चिमी दीवार का एक हिस्सा तोड़ दिया गया। यह देख बागी लोग किले के गुप्त मार्ग से मन्दसौर की ओर भाग गये और किले पर अंगरेज सरकार की सेना का अधिकार हो गया। इस किले में से अंगरेजी सेना को नौ लाख रुपये मिले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

थे; यह तमाम रकम मऊ को भेज दी गई थी। इस किले की पश्चिमी दीवार का जो हिस्सा तोड़ दिया गया था वह बाद को दुरुस्त कर दिया गया। किन्तु दीवार बराबर नहीं बनने के कारण वह अपूर्ण भाग अभी तक गदर की याद दिलाता रहता है। इस किले में खरबूजा महल नामक इमारत अच्छी बनी हुई है। आज कल इस किले में कैदखाना है और कैदी लोग रहते हैं।

यहां के लिये कुछ लोग एक बहुत ही मनोरंजक तथा हास्य जनक दंत कथा कहा करते हैं वह इस प्रकार है कि हजरत महबूब नामक एक मनुष्य इस किले में नौकर था। मुसलमानों के समय में भी इस किले में कैदी रक्खे जाते थे। हजरत महबूब ने एक समय अपनी माता के कहने से किले के तमाम कैदियों को छोड़ दिया इससे किले के दूसरे पहरेवालों में और इसमें संग्राम होना शुरू हो गया। लड़ाई बहुत देर तक होती रही। अन्त में हजरत महबूब का सिर किले के ऊपरी दरवाजे के पास काट डाला गया; सिर कटने पर भी महबूब लड़ता ही रहा और दुश्मनों को मारता हुआ वह लगभग २०० गज की दूरी तक चला गया। वहां जाकर उसका धड़ गिर गया और वहीं दफना दिया गया। इस स्थान को लोग पीर बंदीछोड़ की कब्र कहते हैं। यह शहर से उत्तर की ओर बनी हुई है। बाहर के बहुत से लोग वहां जाया करते हैं और कब्र की पूजा करते हैं। हजरत महबूब का सिर जो किले के ऊपरी दरवाजे के पास ही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

काट डाला गया था; वहां भी एक कब्र बनी हुई है। उसे भी लोग पूजते हैं।

लाट मस्जिद्—सन १४०५ ई० में दिलावरखाँ ने जैन मंदिरों को तोड़कर उनके पत्थरों से इस मसजिद को बनवाया था। इसका नाम लाट मस्जिद इस कारण प्रचलित हुआ कि इसके पास लोहे की एक बड़ी लाट पड़ी हुई है। यह लाट चौकोर है और इसका घेरा चार फीट के लगभग है। इस पर एक लेख है *जिसमें लिखा है कि* सन १५९८-१६०० ई. के दर्मियान अकबर बादशाह ने धार में कुछ रोज विश्राम किया था। कहते हैं कि पहले यह लाट खड़ी हुई थी किन्तु आज कल गिरी हुई है। इसके विषय में जहांगीर बादशाह ने अपनी डायरी में लिखा है कि गुजरात के सुल्तान बहादुर ने इसको उखाड़ने की कोशिश की थी किन्तु उखाड़ते समय यह गिर गई और टूटकर इसके दो टुकड़े हो गये। सम्पूर्ण लाट की ऊँचाई ४३ फीट थी। जहांगीर ने भी इसके लिये हुक्म दिया था कि यह आगरा भेजदी जावे और अपने पिता अकबर की कब्र पर लगाई जावे; किन्तु उसकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। यह लाट स्तम्भ के आकार की है। इसके विषय में अभी तक कोई ठीक बात मालूम नहीं हुई है कि यह क्या वस्तु है और किस लिये खड़ी की गई थी। किन्तु अनुमान से यह बात प्रकट हुई है कि इसको अर्जुनवर्मन् परमार ने खड़ी की थी-यह लाट

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्जुनवर्मन् का कीर्तिस्तम्भ है। यह भी कहा जाता है कि महाराजा भोज ने इस स्तम्भ को अपने शत्रु दक्षिण के चालुक्य और त्रिपुरी के चेदी राजा गंगेयदेव को रण में हराकर अपनी विजय के स्मारक में बनवाया था। यह बात किसी अंश में ठीक भी प्रतीत होती है और अनेक प्रमाणों से सिद्ध भी की जा सकती है।

इस लाट के विषय में लोग एक किस्सा कहते हैं—वह इस प्रकार है कि धार शहर में एक बड़ी मोटी ताजी और ऊँचे कद की बुढ्ढी तेलिन रहती थी उसका नाम गांगली तेलिन था। वह नित्य प्रति अपने ग्राहकों को इस लाट की बनाई हुई तराजू की डंडी से सौदा तोला करती थी। इस लाट के पास पत्थर रक्खे हुए हैं उनके विषय में कहते हैं कि वे उसके बाट थे। वह कभी नालछे में भी रहा करती थी; एक समय उसने अपने लहँगे की धूल झटकी जिससे एक बड़ी भारी टेकरी बन गई। यह टेकरी आज कल तेलिन टेकरी के नाम से मशहूर है। धार से मांडू जाते समय नालछे के कुछ ही आगे यह पहाड़ी मिलती है।

लोग एक कहावत कहते हैं कि—कहाँ राजा भोज और कहाँ गांगली तेलिन—इसका तात्पर्य यह है कि महा पराक्रमी शक्तिशाली, वीर राजा भोज की तुलना एक शक्तिहीन गरीब गांगली तेलिन से कैसे की जा सकती है? किन्तु उपरोक्त गांगली तेलिन की कहानी में राजा भोज का कुछ भी सम्बन्ध

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालूम नहीं होता। असल में बात इस प्रकार है कि महाराजा भोज ने चेदी के राजा गांगेय देव और दक्षिण के चालुक्य राजा जयसिंह देव, जिसका प्रांत तैलंग देश अर्थात् तैलंगना था और इसी कारण से जयसिंह तैलंगना राजा कहलाता था, को युद्ध में हराया था। इसी विजय के स्मारक में राजा भोज ने यह विजयस्तंभ खड़ा किया था और इसी कारण से लोग इसको गांगेय तैलिंगना लाट कहने लग गये थे। कालान्तर में इसका अपभ्रंश होता गया और गांगेय तैलिंगना लाट के बजाय लोग इसको गांगली तैलिन की लाट कहने लग गये। नालछे के पास जो तैलिन टेकरी है वहीं पर महाराजा भोज का गांगेयदेव और तैलिंगना राजा से युद्ध हुआ था और उसी स्थान पर उन लोगों को हराया था। इस सम्बन्ध से वह गांगेय तैलिंगना टेकरी कहलाती थी किन्तु उसका भी अपभ्रंश होगया और वह गांगली तैलिन की टेकरी कहलाने लगी। तभी से यह कहावत प्रसिद्ध हुई है कि "कहाँ राजा भोज और कहाँ गांगली तैलिन" अर्थात् महाराजा भोज का मुकाबिला गांगेयदेव और तैलिंगना राजा नहीं कर सकते। कहाँ तो वीरवर राजा भोज और कहां उसके निर्बल शत्रु गांगेयदेव और तैलंगना राजा? अतः यह बात इन उक्तियों से मानी जा सकती है कि महाराजा भोज ने अपने शत्रुओं को हरा कर यह लाट खड़ी की थी। ज्यों २ समय बदलता गया लोग उन बातों को भूलते गये। और गांगेय तैलिंगना का अपभ्रंश गांगली तैलिन से कर डाला।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कमाल मौला—यह मस्जिद राजा भोज की पाठशाला के पास ही है । इसमें चार कब्रें हैं । एक के विषय में ऐसा कहते हैं कि यह महम्मद खिलजी (दूसरे) की कब्र है । मुहम्मद खिलजी ने सन् १४३६ से १४७५ ई० तक दिल्ली के तख्त पर राज्य किया था दूसरी कब्र जो इसके पास है वह शेख कमाल मौला (कमालुद्दीन मालवी) की है । कमालुद्दीन बहुत दिन से मालवे में ही रहते थे । इससे वे मालवी कहलाने लग गये थे । कमालुद्दीन दिल्ली के मुरशद निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे । मुरशद निजामुद्दीन औलिया दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के समय में हुए थे । इस मसूजिद के दरवाजे के ऊपर एक लेख साफ अक्षरों में खुदा हुआ है । जिसका तात्पर्य यह है कि इस संसार में भलाई के सिवाय और कुछ भी पीछे नहीं रहता । मुसलमानों की एक पुस्तक मिरतई सिकंदरी में लिखा है कि कमालमौला अहमदाबाद में दफनाये गये थे और इस मसूजिद को धार में मुहम्मद खिलजी ने उनके स्मारक में बनवाई थी ।

राजा भोज की पाठशाला—यह इमारत भी आज कल मसजिद की सूरत में है । कहते हैं कि मुसलमानों ने राजा भोज की पाठशाला को तोड़ कर उसके पत्थरों से इस इमारत को बनवाया था । इसके सिवाय कुछ और भी हिन्दुओं के मंदिरों को तोड़ कर उनके पत्थर भी इसमें लगाये गये थे । जिस स्थान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर आजकल मस्जिद के रूप में इमारत खड़ी है वहीं पर महाराजा भोज ने शिक्षा पाई थी। यहां से अनेक संस्कृत के शिलालेख मिले हैं। पाठशाला के पास एक मन्दिर भी बना हुआ था। जिसको महाराजा भोज ने ही बनवाया था। इस मन्दिर को सरस्वती सदन कहते थे। तथा भारतीय भवन के नाम से भी यह प्रसिद्ध था। वहां पर भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों के विद्वान कवि, समालोचक, वेदविज्ञ और शास्त्री लोग आते थे और अपनी २ विद्या का परिचय देते थे। किन्तु मुहम्मदशाह खिलजी ने सन् १४५७ ई० में इस पाठशाला को मसजिद के रूप में परिवर्तन कर दिया; यह बात इसके दरवाजे पर लगे हुए शिला लेख से मालूम होती है। राजा भोज की पाठशाला में अनेक ग्रंथ शिलाओं पर लिखे हुए रक्खे थे। किन्तु मुसलमानों ने जातीय द्वेष के कारण, उनमें से अनेक शिलाओं के अक्षर छिलवा डाले और कुछेक को ठीक हालत में ही उलट कर इसकी फर्श में जड़वा दिया था। किन्तु कुछ समय हुआ, इन शिला-लेखों को शिक्षा विभाग के भूतपूर्व सुपरिन्टेन्डेन्ट पं. काशीनाथ कृष्ण लेले ने शोधकर दरबार आली की आज्ञा से, बाहर निकाले हैं। ये शिलाएँ इस इमारत में उत्तर ओर की दीवार के पास रक्खी हुई हैं। इनके सिवाय दो स्तम्भ उदयादित्य के समय के इसमें रक्खे हुए हैं। जिन पर संस्कृत भाषा की व्याकरण सर्पाकार में खुदी हुई है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अब्दुल्लाशाह चंगाल की मस्जिद—यह मस्जिद शहर से दक्षिण-पश्चिम की ओर बनी हुई है । यह है तो छोटी-सी; किन्तु धार में सब मस्जिदों से अधिक पुरानी है । इसमें दो मनुष्य दफनाये गये हैं; क्योंकि पास ही पास दो कब्रें बनी हुई हैं । इनमें से एक के लिये कहते हैं कि यह अब्दुल्लाशाह चंगाल की कब्र है और दूसरी राजा भोज दूसरे की । इस मस्जिद पर एक लेख है जिसका आशय यह है कि—इसको चंगाल इसलिये कहते थे कि जो कोई मनुष्य इस से मिलता था वही इसके गुणों पर मोहित हो जाता था । राजा भोज दूसरे पर इसका इतना असर हुआ था कि वह अपना धर्म छोड कर मुसलमान हो गया था और उसने अपना नाम अब्दुल्ला रख लिया था । कहते हैं कि मरते समय राजा भोज दूसरे ने यह इच्छा प्रकट की थी कि मैं अपने गुरु के पास ही दफनाया जाऊँ; इस कारण वह चंगाल के पास ही दफनाया गया था । शाह चंगाल मदीने का रहने वाला था इस मसजिद के बाहर चालीस और भी कब्रें हैं कहते हैं कि ये उन मुल्लाओं की कब्रें हैं जिनको मुसलमान होने के पहले, राजा भोज ने कत्ल करवा दिये थे । यह मसजिद सन् १४५५ ई० में दुरुस्त भी करवा दी गई थी । आजकल मामूली हालत में है ।

कालकादेवी का मन्दिर—यह मन्दिर शहर से पश्चिम की ओर एक पहाडी पर बना हुआ है । इसके सामने एक सुंदर तालाब है जो बहुधा कमलों से भरा रहता है । श्रीमंत

महाराजा साहब यशवंतराव पवांर दूसरे ने इस मन्दिर को बनवाया था। कहते हैं कि, इस स्थान पर पहले भी मन्दिर बना हुआ था किन्तु जब मुसलमान लोग धार में उपद्रव करने लगे तब पुजारियों ने मूर्ति को, मुसलमानों के अत्याचार से बचाने के लिये, इस स्थान से उठा कर शहर में लाकर छिपादी थी। कहते है कि इसी मूर्ति के सामने जगदेव पवांर ने अपना मस्तक चढ़ाया था। यह मूर्ति बहुत ही चमत्कारिक एवं भव्य है।

सिंहासन टेकरी—यह पहाड़ी धार शहर से दक्षिण पश्चिम कोण में कोई चार मील की दूरी पर है। कहते हैं कि महाराजा विक्रमादित्य ने अपना प्रसिद्ध सिंहासन इसी टेकरी से निकलवाया था। इस सिंहासन के विषय में अनेक कथाएँ कही जाती हैं; जिन्हें प्रायः सब लोग जानते हैं।

इनके सिवाय धार में चौंसठ योगिनियों का स्थान, जम्मन जती की टेकरी, झिरा महल, खंडेराव महाराजा की टेकरी, धारेश्वर और आनन्देश्वर के मंदिर आदि स्थान प्रसिद्ध हैं।

मांडू का किला—मांडू के विषय में, मुसलमान बादशाहों के पूर्व का हाल ठीक २ मालूम नहीं हुआ है क्योंकि उस समय का कोई ठीक-सा इतिहास नहीं है। पहले का जो कुछ हाल मालूम हुआ है वह दंत कथाओं के आधार से लिखा गया है। मांडू के विषय में अनेक किस्से कहे जाते हैं।

मांडू का किला धार शहर से आग्नेय कोण में है। धार से मांडू तक सड़क बनी हुई है। धार से मांडू २२ मील दूर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है । हिन्दुओं के वृतान्त से ऐसा दीखता है कि जयसिंह देव नाम के राजा ने मांडू शहर के चौगिर्द शहरपनाह बनवाई थी । प्राचीन काल में इसे मंडप दुर्ग कहते थे यद्यपि यहां आबादी बहुत वर्षों से थी, किन्तु मुसलमानों के राज्यकाल से इसका महत्व बढ़ने लगा था । मालवे के सुल्तान हुशंगशाह गौरी ने इसे अपनी राजधानी बनाया था; इसके पश्चात् इसके वंशज भी मांडू से ही मालवे का शासन करते रहे । आजकल यहां पर जितनी प्राचीन इमारतें हैं वे सब प्रायः मुसलमानी ढंग की ही बनी हुई हैं ।

मांडू के विषय में कहते हैं कि जयसिंहदेव राजा के पास एक पारस पत्थर था । उसी के द्वारा उसने सोना बना कर और बहुतसा द्रव्य एकत्रित करके मांडू में शहरपनाह बनवाई थी । वह पारस पत्थर एक घास काटने वाले मनुष्य को मिला था । उसकी परीक्षा एक लोहार ने की थी और जयसिंहदेव राजा को वह भेंट में दे दिया गया था । कहते हैं कि जयसिंहदेव ने उस के द्वारा बहुतसा द्रव्य एकत्रित करके मांडू का किला बनवाना आरंभ कर दिया था । जब किला बन गया; तब उसने वह पारस अपने कुल गुरु को दक्षिणा में दे दिया था । गुरु ने राजा से द्रव्य के बदले पत्थर दक्षणा में पाया हुआ जान कर, क्रोधित हो उसे नर्मदा नदी में फेंक दिया था । गुरु नर्मदा नदी के किनारे ही रहते थे किन्तु जब राजा ने क्षमा मांगी और उसका गुण वर्णन किया कि महाराज वह साधारण पत्थर नहीं था—वह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पारस था—उसमें लोहे से सोना बनाने की शक्ति थी; तब तो गुरुजी महाराज अपने इस अविचार से किये हुए काम पर पश्चात्ताप करने लगे और उसे निकालने के लिये शीघ्र ही नर्मदा नदी में कूद पड़े। किन्तु फिर अनेक प्रयत्न करने पर भी वह पारस नहीं मिला। अंत में निराश होकर गुरुजी बाहर निकल आये। आजकल भी अनेक भोले भाले हिन्दू कहा करते हैं कि जिस स्थान पर पारस फेंका गया था वहां इतना गहरा पानी है कि कोई थाह नहीं पा सकता। पारस के गिरते ही उस जगह अथाह जल हो गया। वह पारस तभी से पीछा गुप्त हो गया है। ईश्वर जाने यह बात कहां तक सत्य है। केवल दंत कथा के तौर पर यह बात कही जाती है; कोई प्रमाण नहीं है।

कहते हैं कि मांडू का किला मुसलमानों के हाथ में हिन्दू राजाओं से गया था। मुसलमानों के राज्यकाल में यह बहुत ही लम्बा चौड़ा शहर होगया था। लगभग चारसौ वर्ष तक मांडू पर मुसलमानों का राज्य रहा। पश्चात् सन् १७३२ ई० में उदाजीराव पवांर प्रथम ने तिरला की लड़ाई में विजय पाकर इसे जीत लिया। तब से यह आज तक इसी परमार (पवांर) वंश के राजाओं के अधिकार में है। जब से मुसलमानों की बादशाहत मांडू से उठी तभी से यह वीरान होने लग गया। अनेक अच्छी २ इमारतें गिर गईं तथा और भी गिरती जा रही हैं। यह स्थान बहुत ही प्राचीन होने के कारण दर्शणीय है। सन् १९०२ ई० के नवम्बर मास में माननीय लार्ड कर्जन महोदय इसे देखने के लिये पधारे थे। और सन् १९१२ ई० के नवंबर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मास में माननीय लार्ड हार्डिञ्ज महोदय भी यहां पधारे थे। इनके सिवाय और भी अनेक उच्च अधिकारीगण प्रति वर्ष इसकी शोभा देखने के लिये पधारा करते हैं। महाराजा साहब की ओर से महमानों के लिये सब बातों का प्रबन्ध बहुत अच्छी तरह कर दिया जाता है जिससे सब अधिकारी गण प्रसन्न होकर ही जाते हैं।

मांडू का किला एक पहाड़ पर बना हुआ है। इसके चारों ओर एक दीवार है, जिसकी परिधि अनुमान चालीस मील की है। इस किले के अन्दर अब भी बहुत सी इमारतें बनी हुई हैं किन्तु अच्छी हालत में बहुत ही कम हैं। बहुधा सब ही टूटी फूटी हालत में हैं। यह स्थान किसी समय में बहुत ही रमणीय था; कारीगरों की बुद्धिमानी, मकानों की विपुलता एवं विशालता आदि बातों को देख कर यही कहना पड़ता है कि मालवे में इसके मुकाबिले का, मुसलमानों के समय में, शायद ही कोई शहर होगा। इसको शादियाबाद भी कहने लग गये थे। इससे मुसलमानों का वैभव और प्राचीन कारीगिरी पता अच्छी तरह लगता है।

किन्तु काल की लीला विचित्र है जिस स्थान पर किसी समय में बड़े २ सरदार और मानी गुमानी वीर बहादुर लोग रहते थे वहां काल की कुटिल गति से आज शेर, चीते, भेड़िये,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गीदड़ आदि जंगली जानवर निवास करते हैं। जिस स्थान पर बैठ कर मुसलमान बादशाह शक्ति के मद में कहा करते थे कि हम अजर हैं—अमर हैं, हमारा सानी कोई नहीं है। हम स्वतंत्र हैं। हम चाहें सो कर सक्ते हैं। वहीं पर आज उनके वंशज का पता लगाना भी कठिन हो गया है। जहां पहले बस्ती थी वहां आज जंगल खड़ा है। देखते ही देखते कुछ का कुछ हो गया। संसार का यही नियम है। यदि किसी को अपने वैभव, अपने धन, अपने अधिकार, अपने बल का घमंड हो तो वह मांडू में चला जावे। वहां जाकर देखे। मालूम हो जायगा कि यह संसार परिवर्तनशील है। इसमें कोई बात सदा एकसी नहीं रहती। संसारी मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये मांडू प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मांडू में दर्शनीय स्थान—दिल्लीदरवाज़ा, राममंदिर, जैन मंदिर, जुम्मामस्जिद, चरवामस्जिद, (हुशंगशाह गौरी की कब्र), जहाज महल, हिंडोला महल, चम्पा बावड़ी, दिलावरखाँ की मस्जिद, नीलकंठेश्वर, सोनगढ़ का किला, तारापुर का घाटा, रूपमती का महल, बाजबहादुर का महल, रेवाकुंड, सागर तालाब, दाई का महल, अशरफी महल (विद्यालय), कीर्तिस्तम्भ, हाथी खाना, गदाशाह-भैंसाशाह का महल इत्यादि। ¶

¶ मांडू का यहां पर संक्षिप्त वर्णन किया गया है। विशेष हाल के लिये पृथक पुस्तक प्रकाशित करने का विचार है। —लेखक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्राचीन और अर्वाचीन परमारों के बीच की राज्य स्थिति.

प्राचीन परमार वंश के आखिरी राजा जयसिंहदेव चतुर्थ सन् १३१० ई० में भोजदेव द्वितीय के बाद धार के सिंहासन पर विराजमान हुए। यों तो महाराजा भोज प्रथम के समय में ही मुसलमान लोग हिन्दुस्तान में आ गये थे और सन् १०२३ में महमूद गज़नी ने कालिंजर का किला और ग्वालियर को लूटा था; इसके सिवाय सन् १०२४ ई० में उसने सोमनाथ के मंदिर पर चढ़ाई करके सोमनाथ महादेव की मूर्ति को भी तोड़ डाला था। किन्तु इतना होने पर भी उस समय मुसलमानों की जड़ हिन्दुस्तान में नहीं जमी थी। लेकिन यह बात अवश्य है कि इसके बाद मुसलमान लोग हिन्दुस्तान पर बराबर चढ़ाई करते रहे और सन् १२०० के लगभग ये लोग मालवे में भी आ गये। सन् १३१० ई० में अलाउद्दीन के सेनापति मलिककाफूर ने धार को अपने हस्तगत कर लिया था और धार का राज्य हिन्दू राजघराने से निकलकर मुसलमानों के हाथ में चला गया था। सन् १३३५ ई० में अल्तिमश ने उज्जैन पर अपना कब्ज़ा कर लिया था। सन् १३९८ ई० में दिलावरखाँ नामक एक मुसलमान सरदार दिल्ली के बादशाह की ओर से मालवे का सूबेदार बनाकर धार में रक्खा गया था। किन्तु जब तैमूरलंग की चढ़ाई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हिन्दुस्तान में हुई तब सब दूर हलचल मच गई थी। इस मौके को पाकर दिलावरखाँ धार में स्वतंत्र राजा बन बैठा था और अपने तईं राजा का खिताब लेकर सब राज चिन्ह धारण कर लिये थे। इसने धार को ही राजधानी के योग्य स्थान समझकर यहां राजधानी स्थापित की थी। दिलावरखाँ ने हिन्दुओं के अनेक उत्तम २ देवालयों को गिरवाकर उनके मसाले से राजमहल और मसजिदें बनवाई थीं किन्तु धार में मुसलमानों की राजधानी अधिक काल तक नहीं रही। सन् १४०३ ई० में दिलावरखाँ की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका लड़का हुसंगशाह गौरी गद्दी पर बैठा। उसने धार से राजधानी उठा कर मांडू में स्थापित की। हुसंगशाह के समय में धार, मांडू राज्य का एक महाल हो गया था। तभी से धार की प्रसिद्धता, मुसलमानों के समय में, जरा कम हो गई थी।

सन् १५६९ ई० में मालवा देश मुगल बादशाह अकबर के हाथ में चला गया था उस समय भी धार एक महाल था। और मांडू के सूबे के अधिकार में था। सन् १७३२ ई० तक यह मुगल राज्य के अधिकार में रहा था।

मुगल बादशाह के समय में अलग २ सरकार नियत करके उनके कब्जे में अलग २ परगने दे दिये गये थे। धार, नालछा, मांडू, धरमपुरी, और कोठड़ा के परगने मांडू सरकार के हाथ में थे। सुल्तानाबाद और बलखेड बीजागढ़ सरकार के हाथ में थे। बदनावर परगना उज्जैन सरकार के हाथ में था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नीमनपुर हांडिया सरकार के हाथ में था और सुन्दरसी परगना सारंगपुर सरकार के हाथ में था । कुक्शी उस समय टप्पे में शुमार की जाती थी; अलग परगना नहीं था । आज कल कुक्शी का अलग परगना है ।

सन् १६९६ ई० में मरहठे लोग नालछे के पास भारूडपुरे के घाटे से मालवे में चढ़ आये और मांडू पर हमला करके उसे अपने हस्तगत कर लिया । पश्चात् धार में आकर मुसलमानों के लश्कर से लड़े । इस समय इन्होंने धार में तीन महीने तक डेरा दिया था और अन्त में सुरंग देकर धार का किला भी अपने कब्जे में कर लिया था । इनके साथ पवांर वंश के प्रतिष्ठित पुरुष कालूजी और सम्भाजी भी थे । इस जमाने में मालवे का काम शाहदुल्ला व अब्दुल्लाखाँ इन दोनों के सुपुर्द था; और इन्हीं को मालवे के शाहजादे भी कहते थे । अरबी भाषा में लिखे हुए तवारीख में मालवे के सूबेदारों की पूरी लीस्ट दी है; उस पर से मालूम होता है कि सूबेदार नवाब अमीरखाँ के बाद उसके लड़के दुल्लाखाँ व शाहदुल्लाखाँ मालवे के सूबेदार नियत किये गये थे । इनका केवल यही काम था कि मालगुजारी बराबर वसूल कर लिया करें । जब मरहठे सरदारों ने इन पर हमला किया तब ये हार गये और भोपाल को भाग गये । तदनन्तर मरहठों ने धार के किले पर अपना अधिकार कर लिया । जो २ लोग इस किले के अन्दर थे उनको मरहठों ने उनकी इच्छानुसार, जहां वे जाना चाहते थे वहां, अपने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालमत्ते के साथ, जाने दिये। उन पर किसी प्रकार की सख्ती नहीं की। किन्तु इरादतखाँ ने अपने तवारीख में लिखा है कि शाहदुल्लाखाँ १७०७ ई० में मालवे का सूबेदार था और उस साल वह मांडू का किलेदार भी था। इससे मालूम होता है कि उस समय मरहठों की फौज केवल लूटमार करके ही लौट गई थी; मुल्क पर कब्जा नहीं किया था इसी से शाहदुल्लाखाँ को पीछा धार में आने का मौका मिल गया था।

जब से मरहठे लोग मालवे में हमला करने लगे थे, तब से जयपुर के राजा साहब सवाई जयसिंह मुगल बादशाह की ओर से धार व मांडू के रक्षक नियत किये गये थे। किन्तु, पश्चात बादशाह को उनके विषय में ऐसा सन्देह हुआ कि वे गुप्त रीति से मरहठों से पत्र व्यवहार करते हैं। और उनको उत्तेजना भी देते हैं कि वे लोग बराबर हमला करते रहें। इस के लिये कहते हैं कि उन्होंने मरहठों को ऐसा लिखा था कि तुम बराबर हमला करते रहो। मैं अवसर देखकर विजय का मार्ग सुलभ कर दूँगा। कहते हैं कि मरहठों ने भी उनकी इच्छानुसार ऐसा ही करना आरम्भ किया था। सन् १६९८ में जयसिंह ६ महीने तक मालवे में रहकर पीछे अपने देश को चले गये थे। जयसिंह को लोग मिर्जाराजा भी कहते थे।

कुछ समय के बाद मरहठे लोग मालवे पर फिर भी चढ़ आये। इस समय इनके सरदार उदाजीराव पवांर थे। इन्होंने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रथम मांडू पर अपना कब्जा करके झंडा रोप दिया था। किन्तु सन् १७०९ ई० में किसी कारणवश इनको पीछा दक्षिण लौट जाना पड़ा था। तत्पश्चात् बालाजी विश्वनाथ पेशवा के समय तक मरहठों ने मालवे को बिलकुल नहीं सताया था।

सन १७१०-११ ई० में दिल्ली के मुगल बादशाह ने जयसिंह को फिर भी मालवे का सूबेदार बनाया था। कहते हैं कि इस बार बादशाह की ओर से इस पर विष प्रयोग किया गया था।

औरंगजेब बादशाह की मृत्यु के पश्चात् सन् १७३२ ई० तक भिन्न २ सूबों पर अधिकारियों की स्थापना नहीं हुई थी। अलग २ सरदारों को अलग अलग प्रांत नहीं दिये गये थे। उस समय बहुधा मरहठे लोग मालवे में आकर लूट मार कर जाया करते थे।

इधर दक्षिण में श्रीमंत शाहूजी छत्रपति के समय में चौथ वसूल करने के लिये, अधिकारियों की मुकर्ररी की गई। सन् १७२२ ई० में उदाजीराव पवांर को पेशवा सरकार ने मालवे में चौथ वसूल करने के लिये भेजा और उसी समय सब सरदारों के नाम परवाने भी जारी कर दिये कि उदाजीराव पवांर को चौथ वसूल करने के पूर्ण अधिकार दिये गये हैं; ये जो कुछ चौथ ठहरावें वह हमें स्वीकार है। पश्चात् मालवे पर पूर्ण अधिकार जमाने के लिये बाजीराव बल्लाल खुद यहां आये थे। किन्तु

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इनके आने के दो वर्ष पूर्व ही उदाजीराव ने बहुतसी जगह से चौथ वसूल करने का ठहराव कर लिया था।

सन् १७२४ ई० में उदाजीराव पवार को मालवा व गुजरात इन दोनों प्रान्तों में चौथ वसूल करने की सनद, पेशवा सरकार की ओर से, दी गई थी। उस समय इनके साथ यह शर्त की गई थी कि जितनी चौथ वसूल होगी उसका आधा हिस्सा इन को फौज खर्च के लिये दिया जायगा और शेष आधा हिस्सा सरकारी खजाने में जमा होगा। उस सनद का आशय इस प्रकार है:—

"अखंडलक्ष्मी अलंकृत महाराज श्री उदाजीराव पवार को बाजीराव बल्लाल प्रधान का आशीर्वाद स्वीकार हो; अपरंच गुजरात और मालवा प्रांत की चौथ का आधा हिस्सा सरकार का है और शेष आधा हिस्सा तुम्हें फौज खर्च के लिये दिया जाता है। तुम हमारे सेनापति हो। तुम पर हमारा विश्वास है। यह जो सनद दी गई है उसे अमल में लाओ।"

यह सनद महाराज उदाजीराव पवार प्रथम को सन् १७२९ ई० के पहले दी गई थी। क्योंकि इस सन् में इन्होंने पूर्व में बुंदेलखंड तक, पश्चिम में अहमदाबाद तक, और उत्तर में मारवाड़ तक के प्रत्येक गांव व प्रत्येक प्रांत के अधिकारियों के नाम ऐसे परवाने भेजे थे कि तुम लोग उदाजीराव पवार को चौथ देते रहो। ये कागजात धार राज्य में अब भी रक्खे हुए हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् १७२४ ई० के लगभग गिरधर बहादुर नामक एक नागर ब्राह्मण मालवे का सूबेदार था । इसको उदाजीराव पवांर और बाजीराव के भाई चिमनाजी पंडित ने चढ़ाई करके तिरला की लड़ाई में हरा दिया था; हार जाने पर वह सारंगपुर को भाग गया था और धार पर श्रीमंत उदाजीराव पवांर ने अपना राज्य स्थापित कर दिया था । तब से आज तक इसी वंश के महाराजाओं के हाथ में यह राज्य चला आता है ।

सन् १७३१ ई० में बाजीराव पेशवा को राज्य लोभ उत्पन्न हुआ और वे पूने से एक बड़े लश्कर के साथ नीमाड़ और मालवे की ओर रवाना हुए इन प्रांतों को उन्होंने शीघ्र ही अपने कब्जे में कर लिया । उस समय मालवे का सूबेदार गिरधर बहादुर का रिश्तेदार दयाबहादुर था । वह बाजीराव से सामना करने को तैयार हुआ किन्तु तिरला के पास वह अपने दो हजार सिपाहियों के साथ युद्ध में मारा गया । इस प्रकार उसकी हार हुई और मालवे का कुल मुल्क आसानी से मरहठों के हाथ आगया । इस समय भी महाराजा उदाजीराव ने युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई थी । कहते हैं कि दयाबहादुर इन्हीं के हाथ से मारा गया था ।

इसके बाद महम्मदखां बंगश मालवे का सूबेदार मुकर्रर हुआ; जो भी इसने मरहठों का उत्कर्ष न होने देने के लिए बहुत से प्रयत्न किये थे किन्तु सब व्यर्थ हुए । इसके बाद जयपुर के राजा सवाई जयसिंहजी को बादशाह ने मालवे का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

काम सुपुर्द किया था । इनके विषय में मुसलमान ग्रंथकार लिखते हैं कि मरहठों से इनकी मित्रता हो गई थी । इन्होंने मरहठों के काम में विघ्न डालना व्यर्थ समझा था । कुछ भी हो किन्तु यह बात तो अवश्य है कि सवाई जयसिंहजी ने, बाजीराव को मालवे का काम सुपुर्द कर देने के लिये, बादशाह का मन आकर्षित किया था; परन्तु यह बात नामंजूर की गई थी ।

धार के वर्तमान पवांर वंश का इतिहास ।

धार में पहले परमारों का राज्य था । महाराजा भोज के बाद आपस की लड़ाइयों के कारण परमार (पवांर) कुल की धीरे २ अवनति होती गई । लगभग तीन सौ वर्ष के भीतर ही तमाम मुल्क, जो कि परमारों के हाथ में था, अलग हो गया । यहां तक कि उनके अधिकार में केवल मालवा ही रह गया था । इतने पर भी आपस की लड़ाइयां दिन पर दिन बढ़ती गईं । परिणाम यह हुआ कि चौदहवीं सदी के मध्य में मालवा भी इस वंश के हाथ से निकल गया । तब परमार वंश की भिन्न भिन्न शाखायें मालवा छोड़कर, भारत के अन्य भागों में, अपना भाग्य अजमाने की गरज़ से चली गईं ।

महाराजा भोज के वंश की ज्येष्ठ शाखा के लोग उदैपुर राज्य में चले गये थे और वहां बिजोलिया में जाकर रहने लग गये थे । इन लोगों के समर कौशल से प्रसन्न होकर चितौड़ के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराणाजी ने इस वंश के मुखिया को अपना मुख्य सरदार और भूमिपाति बना लिया था। इस वंश के लोग आज भी बिजोलिया ठिकाने के शासक हैं और उदैपुर महाराणाजी के मुख्य १६ सरदारों में से एक हैं।

सत्रहवीं सदी के आरंभ में बिजोलिया के राज्य वंश में भी विरोध उत्पन्न हो गया। उस समय वहां के राजाजी के दो रानियां थीं। उनसे चार पुत्र उत्पन्न हुए थे। पहली रानी से एक पुत्र और दूसरी से तीन हुए थे। पहली रानी के इकलौते पुत्र शम्भूसिंह सब से बड़े थे; किन्तु राजा की उन पर नाराजी थी और दूसरों पर प्रेम था। इस कारण राजकुटुम्ब और दरबार में नित नई जाल रची जाने लगी; इससे शम्भूसिंह का वहां रहना कठिन हो गया था। अतः विवश होकर और अपने पिता और छोटे भाइयों से वैर करना अनुचित तथा निंद्य समझ कर, शम्भूसिंह अपनी पैतृक सम्पत्ति को अन्तिम प्रणाम करके महाराष्ट्र देश को चले गये; वहां अहमदनगर के निकट-सुखवाडी नामक गांव बसा कर वहीं रहने लगे। अब भी यह गांव अहमदनगर से २४ मील की दूरी पर बसा हुआ है। किन्तु अब उसका नाम बिगड़ कर-सूपा हो गया है।

उस समय अर्थात् सन् १६१५ ई० के लगभग अहमदनगर का इस्लामी राज्य बहुत गिरी दशा में था। बहुत से साहसी पुरुष अपने अपने राज्य की स्थापना की धुन में लगे हुए थे। इस मौके को पाकर परमार राजा शम्भूसिंह ने भी अपने लिये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक राज्य की नींव डाली; जिसमें आज कल के अहमदनगर और पूना के जिलों की भूमि थी। इधर छत्रपति शिवाजी ने भी दक्षिण में हिन्दू साम्राज्य की नींव डाली। सन् १६६० ई० तक शिवाजी की सेना ने शम्भूसिंह के राज्य पर तीन हमले किये। पहले दो हमलों में शम्भूसिंह की जीत रही; परन्तु तीसरे में उसकी भारी हार हुई। तो भी उन्होंने शिवाजी की शरण नहीं ली। इस पराजय के थोड़े ही दिन बाद दलवी नाम के एक पड़ोसी मरहठे सरदार ने महाराजा शम्भूसिंह को विश्वासघात करके मार डाला।

इस समय शम्भूसिंह के इकलौते पुत्र कृष्णाजीराव नाबालिग थे। इसलिये उनकी विधवा माता के ऊपर राज्यकी रक्षा और पुत्र की शिक्षा का भार आपड़ा था। इस राजनीतिनिपुण माता ने शिवाजी के वैभव को 'दिन दूना रात चौगुना' बढ़ता देखकर उनकी शरण लेना ही उचित समझा; इससे उसने अपने १६ वर्ष के होनहार इकलौते पुत्र कृष्णाजी को शिवाजी के दरबार में भेज दिया। शिवाजी इस बात से बहुत प्रसन्न हुए और कृष्णा जी को उनके पिता के सब गांव जहागीर में देकर उनको अपना सरदार बना लिया। यह बात सन् १६८० ई. में शिवाजी के देवलोक होने के थोड़े दिन पहले की है।

शिवाजी के बाद मुगल बादशाह औरंगजेब और मरहठों में बहुत दिन तक लड़ाइयां होती रहीं। उनमें कृष्णाजीराव पवांर के बड़े लड़के बूबाजी ने अपने दो छोटे भाइयों की मदद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से मुगल सेना को अहमदनगर जिले में प्रवेश नहीं होने दिया था। इससे बूबाजी और उनके भाई, रायाजी और केरूजी की शूर वीरता से प्रसन्न होकर मरहठों के राजा राजाराम छत्रपति ने उनको "सप्तसहस्र सेनापति" की सामरिक उपाधि से विभूषित किया था। बूबाजी के दो पुत्र थे कालूजी और सम्भाजी। इन दोनों भाइयों की न्याय्य पटुता से प्रजा बहुत ही सुखी रही थी। ये दोनों भाई सितारे के राजा शाहूजी के दरबार में ऊंचे दर्जे के अधिकारी थे। मौका पाकर कालूजी के पुत्र तुकोजी व जीवाजी ने देवास में बड़ी पांती और छोटी पांती के नाम से राज्य करना आरंभ कर दिया था। सम्भाजी के तीन पुत्र थे; उदाजीराव, आनन्दराव और जगदेव। उदाजीराव बालाजी-विश्वनाथ पेशवा के हाथ नीचे नौकरी करते थे और उसी हालत में मालवे पर कई दफा चढ़ाई भी की थी और थोड़े समय के लिये धार पर अपना कब्जा भी करलिया था।

शाहूजी के राज्यकाल में उदाजीराव को बहुत मान मिला था ये सेनापति थे इतना ही नहीं; किन्तु स्वयं राजा शाहूजी व उनके प्रधान बाजीराव के पत्रों से ज्ञात होता है कि ये असाधारण शूरवीर पुरुष थे सब लोग इनको आदर की दृष्टि से देखते थे। शाहुराजा के लिखे हुए अनेक पत्र अब भी हिफाजत के साथ रक्खे हुए हैं।

आश्चर्य की बात है कि चारसौ वर्ष तक धार में मुसलमानों का राज्य रहकर फिरभी वह राज्य उसी राजपूत सरदार पंवारवंश

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के अधिकार में आगया। मरहठों के पूर्व काल के वृतान्त से पवांर कुल की गणना प्रतिष्ठित कुल में है। ये मूल के राजपूत हैं। जब से ये दक्षिण में गये तबसे धीरे २ वहां के असली रहने वालों में मिलते गये और होते २ अंत में ये राजपूत के बजाय मरहठे कहलाने लगे। इस प्रकार रहन सहन और भाषा में परिवर्तन होने के कारण ये वहांके बाशिन्दों के साथ शादी सम्बन्ध भी करने लगे और मरहठों में बिल्कुल शामिल हो गये। तौभी मूल के उच्च जातीय; और सेंधिया और होल्कर की तरह पेशवा के नौकर न होकर सीधे सितारे के राजा के नौकर होने के कारण, इनका पद सबसे बड़ा है। जिस समय धार में पवांर सरकार की सत्ता कम हो गई थी उस समय भी सेंधिया और होल्कर उनके इस उच्चता के दावे को मंजूर करते थे। जोभी कैलाशवासी यशवंतराव होल्कर और दौलतराव सेंधिया एक ओर से इनका मुल्क बर्बाद कर रहे थे। किन्तु दूसरी ओर से इनको अपने से बड़ा मानकर प्रतिष्ठा भी करते थे।

× × × ×

मुसलमानों के राज्यके बाद धार में महाराजा सम्भाजी के पुत्र महाराज उदाजीराव ने सन् १७२५ ई० में पुनः पवाँरों का राज्य स्थापित किया था। देवास में इनके चचेरे भाई तुकोजी और जीवाजी ने बड़ी और छोटी पांती के नाम से राज्य करना आरंभ कर दिया था। इस प्रकार मालवे में चार सौ वर्ष के पश्चात् पुनः परमार राज्य स्थापित हो गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् सत्रह सौ ईस्वी के मध्य में धार का राज्य बहुत दूर दूर तक फैल गया था। किन्तु, पश्चात् घरू झगड़ों व कर्मचारियों की अयोग्यता के कारण यह राज्य बहुत घट गया था। यहां तक कि अंगरेज सरकार से सन्धि होने के पूर्व यह राज्य ३५०००) रु० का ही रह गया था। सन्धि के समय अंगरेज सरकार ने बीच में पड़ कर बहुत कुछ अशांति दूर की और गये हुए राज्य का बहुत कुछ भाग पीछा दिलाया। तब से अब तक शांति बनी हुई है।

आनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और श्रीमंत-महाराजा रामचन्द्रराव पवांर साहब का संधिपत्र।

यह संधिपत्र सन् १८१९ ई० के जनवरी मास में, आनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से माननीय ब्रिगेडियर जनरल सर जॉन मालकम साहब; जिनको कि हिज एक्सलेन्सी दि मोस्ट नोबल, दि मार्किस ऑफ् हेस्टिंग्ज के० जी०, गवरनर जनरल महोदय की ओर से संधि के पूर्ण अधिकार दिये गये थे और श्रीयुत बापू रघुनाथ दीवान जिनको कि श्रीमंत महाराजा साहब रामचन्द्रराव पवांर द्वितीय की ओर से संधि के पूर्ण अधिकार दिये गये थे; के बीच लिखा गया था। उसका आशय इस प्रकार है:—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पहली शर्त— धार स्टेट के राजा श्रीमंत रामचन्द्रराव पवांर और ब्रिटिश गवर्नमेंट में सदा मित्रता रहेगी। पुश्त दर पुश्त के लिये यह बात है कि एक के लाभ में दूसरा अपना लाभ समझेगा। जो एक का शत्रु होगा वह दूसरे का भी शत्रु और एक का मित्र वह दूसरे का भी मित्र समझा जावेगा।

दूसरी शर्त—श्रीमंत रामचन्द्रराव पवांर इस बात को मंजूर करते हैं कि वे ब्रिटिश गवर्नमेंट के अधिकार में रहेंगे। उनको इस बात का अधिकार नहीं रहेगा कि वे बिना अंगरेज सरकार की आज्ञा के किसी दूसरी रियासतों से मित्रता करलें। जब कभी अंग्रेज सरकार को सैनिक सहायता की आवश्यकता होगी तब उनको रिसाले से तथा पैदल फौज से सहायता देनी पड़ेगी।

तीसरी शर्त--अंग्रेज सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि वह धार राज्य को सुरक्षित रखने का सदैव प्रयत्न करती रहेगी। इस राज्य के परगने-बदनावर, बेरछा, कुक्शी, धरमपुरी, सुल्तानाबाद, बलखेड, नालछा, लोहारी और कुरवाडा (रियासत जोबट में) और लालगढ़ डोंगला (रियासत अली में) इनकी सदैव रक्षा करती रहेगी और ये धार राज्य में ही शरीक समझे जावेंगे।

चौथी शर्त—अंग्रेज सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि अली के राजा जसवंतसिंह, कुक्शी का परगना और अली का टांका श्रीमंत राजा रामचन्द्रराव पवांर को देवें और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बदनावर परगने के ठाकुर लोगों पर शासन करने में मदद भी देवें ।

पांचवीं शर्त—श्रीमंत राजा रामचन्द्रराव पवांर इस बात को मंजूर करते हैं कि अपनी रियासत का एक हिस्सा—जिसमें बांसवाड़ा और डोंगरपुर के परगने हैं—अब से अंग्रेज सरकार को दे दिये जावें । क्योंकि धार के राजा साहब को शत्रुओं से बचाने में, जिस समय अंग्रेज सरकार ने सहायता दी थी, तब फौज खर्च में उनको बहुत खर्च उठाना पड़ा था इस लिये इन परगनों की तमाम मालगुजारी वसूल करने का अखत्यार अंग्रेज सरकार को ही दे दिया गया है ।

छठी शर्त—अंग्रेज सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि श्रीमंत राजा रामचन्द्रराव पवांर को बेरछा का परगना पांच बरस के बाद पीछा वापिस कर दिया जावेगा अर्थात् ता. २९ मार्च सन् १८१९ ई० से ता. २९ मार्च सन् १८२४ ई० तक अंग्रेज सरकार इसको अपने अधिकार में रख कर वापिस राजा साहब को दे देगी । यह परगना हाल ही पिंडारी लोगों से जीता गया है । जब अंग्रेज सरकार ने राजा साहब को लड़ाई में मदद दी थी तब उनके दो लाख पचास हजार रु० हाली खर्च हुए थे; इसलिए इसकी ऐवज में पांच बरस तक यह परगना अंग्रेज सरकार के ही कब्जे में रहेगा बाद खतम होने मियाद के, वह परगना राजा साहब को वापिस दे दिया जावेगा इस मुद्दत में बेरछा के परगने पर अंग्रेज सरकार का पूरा अधि-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कार रहेगा चाहे वे अपने पास रक्खेंगे या दूसरी किसी रियासत को इजारे पर दे देंगे। इस मुद्दत में फायदा नुकसान के मालिक भी वे ही हैं। इस अर्से में राजा साहब तथा उनके वारिसान को इस परगने पर हुकूमत करने का बिलकुल हक नहीं रहेगा। उस सूरत में, जब कि यह परगना दूसरे को दे दिया जावेगा तब अंग्रेज सरकार इसकी मालगुजारी और उत्पन्न राजा साहब को देती रहेगी।

इस संधि पत्र की एक नकल अंगरेजी में, एक हिन्दी में और एक उर्दू में करके और उस पर मुहर छाप लगा कर और अपने २ हस्ताक्षर करके सरजान मालकम साहब ने बापू रघुनाथ दीवान को दी और इसी प्रकार बापू रघुनाथ दीवान ने तीनों भाषाओं की नकलों पर मुहर छाप लगा कर सर जॉन मालकम साहब को दी। ऊपर लिखी हुई छहों शर्तें प्रत्येक नकल में दर्ज की गई हैं।

इस संधिपत्र पर माननीय लार्ड हेस्टिंग्ज महोदय और उनकी कौन्सिल के मेम्बरों के दस्तखत हैं और आनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनी की मुहर है।

धार के वर्तमान पवांर राजा।

१—उदाजीराव प्रथम।

[१७२५—४२]

सन् १७२९ ई० में बाजीराव पेशवा ने उदाजीराव पवांर को एक सनद दी। जिसके द्वारा वे मालवे में कर (चौथ)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वसूल करने लगे पश्चात् उनको मालवा और गुजरात, इन दोनों देशों से चौथ वसूल करने के अधिकार मिल गये । जब पेशवा की ओर से भेजे हुए और-और लोगों को इन्होंने अपने राज्य की नींव डालते हुए देखा; तब इनकी भी यह मन्शा हुई कि गुजरात पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लेवें । किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके; क्योंकि उस समय गुजरात में पिलाजीराव गायकवाड़ और सरदार बांडे ने अपनी राजसत्ता कायम करली थी । पिलाजी ने सन् १७२६ ई० में दुवय और बड़ोदे का किला अपने अधिकार में करके उदाजीराव को पीछा मालवे में लौट जाने के लिए बाध्य किया था । बड़ौदा शहर तभी से गायकवाड़ सरकार का मुख्यस्थान समझा जाने लगा है ।

सन् १७२८ ई० में उदाजीराव ने सारंगपुर पर हमला किया था और वहां के सूबेदार को हरा कर उससे १५ हजार रुपये नकद लिये थे । महाराजा उदाजीराव को स्वतंत्रता पूर्वक रहना बहुत ही पसंद था । वे जन्म से ही किसी के अधिकार में नहीं रहे थे । अतः उनको किसी के दबाव में रहना बिलकुल ठीक मालूम नहीं होता था । इसी से प्रायः बाजीराव पेशवा और गायकवाड़ वगैरः सरदार इन से अप्रसन्न रहा करते थे और इन से सदैव अलग रहते थे । भविष्य में इनकी बढ़ती नहीं होने का यही एक मुख्य कारण है ।

सन् १७३१ ई० में बाजीराव पेशवा और इन में कुछ अनबन हो गई थी । अतः बाजीराव ने रुष्ट होकर इनको अपने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पद से अलग कर दिया था। तब पिलाजीराव गायकवाड़ से मिल कर इन्होंने बाजीराव के विरुद्ध षड्यंत्र रचना शुरू किया था; किन्तु उसमें भी वे कामयाब नहीं हुए और बन्दीगृह में डाल दिये गये। परन्तु वीर पुरुषों को चैन थोड़े ही पड़ती है। सन् १७३२ ई० में उन्होंने मालवे पर फिर भी चढ़ाई करदी और तिरला के पास दयाबहादुर को हरा कर हमेशा के लिये धार पर अपना अधिकार जमा लिया। किन्तु फिर भी दुर्दैव से पेशवा की नाराजी के कारण, धार का राज्य उनके कब्जे से निकल गया और उनके छोटे भाई आनन्दराव के हाथ में सन् १७३४ ई० में आ गया।

इस समय, अपने छोटे भाई आनन्दराव को धार का राज्य मिला हुआ देख कर उदाजीराव दक्षिण को चले गये और वहां पूने के पास "मल्ठन" में जाकर रहने लगे। सन् १७४२ ई० तक वे वहीं रह कर राज्य करते रहे और वहीं उनकी मृत्यु हुई। मरहठों के इतिहास में बहुत जगह उनके पराक्रम का वर्णन है। वे बड़े शूर, वीर, हठी और बहादुर थे। उनके पास सेना भी बहुत थी। उन्होंने बड़े धैर्य्य के साथ मांडू का किला और धार का राज्य अपने हस्तगत किया था।

२—आनन्दराव प्रथम।

[सन् १७४२-४९]

आनन्दराव पवांर बाजीराव पेशवा के सलाहकार थे। पेशवा सरकार इनसे बहुत खुश थे। पेशवा सरकार ने इनकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रमाणिकता को देखकर धार का राज्य उदाजीराव से लेकर इनको दे दिया था। सन् १७३४ ई० में मालवा और गुजरात के जमीदारों से चौथ वसूल करने का अधिकार भी इनको मिल गया था। सन् १८२९ ई० में बाजीराव ने इनको धार के आसपास के परगने भी फौज खर्च के लिये दे दिये थे। तुकोजीराव होल्कर ने मुगलों को हिन्दुस्तान से भगा देने के लिये जो प्रयत्न किया था उसमें आनन्दराव महाराज ने पूर्ण सहायता दी थी पेशवा सरकार इनसे बहुत प्रसन्न थे। इन्होंने अपने वैभव को भी खूब बढ़ाया था।

सन् १७४५ ई० में पेशवा सरकार की ओर से आनन्द राव को धार के राज्य पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने की सनद मिली थी। उस समय धार राज्य का फैलाव बहुत था। उत्तर में कोटा से लेकर दक्षिण में पूना के आसपास के बिखरे हुए परगनों तक पवांर सरकार का राज्य फैल गया था। इसके सिवाय खानदेश राजपूताना और गुजरात में भी इनके जीते हुए कई परगने थे मध्य-हिन्दुस्तान में इनके कब्जे में जो जमीन थी उसमें धार, नालछा, बदनावर, सांवेर, खेराबाद, ताल और बेरछा के परगने मालवे में, डोंगला, कोठड़ा, धरमपुरी, बाकानेर और कुक्शी के परगने निमाड़ में और सुनेल दुग, पदाव, आगर बरडे और मंडावल के परगने सुन्दवाड़े में शरीक समझे जाते थे। महाराजा यशवंत राव प्रथम के समय तक ये सब परगने धार राज्य में ही रहे थे। उस समय पवांर सरकार के राज्य का फैलाव सेंधिया और होल्कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से दूसरे नम्बर का था। सन् १७४९ ई० में महाराजा आनन्दराव स्वर्गवासी हो गये।

३—यशवंतराव प्रथम।

[सन् १७४९–६१]

महाराजा आनन्दराव के स्वर्गवासी हो जाने बाद सन् १७४९ ई० में उनके पुत्र यशवंतराव प्रथम, गद्दी पर बैठे। ये छुटपन से ही महाराजा आनन्दराव और तुकोजीराव (देवास बड़ी पांती) को उत्तर मालवा फतह करने में बहुत काम आये थे; तभी से ये वीर पुरुषों की गणना में शुमार किये जाने लगे थे। इनके पराक्रम से पेशवा सरकार बहुत प्रसन्न रहते थे। इन्होंने चंदेल के सरदार और कोटे के राणा पर हमला करके उनको हरा दिया था और लूट का सब सामान श्रीमंत पेशवा सरकार के अर्पण कर दिया था। तब से ही धार में चौघड़ा और जरीपट रखने का हुक्म हुआ है इसके सिवाय २५०० सवार रखने का अधिकार भी पेशवा सरकार ने श्रीमंत यशवंतराव महाराज को दे दिया था।

ये जैसे शूर, वीर और दयालु थे वैसे ही बुद्धिमान भी थे। इन्होंने एक वक्त बड़ी चतुराई के साथ, निजाम सरकार की ओर से मिली हुई ६० लाख रुपये की चिठ्ठी, जो पेशवा सरकार के हाथ से गुम गई थी, फिर से ला दी थी। इससे इनकी बुद्धिमानी पर प्रसन्न हो, पेशवा सरकार ने पांच लाख रुपये का मुल्क इनको इनाम में दिया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् १७६१ ई. में अहमदशाह अब्दीला और मरहठों में पानीपत के मैदान में जो लड़ाई हुई थी उसमें ४२०० सिपाहियों के साथ वीर शिरोमणि महाराजा यशवंतराव पवांर भी गये थे। पेशवा सरकार के भाई सदाशिवराव भी इनके साथ थे। वहां पर बड़ी बहादुरी के साथ लड कर ये मारे गये।

महाराज यशवंतराव पवांर ने मरहठे लोगों में बड़ी ख्याति पैदा की थी। उनके लिये लोग बहुधा कहा करते थे कि ये "जैसे शूरवीर हैं वैसे दयालु भी हैं" वास्तव में, ये एक आदर्श राजा थे। मालवे में बहुत से लोग अब भी उनकी कीर्ति का वर्णन दंत कथा के तौर पर करते हैं। इनको अपने मान का बड़ा भारी ख्याल था। ये अपने सरदार और जहागीरदारों को आदर की दृष्टि से देखते थे। उनके भले के लिये ये अपनी जान तक जोखम में डाल देते थे। अपमान इनको बिलकुल सहन नहीं होता था। सन् १७६१ ई० में ये शूर सरदार पानीपत की लड़ाई में मारे गये। जिस समय आप स्वर्गवासी हुए तब आपके पुत्र खंडेराव की उम्र केवल ढाई वर्ष की थी। आप अपने यशस्वी—यशवंत—नाम को सदैव के लिये अमर रख गये हैं।

४—खंडेराव पवांर

(सन् १७६१-८०)

अपने पिता के स्वर्गवासी होने पर महाराज खंडेराव सन् १७६१ ई० में ढाई वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठे। इनके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नाबालिगी की हालत में राज्य का काम इनके दीवान माधौराव उरेकर (उड़ीकर) की देख रेख में था। ठीक इसी समय से रियासत के कामों में गड़बड़ पड़ने लग गई थी और राज्य की शक्ति कम होने लग गई थी। इस मौके को पाकर आस पास के राजा लोग इसे अपने राज्य में मिलाने के यत्न में लग गये। दैवयोग से उस समय पेशवा खान्दान में, आपस की फूट के कारण, खून खराबी पैदा हो गई थी और सब दूर अशांति छा गई थी। ऐसे कठिन समय में महाराजा खंडेराव ने आगे पीछे का कुछ भी विचार न कर सन् १७७४ ई० में राघोबा पेशवा की स्त्री आनन्दी बाई को धार के किले में आश्रय दे दिया। आनन्दी बाई दुष्ट स्वभाव की स्त्री थी; उसने अपने भतीजे माधवराव नारायण को मरवाडाला था। इससे दक्षिण के प्रायः सभी लोग नाराज हो गये थे और बदला लेने का विचार कर रहे थे। इस मौके पर, धार के राजा खंडेराव पवांर को आनन्दी बाई का आश्रयदाता जान, लोग इनसे भी अप्रसन्न हो गये। सन् १७७५ ई० में धार के किले में ही आनन्दीबाई के गर्भ से बाजीराव दूसरे, जोकि आखिरी पेशवा थे, पैदा हुए। थोड़े समय के बाद ही राघोबा के बागी लोगों ने धार के किले को घेर लिया और आनन्दीबाई और उसके छोटे बच्चे बाजीराव दूसरे को कैद करके ले गये। उस समय धार राज्य भी उन लोगों ने छीन लिया था किन्तु पश्चात् महाराजा खंडेराव को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस शर्त पर लौटाया कि अब वे कभी आनन्दीबाई की सहायता नहीं करेंगे ।

महाराजा खंडेराव और उनके पुत्र आनन्दराव दूसरे के समय में रियासत की कुल आमदनी ९ लाख २० हजार रुपये थी । उस समय राज्य में बेरछा और आगर आदि परगने भी शामिल थे ।

महाराजा खंडेराव पवांर के लग्न गोविंदराव गायकवाड़ की लड़की से हुए थे । सन् १७८० ई० में इनके आनन्दराव दूसरे पैदा हुए; किन्तु आनन्दराव के पैदा होने के छः महीने पहिले ही खंडेराव–कवठे–गांव में स्वर्गवासी हो गये थे । कवठे गांव दक्षिण में इनके पूर्वजों की जहागीर में था ।

९—आनंदराव पवांर द्वितीय

(सन् १७८०–१८०७)

आनंदराव लड़कपन में अपने नाना गोविंदराव गायकवाड़ के वहां बड़ोदे में रहे थे । वहां पर इनके लग्न सतवाजीराव साठे की कन्या मैनाबाई साहब से हुए थे । जब आपकी अवस्था १७ वर्ष की हो गई तब तक आप बड़ोदे में ही रहे; पश्चात् आपने अपनी राजधानी धार में आने का विचार किया और बिना किसी को सूचना दिये सन् १७९७ ई० में धार को आही गये । महाराजा आनंदराव को एक दम धार में आये हुए देखकर दीवान रंगराव उरेकर को ईर्षा उत्पन्न हो गई और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसने इनके विरुद्ध जाल रचना आरम्भ किया । उसकी दिली मंशा यह थी कि महाराजा आनन्दराव बड़ोदे में ही रहें । धार में न आवें । किन्तु उसका यह विचार अयोग्य था । ऐसा कदापि नहीं हो सकता था कि राज्य के मालिक तो राज्य से बाहर रहें और दीवान अपना मन चाहा करे । उसका यह विचार अंत में पूर्ण न हो सका । महाराजा आनन्दराव धार में पधारही गये और अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करके अंत में गद्दी पर बैठ ही गये । इससे रंगराव बड़ा लज्जित हुआ और आम तोर से राज्य का दुश्मन बन गया । गत २० वर्ष से जो झगडे चले आते थे वे केवल राज्य के लिये ही थे । किन्तु इस समय जान का धोखा था; और ऐसे दिन आ गये थे कि और–और मुल्कों को जीतना तो अलग रहा अपने मुल्क को बचाना ही कठिन हो गया था । इन सब बातों की जड़ नमक-हराम दीवान रंगराव डरेकर ही था ।

जब रंगराव डरेकर, धार में फैलाई हुई जाल में फलीभूत न हुआ तो महाराजा होल्कर और सेंधिया से जा मिला और धार राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करने की सलाह देने लगा । महाराजा यशवन्तराव होल्कर ने उसके साथ बड़ी भारी मित्रता दिखलाई । और उचित आदर करके वचन दिया कि वे उसकी इच्छा पूर्ण करेंगे । इस प्रकार सन् १८०५ ई० तक उसने महाराजा होल्कर के पास रह कर धार राज्य को खूब लुटवाया और पवांर सरकार पर अनेक प्रकार की आपत्तियां डालीं । वह नराधम इतने पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ही संतुष्ट नहीं हुआ; अतः वह दक्षिण को गया और वहां जाकर बाजीराव पेशवा को समझाया कि आप महाराजा आनंद राव पवांर का दक्षिण का कुल मुल्क जब्त करलेवें। दक्षिण में इस प्रकार आग लगा कर इधर सन् १८०७ ई० में वह मालवे में आया; और दौलतराव सेंधिया को धार पर चढाई करने के लिए उभारने लगा। सेंधिया लालच के वशीभूत हो, रंगराव उरेकर के कहेन में आगये और धार राज्य से एकदम ३० लाख रुपये मांग कर कहला पहुँचाया कि मालवे में तुम्हारा राज्य जब्त करने के लिये पेशवा सरकार ने मुझे हुक्म दिया है। जो तुम ३० लाख रुपये देना स्वीकार नहीं करोगे तो मैं पेशवा का हुक्म अमल में लाऊँगा। इस पर महाराजा आनन्दराव द्वितीय ने बड़े कष्ट के साथ, फाला करके दो लाख रुपये इकट्ठे किये और सेंधिया के पास भेज दिये। बाकी रुपयों के लिये कोटा पर अधिकार करने के लिये चिट्ठी लिखदी।

रंगराव दीवान की बदनियती से धार संस्थान को जो नुक्सान पहुँचा था, वह अवर्णनीय है। ऊपर बतलाया हुआ नुक्सान केवल अंशमात्र ही है।

धार से दीवान रंगराव को जहागीर में आगर और सुन्हेल के परगने दिये गये थे वे भी सेंधिया के हवाले कर दिये गये थे। सन् १८०५ से १८०७ ई० तक सेंधिया ने महाराजा आनन्दराव का मुल्क लूटना बराबर जारी रक्खा था। हड़ौती में धार राज्य का जो मुल्क था वह जबरदस्ती छीन लिया गया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके सिवाय सेंधिया के एक सरदार जगोबापू ने धार पर दूसरी वक्त चढ़ाई करके बदनावर का परगना भी छीन लिया था और बहुत-सा नकद रुपया भी उगाहकर लेगया था। इस प्रकार सेंधिया की ओर से और भी अनेक हमले वक्तन फवक्तन होते रहे जिससे धार संस्थान बिलकुल बर्बाद हो गया था। इतना करके अन्त में सन् १८०७ ई० में सेंधिया की ओर से इन उपद्रवों का यह कारण बतलाया गया कि हमारे, जो पौने दो लाख रुपये और लेने हैं, वे देदिये जावें। यदि रुपये मिल जावेंगे तो लूटा हुआ मुल्क वापिस दे दिया जावेगा।

अपना मुल्क पुनः अपने अधिकार में लेने की गरज से आनन्दराव महाराज ने सेंधिया की आज्ञानुसार यह रकम भी किसी तरह फाला करके, उनके हवाले करदी, परन्तु जब मुल्क लौटाने की बात चली तब दुर्दैव से महाराजा आनन्दराव दूसरे देवलोक होगये। इस मौके को पाकर सेंधिया ने पैसा हजम कर लिया और मुल्क भी नहीं लौटाया।

कहते हैं कि, इस समय महाराजा आनन्दराव पर उनकी एक बहन ने विष प्रयोग किया था। उसका हेतु किसी लड़के को गोद लेकर राज्य कार्य चलाने का था। किन्तु उसकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। जब महाराजा आनन्दराव के साथियों को यह बात मालूम हुई तब उन्होंने उन सब दुष्टों को जिन पर कि ऐसा अत्याचार करने का संदेह था, जान से मार डाला।

इधर धार में इस प्रकार गड़बड़ मच रही थी उधर उत्तर में पवांर सरकार का बेरछा परगना मीरखां ने अपने स्वाधीन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करके करीमखां पिंडारे को देदिया था । इसके कुछ वर्ष बाद ही ताल और मंडावल के परगने यशवन्तराव होल्कर ने अपने अधिकार में लेकर गफूरखाँ को लश्कर के निर्वाह के लिये देदिये थे । इस प्रकार जिसको जैसा मौका मिला वही मालवे में पवांर सरकार के राज्य को लूट कर अपने अधिकार में करने लगा । इन सब संकटों का मूल कारण रंगराव दीवान ही था । इस प्रकार उसने अपने मालिक का सर्व नाश करा कर ही अपनी दुष्टात्मा को शांत किया था ।

कहते हैं कि, रंगराव उरेकर अपने काम में बड़ा निपुण था । महाराजा आनन्दराव की अनुपस्थिति में उसने राज्य का काम अच्छा चलाया था । उसका यह हेतु था कि राज्य का काम उसके ही हाथ में रहे और महाराजा आनन्दराव और उसकी माता बड़ोदे में ही रह कर अपने दिन तै करें । किन्तु उसका यह ख्याल बिल्कुल अनुचित था । जब महाराजा आनन्दराव सत्रह वर्ष के होगये तब उनके मन में यह बात आई कि अपने राज्य में जाकर राज्य का काम अपने हाथ में लेना चाहिये । उनका यह विचार ठीक था । किन्तु रंगराव दीवान को यह बात ठीक मालूम नहीं हुई । वह एक दम अपने मालिक के विरुद्ध हो गया । यदि महाराजा आनन्दराव, रंगराव दीवान की अनुमति से धार पधारते तो सम्भव है इतने कष्ट उन्हें नहीं उठाने पड़ते किन्तु युवावस्था की चंचलता और उमंग में वे बिना किसी की सम्मति लिये ही धार पधार गये । कहते हैं कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रंगराव ने इतना उपद्रव केवल इसीलिये किया था कि महाराजा आनंदराव के आने से उसकी हुकूमत शिथिल पड़ गई थी; इसी बात से नाराज होकर वह राज्य का कट्टर दुश्मन बन गया था। उसने यहां तक प्रपंच रचा था कि धार के राज्य को इस युक्ति से छिनवा लेना चाहिये कि पेशवा सरकार ने यह राज्य धार सरकार को उदर निर्वाह के लिये ही दिया था, न कि वंशपरंपरा के लिये। किन्तु उसका यह हेतु पूर्ण न हो सका। ईश्वर को यह बात स्वीकार न थी।

जब सेंधिया और पवांर सरकार के बीच मित्रता थी तब सन् १८०३ ई० में बसाई की लड़ाई में महाराजा आनंदराव सेंधिया की फौज के साथ अंग्रेजों से लड़े थे। किन्तु उनकी यह फौज, अंग्रेजी फौज के द्वारा पराजित करदी गई थी।

जिस समय धार में अशांति फैली हुई थी तब महाराजा आनंदराव पवार ने मेजर बाकर साहब के साथ लिखा पढ़ी शुरू की थी। बाकर साहब बड़ोदे में रहते थे किन्तु मालूम होता है कि उस समय मदद नहीं दी गई थी। महाराजा आनन्दराव के राज्यकाल में बहुतसा मुल्क राज्य से अलग होगया था। अलग हुए परगनों में राजपूताने के बहुत से परगने, और मालवे के आगर, सुनेल बदनावर, बेरछा, ताल और मंडावल के परगने शामिल थे। बदनावर का परगना सन् १८१९ ई. में अंग्रेज सरकार ने सेंधिया से वापिस दिलवा दिया था।

सन् १८०७ ई. में महाराजा आनन्दराव स्वर्गवासी हो गये किन्तु उनके कोई संतान नहीं थी अतः उनकी विदुषी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पत्नी श्रीमती मैना बाई साहब ने राज्य का कुल कारभार अपने हाथ में ले लिया और बड़ी बुद्धिमानी के साथ अन्त तक चलाया।

मैनाबाई साहब, गोविंदराव गायकवाड़ की स्त्री गहनाबाई की भांजी थीं। महाराजा आनन्दराव के स्वर्गवासी होने के समय आप गर्भवती थीं। पति के वियोग से तथा राज्य में सुव्यवस्था न होने के कारण आपको अनेक आपदाओं का सामना करना पड़ा था। राज्य का कोई खास हक़दार वारिस न होने के कारण कुल कार भार आप ही के सिर पर आपड़ा था किन्तु आपने धैर्य के साथ सब कष्टों को सहन किया और राज्य का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर दिया था।

जब राज्य का कोई हक़दार वारिस नहीं रहा तब मौका पाकर यशवंतराव महाराज की पासवान से पैदा हुआ लड़का मुरारीराव अपने को राज्य का हक़दार वारिस बतलाकर बलवा करने पर उतारू हो गया। उसने अपनी एक टोली बनाली थी और उपद्रव करना आरम्भ कर दिया था। इससे मैनाबाई साहब कुछ राज्य भक्त अधिकारियों की सहायता से मांडू को चली गई। समय पाकर वहां उनके रामचन्द्रराव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस शुभ समाचार को श्रवण कर धार में मैनाबाई साहब के पक्षवालों को बहुत हिम्मत बंध गई थी और धार के किले का किलेदार भी मैनाबाई साहब का सहायक हो गया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इससे हताश होकर मुरारीराव ने अब खुल्लम खुल्ला बलवा करना तो बंद कर दिया, किन्तु गुप्त रीति से जाल फैलाना शुरू किया। उसने मैनाबाई साहब को कहला पहुंचाया कि मैं अब आपकी ताबेदारी स्वीकार करने को तैयार हूं। मैं अब सदैव राजभक्त बना रहूंगा। आप प्रसन्नता पूर्वक धार चली आवें। मुरारीराव के इन बचनों पर विश्वास कर श्रीमती मैनाबाई साहब धार को चली आईं किन्तु धार आते ही उनको मुरारीराव के कपट-जाल में पड़ना पड़ा। उसने मीठे २ बचनों में कहा कि आप किले में रहने को क्यों जाती हैं? शहर में ही रहिये। आप के लिये यहीं सब प्रकार का प्रबंध हो जायगा। इससे मैनाबाई साहब शहर में ही ठहर गईं। किन्तु यहां खैरियत नहीं थी। थोड़े समय के बाद ही मुरारीराव की टोली के आदमियों ने मौका पाकर हमला कर दिया और जिस मकान में मैनाबाई साहब ठहरी हुई थीं उसे जला देने की तैयारी करने लगे। किन्तु धैर्य-शीला मैनाबाई साहब ने इतना संकट पड़ने पर भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ा; बराबर हिम्मत रक्खे रहीं। इस कठिन समय में भी उन्होंने एक किसान की स्त्री को अपने पास बुलाकर, अपने इकलौते पुत्र श्रीमंत रामचन्द्रराव पवांर को उसे देकर कह दिया कि इस राजपुत्र "रामचन्द्रराव" को तुम खैरियत के साथ किले में पहुंचा दो। महारानी की आज्ञापाकर उस किसान की स्त्री ने रात्रि के समय अवसर देखकर राजपुत्र को किले में पहुंचा दिया। मैनाबाई साहब ने किलेदार को भी कहला पहुंचाया कि आखिर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दम तक राजपुत्र की रक्षा करना । मेरा क्या होगा? इसकी कोई चिन्ता नहीं है । जब राजपुत्र रामचन्द्रराव पवांर आनन्दपूर्वक किले में पहुंच गये और यह खबर जब मुरारीराव ने सुनी; तब वह मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ और कहने लगा कि मैं इस पवांर वंशका सर्व नाश करके ही छोड़ूंगा । उस समय मैनाबाई साहब ने शांतता पूर्वक उत्तर दिया कि "जैसा तेरे मन में आवे वैसा कर; मुझे कुछ भी भय नहीं है । राजपुत्र तो तेरे कब्जे से निकल ही गया है । तू याद रख, वही पवांर वंश की गद्दी का असली मालिक है । मुझे अपनी जानकी कुछ भी परवाह नहीं है" ।

धन्य है मैनाबाई साहब की वीरता को ! इतना होने पर भी उन दुष्टों ने अत्याचार करना बंद नहीं किया । अंत में ऐसा ही हुआ कि जिस मकान में मैनाबाई साहब ठहरी हुई थीं उसमें उन पापियों ने आग लगादी और मैनाबाई साहब से कहा कि आप मकान से बाहर हो जावें । किन्तु उस समय मैनाबाई साहब ने कहा कि मकान के अन्दर रहने में ही मेरी इज्जत है । मैं मकान के बाहर कभी नहीं जाऊंगी । यदि ईश्वर का ऐसा ही करना होगा तो मैं अपने मन में यही समझूंगी कि उस समय अपने पति के साथ मैं सती नहीं हुई थी सो अब मुझे सती होना पड़ा है । लेकिन तुम लोग याद रक्खो ! मैं मकान के बाहर कभी नहीं जाऊंगी । इस उत्तर को सुन कर मुरारीराव बड़ा लज्जित हुआ और चुपचाप चला गया ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अन्त में आग बुझादी गई और मैनाबाई साहब इस संकट से बचगई।

किन्तु यह बात भी सत्य है कि परमात्मा का जिस पर कोप होता है उस पर आफत पर आफत आती है। राजपुत्र रामचन्द्रराव पवांर को किले के अन्दर सुरक्षित दशा में देखकर मुरारीराव किला फतह करने का यत्न करने लगा। मैनाबाई साहब ने इसके पहले ही किलेदार को कहला पहुँचाया था कि मेरी जो दशा होगी उस पर चिंता न करके तुम आखिर दम तक राजपुत्र की रक्षा करना अतः अनेक प्रयत्न करने पर भी मुरारीराव किला फतह करने में कामयाब नहीं हुआ। मुरारीराव धार में जिस समय इस प्रकार गड़बड़ कर रहा था; तब यह बात सुनने में आई कि मैनाबाई साहब की सहायता को गुजरात से सेना आरही है। फिर क्या था? मुरारीराव इस खबर को पाकर भाग गया।

मैनाबाई साहब बड़ी चतुर थीं। अनेक आपत्तियां आने पर भी राज्य का काम बड़ी बुद्धिमानी के साथ, राजभक्त अधिकारियों की सहायता से, चलाती थीं। धार राज्य को नष्ट भ्रष्ट करने की इच्छा रखने वालों में सेंधिया ही मुख्य थे। किन्तु ऐसा होने पर भी मैनाबाई साहब ने, राजगद्दी के हकदार मालिक का नाश न होने देने के लिये, सेंधिया से भी सहायता के लिये प्रार्थना की थी। इसके सिवाय इन्होंने बड़ोदे के रजिडेंट के मार्फत अंग्रेज सरकार से भी प्रार्थना की थी कि आप मध्यस्थ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होकर धार राज्य का संरक्षण करें । किन्तु उस समय किसी ने भी सहायता नहीं दी थी । अन्त में मैनाबाई साहब के साहस को देख, आपके गुजरात के सम्बन्धियों ने, सखाराम चिमनाजी को फौज देकर, धार राज्य की रक्षा के लिये भेजा था। सखाराम चिमनाजी बडोदे के कारभारी सीताराम पंत के भाई थे। श्रीमती मैनाबाई साहब की मौसी—बड़ोदे की रानी साहब-गहनाबाई ने; सखाराम चिमनाजी को धार राज्य की रक्षा के लिये भिजवाने में विशेष प्रयत्न किया था ।

जो श्री गायकवाड़ सरकार ने अपनी पत्नी गहनाबाई साहब के कहने से धार राज्य की रक्षा के लिये सेना भेजी थी और उनकी दिली मन्शा भी यही थी कि धार राज्य कायम रहे । नष्ट न होने पावे । किन्तु साथ ही साथ उनका यह भी स्वार्थ था कि शांति होने पर राज्य अपने अधिकार में रहे । जो लोग मैनाबाई साहब की सहायता को भेजे गये थे उनको भी दृढ़ निश्चय था कि राज्य के शत्रुओं को भगा कर हम उस पर अपना अधिकार जमा लेंगे। राज्य पर अधिकार जमाने की बात सब को सरल मालूम होती थी किन्तु उनका यह विचार पूर्ण न होने पाया । धार पहुँच कर सखाराम पंत मर गये और उनकी जगह बापू रघुनाथ नियुक्त हुए । गायकवाड़ सरकार का हेतु सिद्ध करने में यद्यपि बापू रघुनाथ ने भी कोशिश की थी किन्तु उनका आन्तरिक विचार संस्थान को कायम रखने का ही था। उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी के साथ राज्य के कुल झगड़ों को मिटा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर शांति स्थापित कर दी थी। इस कार्य में मैनाबाई साहब के धैर्य और साहस से बापू रघुनाथ को बहुत सहायता मिली थी।

पहले की अपेक्षा इस समय जो भी धार का राज्य कम हो गया था किन्तु धीरे धीरे राज्य क्रांति का वह दिन भी आ गया कि हमेशा के लिये चिरशांति और निर्भयता प्राप्त होगई।

जब धार में अशांति फैली हुई थी और चारों तरफ झगड़े हो रहे थे तब धार का खजाना बिलकुल खाली हो गया था। इससे लाचार होकर मैनाबाई साहब और उनकी सहायता को आये हुए गुजरात के लोगों को, अपनी सेना के निर्वाह के लिये, आस पास के राजपूत सरदारों से चौथ वसूल करनी पड़ती थी और अपना काम चलाना पड़ता था। ऐसा करने का केवल यही कारण था कि, चारों ओर झगड़े फैले हुए थे और वसूल-वसूलात बराबर नहीं होता था। इतना होने पर भी मैनाबाई साहब की तो यही आज्ञा थी कि लूट मार करने में लोगों को किसी प्रकार का कष्ट न दिया जावे। मैनाबाई साहब इस बात को बिलकुल नहीं चाहती थीं कि लूट मार की जाय। किन्तु समय ही ऐसा आगया था; अतः ऐसा करना पड़ता था। जब मुरारीराव दिक्क होकर चला गया तब यह काम भी बंद कर दिया गया था। मैनाबाई साहब की बुद्धि की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। जहां तक बड़ोदे से मदद नहीं आई थी वहां तक खुद मैनाबाई साहब रियासत का इंतिजाम करती रही थीं। यह उन्हीं का प्रताप है कि धार राज्य में अभी तक शांति बनी हुई है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

६—रामचन्द्रराव प्रथम

[सन् १८०७ से १८१० ई० तक]

श्रीमंत रामचन्द्रराव मांडू में उत्पन्न हुए थे। आपका जन्म श्रीमती मैनाबाई साहब की रत्नकुक्ष से हुआ था। रामचन्द्रराव केवल ढाई वर्ष तक अर्थात् सन् १८०७ से १८१० ई. तक ही जीवित रहे थे। इनके परलोकवासी होने पर, श्रीमती मैनाबाई साहब को पुत्र वियोग का असह्य दुःख सहन करना पड़ा था। किन्तु धन्य है! इतने पर भी उन्होंने अपने धीरज को नहीं छोड़ा। उन्होंने होल्कर और सेंधिया की सम्मति से सन् १८१० ई० में अपनी बहन टाकूबाई सिंधे के पुत्र लक्ष्मणराव को गोद लेकर राज्य के मालिक बना दिये थे। मैनाबाई साहब ने अपने आसपास के राजपूत सरदारों से भी इस बात में सलाह लेली थी। गोद लेकर मैनाबाई साहब ने इनका नाम भी रामचन्द्रराव रक्खा था। ये रामचन्द्रराव प्रथम के ठीक बराबर उम्र के थे।

७—रामचन्द्र राव द्वितीय।

[सन् १८१० से १८३३ ई० तक]

इनके समय में धार राज्य बहुत ही छोटा होगया था। यहां तक कि धार और उसके आसपास के गांवों के सिवाय इनके कब्जे में कुछ भी नहीं था। रियासत की कुल उत्पन्न केवल ३५०००) रु० ही रह गई थी। इतने पर भी सेंधिया होल्कर और पिंढारे लोग बराबर हमले करते रहे थे। इस समय मौका देख कर मुजफ्फर नामक गुजरात के एक मकरानी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सरदार ने कुक्शी का परगना भी धार सरकार से छीन लिया था और आप मालिक बन गया था। इसने अपना डेरा, गुजरात और धार राज्य के बीच अलीराजपुर में डाला था। इसके साथ और भी बहुत से मकरानी लोग थे। यह धार राज्य और आसपास के और भी दूसरे राज्यों को भयरूप होगया था। यह लूटमार करके ही अपना गुजारा करता था। सखाराम पंत के साथ जो सेना गुजरात से आई थी; उसमें से बहुतसी सेना काम होजाने पर वापिस गुजरात को चली गयी थी। अवसर पाकर इस समय फिर भी सेंधिया की फौज धार में आ पहुँची और जबरदस्ती कर वसूल करके लेगयी। इसी प्रकार होल्कर की फौज और पिंडारे लोगों के अलग अलग सरदार वक्तन फवक्तन धार पर चढ़ाई करते रहते थे। इस समय धार का राज्य बहुत मुसीबतों में फंस गया था। दैवयोग से सन् १८१७ ई० में अंग्रेज सरकार की फौज मालवे में आगई। किन्तु राज्य के कामों में इस समय वह कुछ भी दखल नहीं देती थी। धार राज्य का खर्च इस समय लूट-मार से चलता था। बापू रघुनाथ दीवान और मैनाबाई साहब की फौज का जनरल, आठ नौ हजार फौज के साथ धार के आस पास के गांवों में जाकर, पैसा वसूल कर लाता था और इसी से खर्च वगैरा चलता रहता था। कभी २ ये लोग डूंगरपुर से निमाड़ तक भी कर वसूल करने जाया करते थे। सन् १८१७ ई० तक अंग्रेजी फौज इन कामों में कुछ भी दखल नहीं देती थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किन्तु इस सन् के बाद राज्य के कामों में हाथ डालना शुरू किया और सुलहनामे के लिए हुक्म छोडे । १० जनवरी सन् १८१९ ई० में हमारे धार के महाराजा श्रीमंत रामचन्द्रराव पवांर और अंग्रेज सरकार के बीच में सुलहनामा लिखा गया था इस सुलहनामे के मुताबिक धार की रियासत अंग्रेज सरकार ने अपनी रक्षा में करली है । अंग्रेज सरकार की रक्षा में जाने से धार राज्य को अनेक लाभ हुए हैं । धार के महाराजा साहब भी सुलहनामे की कुल शर्तों का पालन बराबर करते आरहे हैं । मालवे का प्रबंध सर जॉन मालकम साहब ने किया था ।

जब अंगरेज सरकार और धार सरकार के बीच सुलहनामा हो चुका तब मौका पाकर धार सरकार ने दौलतराव सेंधिया को याद दिलाई कि "बदनावर का परगना, जिसे कि आपने जबरदस्ती ले लिया है; उसे अभी तक नहीं लौटाया । इसके सिवाय उसको लौटाने का वचन देकर बदले में लिया हुआ पैसा भी आप हजम कर गये हैं । आपने उस परगने को लौटाने के बदले में ही पैसा मांगा था और वह हम दे भी चुके हैं । फिर हमें वह परगना क्यों नहीं दिया जाता है ? देखा जाय तो ऐसा करना महा अन्याय है " इसके सिवाय उनसे यह भी कहा गया था कि " आप अपनी मदद से बेरछा परगना भी करीमखाँ पिंढारे से पीछा दिलवा दीजिये क्योंकि आपकी सलाह से ही उसने उसे छीना है । यदि इन बातों पर आप ध्यान नहीं देंगे तो हम अंगेरज सरकार से मदद मांगेंगे, जोकि इस समय सारे हिन्दुस्तान के झगड़ों का फैसला कर रहे हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

येही इस समय मध्यस्थ हुए हैं। हमें लाचार हो, इनके पास इन्साफ के लिये जाना पड़ेगा" तब तो ग्वालियर सरकार की आँखें खुल गई और सोचा कि यदि धार सरकार अंगरेजों से मदद मांगेंगे तो ठीक नहीं होगा। वे चाहते थे कि यह फर्याद अंगरेज सरकार के पास न जावे इस कारण दौलतराव सेंधिया ने बदनावर परगना धार सरकार को वापिस दे दिया और इकरार किया कि बेरछा परगना करीमखाँ से दिलवाने में जरूर मदद करेंगे। किन्तु बेरछा परगना पिंढारों के हाथ में था और अंगरेज सरकार और पिंढारों के बीच लड़ाई होही रही थी। इसमें सेंधिया की मदद के पहले ही अंगरेजी फौज ने उसे अपने कब्जे में कर लिया और धार सरकार को दे दिया; इस कारण सेंधिया मदद देने के कष्ट से बच गये। जब से सन्धि हुई तब से धार संस्थान का संरक्षण अंगरेज सरकार ने अच्छी तरह से किया है। उन्होंने धार के बिखरे हुए राज्य को पुनः सुव्यवस्थित कर दिया है। उनकी मदद से धार में सब प्रकार अमन चैन है। अंगरेज सरकार ने श्रीमंत रामचन्द्रराव पवांर को बदनावर और बेरछा के परगनों के सिवाय कुक्सी, नालछा और आस पास के कुछ और परगने भी जो राज्य से अलग हो गये थे, पुनः दिलवा दिये थे। अतः धार राज्य को अंग्रेज सरकार की फौज खर्च का २५००००रु. कर्ज हो गया था। इसकी अदाई में बेरछा परगना पांच बरस के लिये, अंगरेज सरकार को दे दिया गया था। श्रीयुत बापू रघुनाथ सरकार की ओर से दीवान मुकर्रर किये गये थे। उन्होंने राज्य का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया था। इस समय राज्य की आमदनी भी ३५००० रु. सालाना से बढ़कर २६७००० रु. सालाना तक हो गई थी।

सन्धि होने के पश्चात् श्रीमंत, रामचन्द्रराव पवांर निर्भय होकर राज्य करने लगे थे। श्रीमती मैनाबाई साहब पवांर भी कभी कभी राज्य कार्य्य देखती रहती थीं और गहन विषयों में अपनी सलाह दिया करती थीं। मैनाबाई साहब जहां तक जीवित रहीं; अंग्रेज सरकार की मुक्तकंठ से प्रशंसा करती रहीं और भूरि भूरि उपकार मानती रही थीं।

सन् १८२१ ई० में श्रीमंत रामचन्द्रराव पवांर की शादी १२ वर्ष की उम्र में दौलतराव सेंधिया की नातिन (पोती) अन्नपूर्णाबाई से हुई। इसी साल एक तहनामा लिखा गया; जिसके द्वारा बेरछा का परगना और अलीराजपुर की नालबंदी अंग्रेज सरकार को दी गई। इस के एवज में महाराजा साहब को १,१०,०००) रु० नकद देने का ठहराव हुआ। सन् १८२२ ई० में मुरारीराव के लड़के अच्युतराव ने मौका पाकर, अपने पिता की ओर से बदला लेने की गरज से, राज्य की शांति में फिर विघ्न डाला और अपने को रियासत की गद्दी का मालिक साबित करने लगा। भील लोगों की मदद से उस ने धार पर कई हमले भी किये। अंत में बात यहां तक बढ़ गई कि अंग्रेज सरकार को मजबूर होकर इस काम में हाथ डालना पड़ा। फल यह हुआ कि अच्युतराव को अपना गद्दी का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दावा वापिस लेना पड़ा; और उसको जीवन पर्यंत के लिये २००) रु० माहवार पेन्शन नियत करदी। अक्टोबर सन् १८३३ ई० में महाराजा रामचन्द्रराव पवांर स्वर्गवासी होगये। इनके संतान केवल एक कन्या ही थी इससे श्रीमंत रामचन्द्रराव की पत्नी महारानी अन्नपूर्णाबाई ने मरठन (दक्षिण) से श्रीमंत यशवंतराव के पुत्र मल्हारराव को गोद ले लिया और यशवंतराव दूसरे के नाम से गद्दी पर बैठाया। इस समय उनकी उम्र केवल १० वर्ष की थी। यह बात देवास छोटी पांती के राजा आनन्दराव की सलाह से हुई थी; क्योंकि मरठन के यशवंतराव इनके भतीजे थे। हैबतराव पवांर जिनको कि देवास के महाराजा आनन्दराव पवांर ने गोद लेकर राज्य के मालिक बनाये थे, इन्हीं यशवंतराव मरठन निवासी के छोटे भाई थे। इससे देवास छोटी पांती और धार में फिर पास का सम्बन्ध होगया था।

८—यशवंतराव द्वितीय।

[सन् १८३३ से १८५७ ई० तक]

महाराजा यशवंतराव दत्तक तो सन् १८३३ ई० में ही ले लिये गये थे; किन्तु गद्दी पर वस्तुतः सन् १८३४ ई० के अप्रेल मास में बैठे। इनके प्रसिद्ध कारभारी श्रीयुत बापू रघुनाथ सन् १८३६ ई० में स्वर्गवासी हो गये। ये बड़े ही राजभक्त और कार्यकुशल थे। इन्होंने मृत्युकाल तक रियासत की नौकरी करके बहुत अच्छा प्रबन्ध रक्खा था। इनके स्थान पर इनके सुयोग्य पुत्र रामचन्द्रराव उर्फ बाबा साहब दीवान नियत किये गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् १८३७ ई० में महाराजा यशवंतराव ने राज्य का कारभार अपने हाथ में लिया। इन्होंने रियासत की पैमायश करवा के बहुत से ऐसे २ काम किये जिससे रियासत की आमदनी खूब बढ़ने लगी। महाराजा यशवंतराव बड़े दयालु, दानवीर और विद्याप्रेमी राजा थे। आप कालिका के बड़े ही भक्त थे। वर्तमान समय में शहर के पश्चिम की ओर सरदारपुर के रास्ते पहाड़ी पर जो कालिका का मंदिर है वह इन्हीं यशवंतराव के हाथ से बनवाया हुआ है। सन् १८५७ ई. में आप हैजे की बीमारी से स्वर्गवासी हो गये। आपके कोई संतान नहीं थी इससे मृत्युगत होने के पूर्व ही आपने अपने विमाता भाई अनिरुद्धराव पवांर को गोद ले लिया था। श्रीमंत अनिरुद्धराव, आनन्दराव तीसरे के नाम से गद्दी पर बैठे। उस समय आपकी उम्र १३ वर्ष की थी।

९—आनन्दराव तृतीय।

[सन् १८५७ से १८९८ ई० तक]

सन् १८५७ ई. भारत के इतिहास में बहुत ही प्रसिद्ध है। इसी साल प्रायः सम्पूर्ण भारतवर्ष में बलवा हुआ था। श्रीमंत महाराजा आनन्दराव इसी वर्ष गद्दी पर बैठे थे। आपके गद्दी पर बैठने के कुछ समय बाद ही धार में बदमाशों ने बलवा करना आरम्भ कर दिया। आपकी अवस्था उस समय बहुत ही कम थी इस कारण आप बलवे को नहीं दबा सके। इससे रियासत भर में हलचल मच गई थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उत्तर हिन्दुस्तान में जो बलवा शुरू हुआ था उसकी आग चारों ओर फैल गई थी। इस समय मौका पाकर धार राज्य की सेना के मकरानी और पठान सिपाही भी बदल गये और भोपावर ऐजंसी को लूट कर धार में आघुसे। इस खबर को पाकर, बलवाइयों को दंड देने के लिये, जनरल स्टुअर्ट साहब की आधीनी में एक सेना ता. २५ अक्टोबर सन् १८५७ ई० को मऊ से धार आई और किले को घेर लिया। बलवाई लोग लूटमार करके किले में घुस गये थे। अंग्रेजी फौज छः दिन तक धार में पड़ी रही। अंत में भेद पाकर किले की दीवार का पश्चिमी भाग तोड़ डाला और रास्ता बना लिया। जब बलवा-इयोंने ब्रिटिश तोपों की मार से किले की दीवार गिरते हुए देखा तब वे बड़े भयभीत हुए और यह जानकर कि अब बचाव होना कठिन है रात को चुपचाप गुप्त मार्ग से भाग गये। इस प्रकार धार का किला अंग्रेजी सेना के हाथ में आगया और रियासत पर अंग्रेज सरकार ने अपना कब्जा कर लिया।

किला फतह करने के साथ ही रियासत का कुल काम अंग्रेज सरकार के हाथ में चला गया था और धार राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया था। बलवा करने में धार के महाराजा साहब की कुछ भी मदद नहीं थी। आप बिलकुल निर्दोष थे। अतः अपना राज्य पुनः प्राप्त करने की इच्छा से महाराजा साहब ने प्रार्थनापत्र पारलियामेन्ट में भेजा। वहां उस पर विचार हुआ और महाराजा साहब बिलकुल निर्दोष ठहरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अतः १ मई सन् १८६० ई० में रियासत का कुल काम पीछा महाराजा साहब को दे दिया गया। इस समय बेरछा परगना नहीं दिया गया था। इसमें यह कारण बतलाया गया कि भोपाल की बेगम सिकंदर ने इस बलवे को दबाने में अंग्रेज सरकार को सहायता दी थी इसलिये उसके इनाम में उनको वह परगना दे दिया गया है। श्रीमंत आनन्दराव महाराज उस समय नाबालिग थे अतः रियासत तो उनके सुपुर्द करदी गई थी किन्तु उस पर देखरेख अंग्रेज सरकार की ही बनी रही थी। १ अक्टोबर सन् १८६४ ई० में महाराजा साहब को होशियार और राज्य कारभार में दक्ष देखकर माननीय गवर्नर जनरल सर जॉन लारेन्स साहब ने रियासत के कुल अधिकार आपको दे दिये और रियासत आपके स्वाधीन करदी।

श्रीमंत आनन्दराव महाराजा के राज्य में रियासत के अनेक कामों में बहुत बड़ा सुधार हुआ था। रियासत की आमदनी पांचलाख रुपये से बढ़कर नौलाख रुपये तक होगई थी सन् १८६४ ई० में अंग्रेज सरकार की ओर से आप को एक सनद मिली थी जिसके द्वारा रियासत के पूर्ण अधिकार आपको मिल गये। आपने रियासत की व्यवस्था बहुत अच्छी रक्खी थी। प्रजा आपसे बड़ी ही प्रसन्न थी सब ओर से आपको मान्य भी खूब मिला था। सन् १८७७ ई० में महाराणी व्हिक्टोरिया को पचास वर्ष तक, निर्विघ्नतापूर्वक राज्य करने की खुशी में, दिल्ली में एक बड़ाभारी दरबार किया गया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। उसमें श्रीमंत आनन्दराव पवांर भी पधारे थे। आपकी सरलता एवं गुण ग्राहकता पर प्रसन्न होकर उस समय के वाइसराय (लाट साहब) ने आपको महाराजा का खिताब दिया था और के. सी. एस. आई. (K. C. S. I.) की महान् पदवी से विभूषित भी किया था। इसी प्रकार सन् १८८३ ई० में अंग्रेज सरकार की ओर से आप के पास पत्र आया था जिस में आप के लिये ब्रिटिश राज्य के पूर्णतया साथी होने के शुभ समाचार लिखे हुए थे। सन् १८८६ ई० में आपको ग्यारंटेड ठाकुर लोगों के कुल मुकद्दमात धार दरबार में चलाने के अधिकार मिले थे और कुल ग्यारंटेड ठाकुर धार राज्य के अधिकार में कर दिये गये थे। वस्तुतः इस समय में ही धार दरबार को अपने सम्पूर्ण राज्य पर, शांति पूर्वक शासन करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ था। यह बात सन्१९०३ और १९०४ ई० में और भी पुष्ठ करदी गई है।

श्रीमंत आनन्दराव महाराजा बहुत अच्छे राज्यकर्त्ता पुरुष थे। अपनी प्रजाको प्रसन्न रखना आप अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे। सन् १८८७ ई० में आपने, रियासत के बाहर जानेवाले माल पर जो महसूल था, उसे उठा दिया था। दया भी आप में बहुत थी। दान देने में आपका नाम प्रसिद्ध था। राज्य के सुधार के भी आपने अनेक काम किये थे। आपके विषय में लोग कहा करते थे कि "आप कदके तो छोटे हैं किन्तु दिल के बड़े हैं" वास्तव में था भी ऐसा ही। आप बड़े दानवीर और सज्जनहृदय पुरुष थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१५ जुलाई सन् १८९८ ई० में श्रीमंत महाराजा आनन्दराव साहब पवांर स्वर्गवासी हो गये। मृत्युगत होने के सात वर्ष पूर्व ही आपके शरीर में असाध्यपीड़ा उत्पन्न हो गई थी। तभी से आपने अपने भतीजे श्रीमंत भागूर्जीराव साहब पवांरको दत्तक ले लिया था। आनन्दराव महाराजा के शरीरपात होने पर श्रीमंत भागूजीराव पवांर उदाजीराव पवांर के नाम से गद्दी पर बैठे।

१०—उदाजीराव द्वितीय।

[सन् १८९८ ई० से सन् १९२६ ई० तक]

श्रीमंत महाराजा सर उदाजीराव पवांर साहब बहादुर के. सी. एस्. आई., के. सी व्ही. ओ., के. बी. ई. का जन्म ता. ३० सितम्बर सन् १८८६ ई० में हुआ था। आप सम्भाजीराव उर्फ आबासाहब पवांर के पुत्र थे। स्वर्गवासी महाराजा आनन्दराव तीसरे के आबासाहब विमाता भाई थे। सन् १८९८ ई० में, बारह वर्ष की उम्र में, श्रीमंत महाराजा साहब उदाजीराव पवांर गद्दी पर बैठे। गद्दीनशीन होने के थोड़े दिन बाद ही अंग्रेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये आप डेली कालेज इन्दौर पधारे और सन् १९०३ ई० तक वहां रहकर विद्याभ्यास करते रहे। आपने अँग्रेजी, मराठी, हिन्दी और उर्दू की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

सन् १९०३ ई० में स्वर्गवासी सम्राट एडवर्ड सप्तम के सिंहासनारूढ़ होने की खुशी में माननीय लार्ड करजन महोदय ने दिल्ली में जो दरबार किया था उसमें आप योग्य इज्जत के साथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुलाये गये थे। उस समय के दिल्ली दरबार में सम्मिलित होने के चिरस्मरण में आपको सोने का पदक (बिल्ला) प्रदान किया गया था। सन् १९०५ ई० में राजराजेश्वर श्रीमान पंचम जॉर्ज महोदय प्रिंस आफ् वेल्स की हैसियत में सपत्निक भारतयात्रा को पधारे थे। उस समय आपके आगमन की खुशी में इन्दौर में एक बड़ा दरबार किया गया था। उस दरबार में भी महाराजा साहब उदाजीराव पवांर साम्मिलित हुए थे।

आपकी नाबालगी की हालत में रियासत का कुल राज्यकारभार अंग्रेज सरकार की ओर से एक सुपरिन्टेन्डेन्ट की निगरानी में होता रहा था। किन्तु ता. ६ दिसम्बर सन् १९०७ ई० में अंग्रेज सरकार ने आपको राज्यकारभार के योग्य जानकर रियासत के कुल अधिकार दे दिये थे। अधिकार मिलने के दो महीने बाद ही आपके लग्न सावंतवाड़ी के महाराजा साहब की दयालु राजकुमारी श्रीमती लक्ष्मीबाई साहब के साथ हुए थे। श्रीमती माता महाराणी साहबा भी हमारे महाराजा साहब की तरह बुद्धिमती और दयालु हृदय हैं।

महाराणी साहबा की दयालुता का परिचय अंग्रेज सरकार को भी अच्छी तरह मिल गया है। यूरोपीय महासमर के समय भारतवासियों की रक्षा के लिये, अंग्रेज सरकार की सेवा में आपने विपुल द्रव्य भेजा था। आपकी इस दयलुता पर प्रसन्न हो ३ जून सन् १९१६ ई० को, भारत सम्राट् श्री पंचम जॉर्ज महोदय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की वर्ष गांठपर, अंग्रेज सरकार ने आपको "कैसरे हिन्द" का बहु मानास्पद स्वर्णपदक प्रदान किया था ।

श्रीमंत महाराजा साहब ने आपकी कुशाग्र बुद्धि देखकर सन् १९१५ ई० में खासगी का कुल काम आपके ही सुपुर्द कर दिया था । श्रीमती महाराणी साहबा को अपनी प्रजा की भलाई का बड़ा ही ख्याल है । राज्य की सम्पूर्ण प्रजा आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करती है ।

श्रीमंत महाराजा साहब ने धार राज्य के काश्तकारों की भलाई के लिये सन् १९०९ ई० में रियासत भर में पैमायश करवाई थी और उन्हें बीस २ वर्ष के पक्के पट्टे दे दिये गये हैं । जिस प्रकार महाराजा साहब को अपनी प्रजा पर प्रेम था उसी प्रकार आप अपने पास के सरदारों को भी शुद्ध अंतः करण से चाहते थे । पहले सरदार लोग प्रायः कर्ज के बोझ से लदे रहते थे; उनकी यह दशा देखकर आपने कोर्ट ऑफ वार्ड्स नामक एक कचहरी स्थापित की थी । इस प्रकार उनको कर्ज के बोझसे हल्का करके अपने राज्य के अच्छे २ कामों पर नियुक्त किया था । इसके सिवाय धार शहर में आपने सरदारों के बालकों के निमित्त एक बोर्डिंग हौस भी स्थापित किया था ।

भविष्य में राज्यकारभार और भी अच्छी तरह चले इसके लिये आपने ५ मई सन् १९११ ई० में अपने यहां कौन्सिल स्थापित की थी । श्रीमंत महाराजा साहब खुद इसके प्रेसिडेन्ट हुए थे । और अपने सच्चे सलाहकार श्रीमान् दीवान साहब को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपने व्हाइसप्रेसिडेन्ट बनाया था। इस कौन्सिल में प्रत्येक विभाग के योग्य अधिकारी चुनकर सात मेम्बर नियत किये गये थे। सर्वसम्मति से कौन्सिल के द्वारा कार्य्य संचालन होता था। राज्यकार्य्य सुधार में श्रीमंत महाराजा साहब को धार राज्य के भूतपूर्व दीवान दीवानबहादुर श्रीछाजूरामजी महोदय (सी.आई.ई.) की बड़ी सहायता मिली थी। सन् १९१४ ई० में न्याय-मूर्ति रायसाहब प्रमथनाथ बैनरजी महोदय दीवान बनाये गये। आपने भी कार्य्य उत्तमता से चलाया था। सन् १९२० ई. में रावबहादुर श्रीखेडरावजी नाडकर महोदय नियत किये गये। श्रीमंत महाराजा साहब के आप मुख्य विश्वास पात्रों में से एक हैं। आपके द्वारा अब तक राज्य की सेवा उत्तमता से हो रही है।

श्रीमंत महाराजा साहब १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० को, दिल्ली में सम्राट् पंचम जार्ज के राज्यारोहण के उपलक्ष में जो दरबार हुआ था, उस में बड़े मान के साथ बुलाये गये थे। आपकी बुद्धिमत्ता एवं राज्यकार्य्य दक्षता पर प्रसन्न होकर भारत-सरकार ने आपको वहां के. सी. एस्. आई. (K. C. S. I.) की बहुमानास्पद पदवी से सुशोभित किया था।

यूरोपीय महासमर के समय, जो सन् १९१४ से १९१८ ई० तक हुआ था, श्रीमंत महाराजा साहब ने ब्रिटिश राज्य की सहायता अनेक प्रकार से की थी। समय समय पर बीमार और घायल सिपाहियों को महू में आपने खाना और कपड़ा भी दिया था। युद्ध के समय में सिपाहियों की अनेक प्रकार से सहायता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करके आपने ब्रिटिश गव्हर्नमेंट की खूब मदद की थी। युद्ध सम्बन्धी अनेक फंडों में आपने विपुल द्रव्य दिया था। आपकी राजभक्त प्रजा ने भी वॉरलोन आदि में लगभग एक लाख रुपये भरे थे। मतलब यह कि धार राज्य ने युद्ध के समय ब्रिटिश गवर्नमेंट की हर प्रकार से सहायता की थी।

दिसम्बर सन् १९१७ ई० में श्रीमंत महाराजा साहब को गवर्नमेंट ऑफ इंडिया से के. बी. ई. की उपाधि मिली थी। उसी साल धार में लॉटरी का जल्सा किया गया था।

जनवरी सन् १९१८ ई० में भारत सरकार की ओर से धार के राजा साहब को वंशपरंपरा के लिये "महाराजा" की बहुमानास्पद उपाधि प्राप्त हुई है। इसका श्रेय श्रीमंत महाराजा सर उदाजीराव पवांर को ही है। उन्हीं के सद्‌गुणों से इस वंश को यह मान प्राप्त हुआ है।

सन् १९२१ ई० में प्रिन्स ऑफ वेल्स भारत यात्रा को पधारे थे। उस समय आप उनकी पेशवाई को बम्बई गये थे। इसी प्रकार पूने में भी आप उनके साथ "शिवाजी मेमोरियल" की स्थापना के समय साथ थे तथा इन्दौर में जो दरबार हुआ था उसमें आप प्रिंस ऑफ वेल्स की मोटर के साथ ही साथ मोटर में दरबार समारंभ में पधारे थे। सन् १९२२ ई० को जब कि प्रिंस ऑफ वेल्स करांची से वापिस इंगलैंड जाने को विदा हुए तब भी आप उनसे मिलने करांची पधारे थे। उस समय आपको बड़े आदर के साथ के. सी. व्ही. ओ. की उपाधि दी

Ac. Gunratnasuri MS　　　　Jin Gun Aradhak Trust

गई थी और उसके कुछ दिन बाद ही आप शाही फौज के "मेजर" के सम्मान से सम्मानित किये गये थे। मार्च सन् १९२५ ई० में आप लेफ्टनेंट कर्नल के बहुमानास्पद पदसे विभूषित किये गये थे।

श्रीमंत महाराजा साहब को अपनी प्रजा की भलाई का बहुत ही ध्यान था। आपने गांव गांव में पंचायत बोर्ड कायम करके प्रजा को सुलभ न्याय का सुभीता कर दिया था। शादी और गमी आदि जातीय रिवाजों पर खर्च के नियम बनवाकर आपने व्यर्थ-व्यय के बोझ से प्रजा को हलका कर दिया था। आपने मराठा कान्फ-रेन्स की बारहवीं बैठक धार में बुलवा कर मराठा जाति की उन्नति में खूब भाग लिया था। आप अपने जाति बन्धुओं को आगे बढाने का सतत प्रयत्न करते रहते थे। इस कान्फरेन्स के प्रेसिडेन्ट स्वर्गीय श्रीमंत महाराजा श्री माधवराव सेंधिया, ग्वालियर नरेश थे। इस सभा में सम्मिलित होने वाले महमानों का राज्य की ओर से आतिथ्य किया गया था।

श्रीमंत महाराजा साहब बहादुर को जिस प्रकार राज्य के कामों को देखने का शौक था। उसी प्रकार आपको पोलो, क्रिकेट, घुड़दौड़ आदि खेलों का भी बड़ा शौक था। घोड़े की सवारी आप बहुत पसंद करते थे। शिकार खेलने में भी आप प्रवीण थे। किन्तु राज्य के कामों को आप इन सब से बढकर समझते थे।

सन् १९२४-२५ में श्रीमंत महाराजा सर उदाजीराव पवांर क्षयरोग के कारण अस्वस्थ रहने लगे। आपने इस रोग के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुशल डाक्टरों, हकीमों और वैद्यों को बुलाकर इलाज भी करवाया किन्तु रोग बढ़ता ही चला गया । अन्त में ता. २७ मई सन् १९२६ ई० को आप हवा बदलने सोलन (शिमला) गये। वहां आपका इलाज अच्छी तरह हो ही रहा था कि आपको निमोनिया हो गया और ता. ३० जुलाई सन् १९२६ ई० को प्रातः काल पांच बजे आपका स्वर्गवास हो गया। इस खबर के फैलते ही राज्य भर में शोक छा गया। ता. १ अगस्ट को आपका शव सोलन से धार लाया गया और स्मशान यात्रा की अन्तिम सवारी निकाली गई । सवारी के साथ देवास दोनों पांती के महाराजा साहब, सांवतवाड़ी के महाराजा साहब, मानपुर के पोलिटीकल एजन्ट साहब, रतलाम राज्य के दीवान साहब और धार राज्य के ठिकानों के कुल ठाकुर साहबान तथा सरदार, मानकरी, आफीसर्स आदि सभी गण्य-मान्य पुरुष साथ थे। प्रजा के शोक का कोई पारावार नहीं था । अश्रुपात करती हुई कोई पच्चीस हज़ार प्रजा आपको अन्तिम प्रणाम करने के लिए एकत्रित हुई थी ।

महाराजा सर उदाजीराव पवांर गरीब प्रजा की पुकार सुनने को सदा तैयार रहते थे । आपका अन्तःकरण बड़ा ही कोमल था । आपने अपने सद्गुणों से बड़ी लोक प्रियता प्राप्त की थी । प्रजा की भलाई में ही आप अपनी भलाई समझते थे। आपकी कीर्ति कौमुदी देश देशान्तर में फैल गई थी। परमात्मा से प्रार्थना है कि आपकी आत्मा को चिरशांति प्राप्त होवे ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

११—आनन्दराव चतुर्थ

[सन् १९२६ ई० में गद्दी पर बैठे-वर्तमान]

स्वर्गीय श्रीमंत महाराजा सर उदाजीराव पवांर के कोई औरस पुत्र नहीं था। अतः आपकी इच्छा और आज्ञानुसार आपके विमाता भाई रावबहादुर श्रीमंत महाराज सेतूराम साहब के ज्येष्ठ पुत्र श्री विक्रमसिंहराव को श्रीमती माता महारानी साहबा ने ता.१ अगस्ट सन् १९२६ ई० को दत्तक लेकर आनन्दराव चतुर्थ के नाम से गद्दी पर बैठाया। इसके कुछ दिन बाद ही मध्य-भारत के ए० जी० जी० महोदय ने धार में दरबार करके भारत सरकार की ओर से इस गोद नशीनी को स्वीकृत किया। उस समय श्रीमंत महाराजा साहब की आयु केवल ६ वर्ष की थी अतः राज्य का शासन सूत्र भारत सरकार ने श्रीमती माता महारानी साहबा के हाथ में रक्खा। धार में रीजेन्सी कौन्सिल कायम करके आपको उसका प्रेसिडेन्ट बनाया, और आपकी सहायता के लिये धार राज्य के सुयोग्य दीवान रावबहादुर श्री खंडेरावजी नाडकर को उसके व्हाइस प्रेसिडेन्ट नियत किये। इस कौंन्सिल में सात मेम्बर हैं। जिनकी योजना स्वर्गीय श्रीमंत महाराजा सर उदाजीराव पवाँर साहब बहादुर ने की थी।

श्रीमती माता महारानी साहबा के शासन-काल में प्रजा की भलाई के लिये धार राज्य में अनेक सुधार कार्य हुए हैं। जिनका उल्लेख 'उन्नति शील धार राज्य' के नाम से इस इतिहास

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के अन्त में किया गया है । शिक्षा की ओर आपका बहुत ही अधिक ध्यान है । आनन्द हाई स्कूल धार को आप ने "आनन्द इन्टर मीजियट कालेज" बना दिया है । राज्य में प्रायमरी शिक्षण फ्री दिया जाता है ।

श्रीमती माता महाराणी साहबा की न्याय निपुणता और प्रबन्ध चातुरी से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने ता. ३ जून १९३१ ई० को आपको डी. बी. ई. की बहुमानास्पद पदवी से विभूषित किया है । उसी समय राज्य के दीवान रावबहादुर श्रीमान् खंडेरावजी नाड़कर महोदय को भी भारत सरकार ने दीवान बहादुर की उच्चत्तम पदवी प्रदान की है । इस शुभ प्रसंग पर श्रीमती माता महाराणी साहबा और राज्य के दीवान साहब श्रीमान् खंडेरावजी नाडकर महोदय को धार राज्य की प्रजा के भिन्न भिन्न सम्प्रदाय और समुदाय की ओर से मान-पत्र अर्पण किये गये हैं । प्रजाने आपके सुशासन की प्रशंसा करके अपनी कृतज्ञता प्रकट की है ।

राव बहादुर एवं दीवान बहादुर श्री खंडेरावजी नाड़कर महोदय स्वर्गीय श्रीमंत महाराजा साहब के समय से ही दीवान पद पर कार्य्य कर रहे हैं । आप धार राज्य के ही नागरिक हैं । इतिहास प्रसिद्ध श्रीबापू रघुनाथराव दीवान के परिवार से आपका निकटतम सम्बन्ध है । राज्य की उत्तम सेवा के कारण आपके पूर्वजों को दो गांव इनाम में भी मिले हुए हैं । आप राज्य के भिन्न-भिन्न विभागों में दक्षता एवं परिश्रम के साथ काम करते

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुए सन् १९२० ई. में प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुए हैं। इस समय श्रीमंत महाराजा साहब नाबालिग हैं। अतः राज्य कारभार में श्रीमती माता महारानी साहबा को आप से बड़ी सहायता मिल रही है। इन दिनों राज्य की आय और प्रजा-हित सम्बन्धी, जितने भी सुधार कार्य्य हुए हैं, उन सब में आपका बड़ा ही हाथ है। आपके उपकारों से उपकृत होकर नवम्बर सन् १९३० ई. को धार राज्य की प्रजा ने आपको सम्मान पूर्वक 'अभिनन्दनपत्र' अर्पण किया था। आपके द्वारा राज्य की अपूर्व सेवा तथा प्रजा का बड़ा हित हो रहा है।

श्रीमंत महाराजा श्रीआनन्दराव पवांर साहब आजकल डेली-कालेज इन्दौर में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आप बड़े तेजस्वी और होनहार राजा हैं। परमात्मा आपको दीर्घायु करें और आप स्वर्गीय श्रीमंत उदाजीराव महाराज के समान प्रजा प्रिय, न्यायी एवं दानी राजा होकर प्रजा का भरण पोषण करें।

अंग्रेज सरकार की ओर से धार के श्रीमंत महाराजा साहब को १५ तोपों की सलामी है। धार दरबार अंग्रेज सरकार को टांका कुछ नहीं देते। राज्य की कुल आय के मालिक धार दर-बार ही हैं। अलीराजपुर रियासत से, अलीमोहन के टांके के नाम से, दस हजार रुपये (हाली) ऐजन्सी के मार्फत प्रति वर्ष धार दरबार को मिलते हैं। ग्यारंटेड ठाकुर और भूमिये सन् १२२२ ई० में, पूर्ण तया धार दरबार के मातहत कर दिये गये हैं। राज्य सम्बन्धी सुव्यवस्था के कारण यह राज्य अपनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है। यहाँ की प्रजा सब प्रकार सुखी है।

जहागीरदार साहबान*।

धार राज्य में दो प्रकार के जहागीरदार हैं। (१) ग्यारंटेड जहागीरदार; जिनको कि अंग्रेज सरकार से ग्यारंटी मिली हुई है। (२) नानूग्यारंटेड जहागीरदार जिनका सम्बन्ध केवल रियासत से ही है। किन्तु सन् १९२२ में ग्यारंटेड जहागीरदार साहबान धार दरबार के पूरे मातहत कर दिये गये हैं।

१—ग्यारंटेड जहागीरदार।

ग्यारंटेड जहागीरदारों में चार ठाकुर और दस भूमिया हैं—**मुल्थान, काछीबड़ोदा, दोत्र्या और बखतगढ़** ये चार ग्यारंटेड ठाकुर साहबान की जाहगीरें हैं।

तिरला, बड़ाबरखेड़ा, भारुडपुरा, चिकल्यावड़, छोटा बरखेड़ा, गढ़ी, जामानिया, कालीबावड़ी, कोठीदा और राजगढ़, ये दस भूमियों की जागीरें हैं। इनको मालवे के बन्दोबस्त के समय अंग्रेज सरकार से ग्यारंटी मिली हुई है। इनको जहागीरें केवल इसी लिये दी गई हैं कि आस-पास के गांओं में शांति रक्खें। किन्तु वर्तमान समय में सुप्रबन्ध के कारण सर्वत्र शांति है; अतः ये लोग धार राज्य के अधिकार में कर दिये गये हैं।

---

* जहागीरदार साहबान का वृत्तान्त यहां बहुत ही संक्षेप में दिया जाता है। लेखकका विचार उनका विस्तृत वर्णन पृथक पुस्तकाकार में करने का है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इनका सीधा सम्बन्ध जो अंग्रेज सरकार के साथ था वह अब नहीं रहा है । भूमिया लोग हिन्दुस्तान के असली वाशिन्दों की संतान हैं ।

२—नानूग्यारंटेड जहागीरदार ।

नानूग्यारंटेड ठाकुर साहबान (१) कोद (२) बिडवाल (३) धारसीखेड़ा (४) कठोड्या (५) बेरछा (६) मांगल्या (७) मूंगला (८) मसवाड्या और (९) पाना; ये नौ हैं ।

इनके सिवाय राज्य में इनामदार तथा जहागीरदार और इस्तमुरारदार लगभग चालीस के और हैं तथा धर्मादा में भी लोगों को दरबार से बहुतसी जमीन मिली हुई है ।

ग्यारंटेड और नानूग्यारंटेड ठाकुर साहबान और भूमियान को धार दरबार की ओर से अपने ठिकानों के दीवानी और फौजदारी मामलात तय करने के अख्त्यारात मिले हुए हैं ।

उन्नतिशील धार राज्य ।

धार राज्य सब प्रकार उन्नतिशील राज्य है । कृषक वर्ग यहां का समृद्धिशाली और सुखी है । कृषि-सुधार के लिये राज्य की ओर से बराबर चेष्टा होती रहती है । इस राज्य के धार परगने में गेंहूं और बदनावर परगने में उत्तम श्रेणी का कपास पैदा होता है । राज्य की ओर से किसानों को अनेक प्रकार के सुभीते हैं । अकाल के कारण जब-जब प्रजा दुखी हुई है तब-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तब राज्य की ओर से प्रजा की रक्षा के लिये विपुल द्रव्य खर्च किया गया है। नीमनपुर का परगना जो मुद्दतों से बीरान पड़ा हुआ था वह फिर से आबाद किया जा रहा है। हर बीसवें वर्ष राज्य की जमीन का सेटलमेंट (बन्दोबस्त) होता है और बीस-बीस बरस के पक्के पट्टे किसानों को दे दिये जाते हैं। काश्तकारों को अपनी जमीन के रहन और बै करने का पूरा हक है। वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के लिये एक विशेष कृषि-विभाग की योजना की गई है। जिसके अधिकारीगण घूम फिर कर किसानों को खेती की शिक्षा देते रहते हैं। इसी प्रकार सिंचाई का भी एक अलग महकमा खोल दिया गया है। अच्छी नस्ल के ढोर पैदा करने की व्यवस्था भी करदी गई है। किसानों को अपनी उन्नति के लिये हर प्रकार के सुभीते इस राज्य में कर दिये गये हैं। पंचायत बोर्ड के द्वारा किसान अपने साधारण मामलों का निपटारा आपस में कर लिया करते हैं। उन्हें कोर्ट का व्यर्थ व्यय नहीं उठाना पड़ता।

शिक्षा की ओर भी राज्य का खूब ही ध्यान है। राज्य में प्रायमरी शिक्षण मुफ्त दिया जाता है। फीस कुछ नहीं ली जाती। उच्च शिक्षा के लिये धार शहर में इंटर मीजियट कॉलेज की स्थापना की गई है। असहाय और उच्च शिक्षाभिलाषी विद्यार्थियों के अध्ययन के लिये राज्य की ओर से छात्र वृत्ति का प्रबन्ध भी कर दिया जाता है। राज्य में जहां तहां कन्या पाठशालाएं भी खोल दी गई हैं तथा धार शहर में संस्कृत पाठशाला भी है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मध्यभारत की और-और रियासतों की तुलना में धार राज्य शिक्षोन्नति में काफी द्रव्य खर्च करता है ।

व्यापार की उन्नति के लिये भी राज्य की ओर से बराबर प्रयत्न किया जा रहा है । राज्य के प्रायः सभी छोटे-बड़े व्यापारियों को हुंडी के द्वारा खजाने से रुपये मिलने का सुभीता कर दिया गया है । राज्य के खास-खास कस्बों और गावों में जिनिंग फैक्टरी, जिनिंग-प्रेस, फ्लोअर मिल आदि कल कारखाने खोलने का हुक्म देकर रियासत का व्यापार बढ़ाया गया है । माल के आमद और निकास के लिये नवीन सड़कों की योजना करके व्यापार का मार्ग सुलभ कर दिया है । राज्य में गृह उद्योग को भी उत्तेजन दिया जाता है तथा कला कौशल के लिये समुचित प्रबन्ध है ।

खास धार शहर में बिजली की रोशनी का प्रबन्ध किया गया है तथा जलकल (नलों) का प्रबन्ध करके शहर में पानी की विपुलता कर दी गई है । जनता के मनोरंजन के लिये धार में थिएटर भी बनाया गया है । राज्य में म्युनिसिपैलिटी आदि का प्रबन्ध भी अच्छा है ।

खास, धार शहर में एक बड़ा अस्पताल सर्वसाधारण के सुभीते के लिये स्थापित है । जिसमें प्राय सभी प्रकार की उत्तम व्यवस्था है । प्रत्येक परगने के सदर मुकाम पर तथा बड़े बड़े गांवों में भी अस्पतालों का प्रबन्ध है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सरकारी कर्मचारियों के सुभीते के लिये प्राव्हिडंड फंड और लोन फंड की व्यवस्था की गई है तथा पूरी सर्विस पर पेन्शन का हक़ भी रक्खा गया है ।

इस प्रकार धार राज्य की प्रजा अमन चैन से है । राजा और प्रजा में पूर्ण प्रेम और सहयोग है । शांति पूर्वक राज्य का कार्य्य संचालन होता है । परमात्मा से प्रार्थना है कि यह राज्य उत्तरोत्तर उन्नति करता रहे और प्रजा सब प्रकार सुखी रहे ।

शुभम्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निम्न लिखित पुस्तकें विक्रयार्थ तैयार हैं

मँगाकर लाभ उठावें।

१ धार राज्य का इतिहास .... ॥=)
२ हिन्दी व्याकरण (सारण-कृत) =)
३ बालहितोपदेश .... -)॥
४ कुंजी बालविनोद पहला भाग ... -)॥
५ ,, ,, २ ,, ... =)॥
६ ,, ,, ३ ,, ... ।)

इनके सिवाय और भी उत्तमोत्तम पुस्तकें तैयार हो रही हैं। हमारे यहाँ की पुस्तकें धार में धनजी मदनलाल बुकसेलर के यहाँ से भी प्राप्त हो सकती हैं। पाठकगण मंगाने ... बालविनोद पहला ...

,, ,, २ ,, ...
,, ,, ३ ,, ...दीय—

...ोर द्विवेदी.

...नके सिवाय और भी उत्तमो...

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust